श्री तुलसी पुस्तकालय
जयपुर
पुस्तक नं० १५

(३४)

4514

श्रीः ॥

सतपञ्चार्थप्रकाश रामायण

सटीक ।

जिसमें

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजीकी परमसिद्धांत जो सतपञ्च चौपाई मनोहर याने नामबंदना नवौ दोहा हैं तिसका अतिअपूर्ब सब महात्मावोंकेप्रमाणसे और श्रीगोस्वामीजीके भी सबग्रंथोंके प्रमाणसेप्रतिपादनकिया गयाहै और सर्बोपरि सिद्धांत एक श्री रामनाम देखायागयाहै जिसमें वेद पुराण स्मृतिसंहिता तथा औरभी अनेकों ग्रंथोंके प्रमाण भी दिये गये हैं देखने योग्यहै ।

जिसको

श्रीअयोध्यावासी श्रीकनकभवननिवासी स्वामी श्री १०८ परमहंस सीताशरणजी महाराज और स्वामी श्री ६ व्यास रामखेलावनदासजी महाराज की आज्ञा पाके श्रीसरयूदासजी नामबन्दना नवौ दोहोंका अति अपूर्ब टीका किया है ।

उसीको

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजीने निज ज्ञानभास्कर प्रेस बाराबङ्की में मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

मार्च सन् १९०४ ई०

महर्षि बाल्मीकि शोध ...

ऐक्ट २५ सन् १८६७ के अनुसार रजिस्टरी करादीगई है और सर्वाधिकार प्रेस के आधीन है ।

५५१४

अथ सतपञ्चार्थप्रकाश सटीक ॥

श्रीजानकीवल्लभोविजयतेसदा

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः श्रीहनुमतेनमःसदा ॥

श्लोक॥ तत्त्वंनास्तियतःपरंकिमपितंसच्चिद्रसैकात्मकं रामंदाशरथिं धनुर्द्धरमहं वन्देकिशोराकृतिम् ॥ श्यामाङ्गंद्विभुजं सखीभिरनिशं श्रीसीतया नित्यया ।साकेतेविहरन्तमेवसखिभिर्नित्याऽनुगैर्भ्रातृभिः ॥ १ ॥

दोहा। बन्दौं गुरुपद कमल रज सर्व सुमङ्गल मूल।
सकलअमङ्गल नाशहित जिमि पावक घनतूल ॥ १ ॥
पुनि बन्दौं रघुबीर सिय अखिल लोक बिश्राम।
जासु कृपा लवलेश तें अधम जाहिं परधाम ॥ २ ॥
विश्वभरण पोषण करन भरत माण्डवी जानि।
तिनकेपदबन्दौं मुदित युगल ललितछबिखानि ॥ ३ ॥
लषणलाल ललि उर्मिला मङ्गलमोद निधान।
तिनके पद बन्दन करउँ सदा करिय कल्यान ॥ ४ ॥
रिपुसूदन श्रुतिकीरती दम्पति दीनदयाल।
पदसरोज बन्दन करउँ मोपर होहु कृपाल ॥ ५ ॥
पवनसुवन सङ्कट हरण करन सुमङ्गल वास।
पद पराग बन्दन करत पुनि पुनि सरयूदास ॥ ६ ॥

नीलकण्ठ सुखधाम शिव सहित उमागण ईश।
चरण सरोज सनेह शुठि बन्दौं भू धरि शीश ॥ ७ ॥
तुलसिदासभएआदिकवि जिन्हजगमेंयशलीन्ह।
रामचरित रचि प्राकृत सबहिं सुलभ करि दीन्ह ॥ ८ ॥
तिनके पद राजीव रज बन्दौं बारहिं बार।
सतपञ्चार्थ प्रकाश अब बरणौं सहित विचार ॥ ९ ॥
सम्बत दश नवशत बरष प्रकृतिदुगुण अरुसिद्धि।
चैत्रमास शुभ नौमि तिथि रामजन्मगुणनिद्धि ॥ १० ॥
अवधपुरी अति पावनी शोभित सरयू तीर।
तहां कियो प्रारम्भ यह सुमिरि सीय रघुबीर ॥ ११ ॥
कनकभवन रमणीय अति सकल सुमङ्गल सार।
साहेबलाल दरबार में ग्रन्थ भयो परचार ॥ १२ ॥

अथश्रीसतपञ्चार्थप्रतिपादनंलिख्यते ॥

(बार्तिक)

देखिए कविलोगों ने अपने २ विचारानुसार पञ्चप्रकार के अमृत कथन किए हैं पञ्चामृत कौन २ हैं सो सुनिए प्रथम अमृत तो देवलोक में है कि जिसको देवतालोग पान करते हैं और जिस अमृत करके देवतोंके नामहिं अमर कहागया है, पुनः दूसरा अमृत समुद्रमें कहते हैं और तीसरा अमृत चन्द्रमा में कहते हैं कि जिसकरके चन्द्रमा के नामहिं सुधाकर कहागया है, पुनः चौथा अमृत कविलोगों ने बासुकी नाग के पास में कहा है और पञ्चम अमृत कवियों ने स्त्री के अधरामृतको कहाहै इस प्रकारसे पांच अमृत वर्णन कियाहै परन्तु मेरे विचारमें आताहै कि यह यथार्थ अमृत नहींहैं काहेसे कि जो यह यथार्थ अमृत होता तो इसके सेवनबाले क्योंकर नाश होजाते हैं इससे यथार्थ अमृत नहींहै यथार्थ अमृत तो उसीको कहना चाहिए कि जो सदाके लिए अमर करदेवे कभी कल्पान्तमें भी नाश न हो और गीतामें भगवत ने कहाहै कि ब्रह्मलोकादि पर्यन्त पुनरावर्ति है अर्थात् जन्म मरण है, यथा प्रमाण (आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्ति-नोऽर्जुन) इत्यादि प्रमाण हैं इससे जान पड़ता है कि जब महाप्रलयादिक में ब्रह्मादि को

नाश होजाताहै तो औरको क्या कहनाहै इससे पूर्वोक्त पांचो अमृत यथार्थ नहींहैं जो कहो कि अमृत तो इसीको कहाहै आप कैसे नहीं कहते हैं तो सुनो हम यथार्थ अमरत्व नहीं देखतेहैं इससे नही कहतेहैं जो कदापि कहो कि अमृत कहना क्या मिथ्याहै तो मिथ्या नहींहै हे सत्यपरब्रह्म इसको यथार्थ अमृत नहीं कहना चाहिए इसको प्राकृत अमृत कहना चाहिए जो कहो कि यथार्थ अमृत कौन है तो सुनो। यथा प्रमाण श्री मानसरामायणे—

श्लोक। ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाऽव्ययम्। श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा॥ संसारामयभेषजंसुखकरं श्रीजानकीजीवनं। धन्यास्तेकृतिनःपिवन्तिसततंश्रीरामनामामृतं॥१॥

अर्थ—श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि ते सुकृतिजन धन्यहैं कि जिन्होंने निरन्तर सदा सर्वकाल में श्रीरामनाम रूप अमृत पान करते हैं अब यह दिखाते हैं कि वह पूर्वोक्त जो प्राकृत अमृत है सो तो क्षीरसमुद्र जो प्राकृत है तिससे प्रगट भयाहै और यह जो रामनामरूप अमृत है सो ब्रह्म जो वेदहै मायासे रहित अर्थात् अविनाशी सोई तो अंभोधि नाम समुद्र है तिससे समुद्भव नाम उत्पन्न भया है पुनः कैसा है कि कलिमल अर्थात् कलियुगके जो मलनाम पापहैं तिनको प्रकर्ष करके ध्वंसन नाम नाश करनेवाला है और अव्ययं नाम निर्विकार याने मायासे रहित हैं भाव वह अमृतमायिक है और यह रामनामामृतमायिक नहींहै इससे अव्यय कहा पुनः वह प्राकृत अमृत तो क्षीरसमुद्र से प्रगट होके चन्द्रमा में शोभित भया तिसमें भी सर्वदा नहीं काहे से कि कल्पान्त में क्षय होजाते हैं और यह रामनामामृत जो है सो श्रीमान् अर्थात् तेजमान जो शिवजी के मुखचन्द्रसम है तिसमें सुन्दर श्रेष्ठ कल्याणकारी सर्वदा शोभित भया यहां ए सर्वदा कहने का यह भावहै कि श्रीशिवजी कृपालु सदा अमर हैं श्रीरामनामामृत की कृपा से और श्रीमान् मुखेन्दु कहने का यह भावहै कि चन्द्रमा कलाक्षीण होतारहता है और श्रीशिवजीके मुखचन्द्र सर्वदा एकरस रहते हैं इससे श्रीमान् और सर्वदा कहा पुनः वह प्राकृत अमृत तो शरीरके रोग नाश करनेवाला है और यह रामनामामृत कैसाहै कि संसारामय अर्थात् जन्म मरणरूप जो रोगहैं तिनके नाश करनेके वास्ते भेषजंनाम औषधि हैं पुनः कैसाहै कि सम्पूर्ण सुखके करनेवाला है भाव उस अम्टत में तो दो गुण

विशेष हैं सुखके देनेवाला एक तो स्वाद दूसरा तोषता। यथा (स्वाद तोष सम सुगति सुधाके) इत्यादि कहाहै और रामनामामृत जो है सो लौकिक पारलौकिक सब सुख का करनेवाला है इससे सुखकरं कहा पुनः यह श्रीरामनामामृत कैसाहै कि श्रीजानकी जू महारानी के जीवन हैं (शङ्का) यहां ए ग्रन्थकार स्वामीने इस श्लोकमें श्रीरामनामामृत के पान करनेवाका याने जायक सर्वोपरि दो वर्णन किए इसका क्या अभिप्राय है (उत्तर) इसका अभिप्राय यह है कि यद्यपि करके नामजायक बहुत हैं त्यहिके परञ्च शिवजीके समान और श्रीजानकी जू महारानी के समान दूसरा नामजायक नहींहैसो गोस्वामी जी ने रामायणही में प्रसिद्ध कहाहै। यथा (तुम पुनि राम नाम दिनराती। सादर जपहु अनङ्गअराती॥) इत्यादि शिवजीको रात्रि दिनके नाम जापक कहा है पुनः दोहा सुन्दरकाण्डे (नाम पाहरू दिवस निशि ध्यान तुम्हार कपाट) इत्यादि दिवस निशिके नाम जापक श्रीमहारानी जीको लिखाहै देखिए नामजापक गोस्वामी जी बहुत लिखाहै परन्तु रात्रि दिनके नाम जाप इन्हीं दोऊको लिखाहै इससे इस श्लोक में सर्वोपरि नाम जापक शिरोमणि जानके दोऊको कहा है दूसरे रामजी की प्राप्ति इन्हीं दोउन की कृपासे होतीहै बिना इन दोऊकी कृपा भए श्रीरघुनन्दन जीको प्राप्ति होना दुर्लभ है इससे कहा काहे से कि श्रीरामजीके प्राप्ति के वास्ते दोऊ मुख्याचार्य हैं यह सिद्धान्त सर्वत्र प्रसिद्ध है यथाः—

श्लोक। भवानीशङ्करौवन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यांबिनानपश्यंति सिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरम्॥

इत्यादि बहुत प्रमाण हैं पुनः॥ शिवपद कमल जिन्हहिं रति नाहीं॥ रामहिंते सपनेहु न सुहाहीं॥ पुनः (जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी॥ सो न पाव मुनि भगति हमारी॥ पुनः सर्वोपर श्रीरामजी के बचन यथा (औरो एक गुपुत मत सबहिं कहौं करजोरि। शंकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि॥ पुनः (विनय) बिन तव कृपा राम पद पंकज सपनेहु भगति न होई॥ ऋषय सिद्धि मुनि मनुज दनुज सुर अपर जीव जगमाहीं॥ तवपद बिमुख न पार पाव कोउ कलप कोटि चलिजाहीं॥ पुनः॥ बहु कल्प उपाय करिये अनेक॥ बिनु शंभु कृपानहिं भौ विवेक॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे श्रीशिवजी परमाचार्य्य हैं त्रैलोक्यके यथा (तुम्ह त्रिभुवन गुरुवेद बखाना॥ आनजीव पाँवर काजाना) इससे शिवजी के कृपा बिना प्रभुको प्राप्तहोना सर्वथा दुर्लभहै अब श्री जानकी जी महारानी के आचार्यत्व सुनिये यथा प्रमाण सदा शिवसंहितायां शेषोवाच वेदान्प्रति॥

**श्लोक। राजमार्गमिमंबिद्धि रामोक्तंजानकीकृतम्।
यद्दतेचान्मार्गोस्तु चौराणांबिधिकायथा ॥ ३ ॥**

(अर्थ) श्री रामजी के प्राप्ति का अर्थ यह श्रीरामजीका कहा भया और श्रीजानकी जी के क्रिया यह राजमार्गहै याने श्री रामजी के समीप पहुंचने के वास्ते सदर पक्की सड़क है जो चाहै सो चला जावे और इससे जो मार्ग विमुखहै सो सब चोरोंके मार्गके समानहै भाव दूसरे मार्ग में चलनें वाला जीव दण्डभागी होता है इससे श्री रामजीके भजन मार्ग सर्वोपरहै और सब धोखामात्र है ॥ ३ ॥

**श्लोक ॥ श्रीजानकीसम्प्रदायंरामरासमन्वितम्
सृतेकेपिनयास्यन्ति वाञ्छितंफलमेवच ॥ ४ ॥**

(अर्थ) श्री जानकीजी के साम्प्रदाय बिनाजो दूसरे श्रीरामजीके रहस्य मण्डलमें जाने चाहैं तो नहीं जायसकते हैं यह निश्चयहै और इसके बिना दूसरामन बांछित फलको भी नहीं देसक्ताहै ॥ इसीप्रकारके बहुत बचनहैं इससे श्री महारानी जी भी प्रधान आचार्य हैं भाव श्री शिवजी महाराज श्रीरामजी के समीप पहुँचाने वाले ऊपरके आचार्यहैं और श्री जानकी जी महारानी जो हैं सोरहस्यमण्डल के प्राप्ति करानें वाली भीतरके आचार्यहैं इसी प्रकारसे दोऊ मुख्याचार्य्य हैं इससे गोस्वामी जीनें इस श्लोकमें दोऊ के नामकहा इससे यह दिखाये कि दूनौं आचार्यके रामहिं नाम आधारहै काहेसे कि राम नामसे परे कुछनहीं है यही सब शास्त्रके वेदके पुराण के तथा सर्व महात्मनका सिद्धान्तहै ताते सब छोंड़िके एक रामनाम जपनाहीं सर्वोपर है और गोस्वामीजीके तो सब ग्रन्थनमें एक रामहिं नाम सिद्धान्तहै दूसरे गोस्वामीजीने श्रीरामजीके शपथ भी करिके कहा है कि हमारा सर्वस्व एक रामनामहीं है यथा (प्रमाण कबितावली) रामनाम मातुपितु स्वामी समरथ हितु आस रामनाम को भरोसो रामनाम को॥ प्रेम रामनामहीं सों नेम रामनाम ही को जानी न मरम पगदाहिनो न बामको॥ स्वारथ सकल परमारथको रामनाम रामनाम हीन तुलसी न काहूकामको ॥ रामकी सपथ सरबस मेरे रामनाम कामधेनु कामतरु मोसे छीन छामको ॥ इत्यादि बहुत कहाहै देखिये यह बचन गोस्वामी जीनें कैसाकहाहै इससे रामनामही सर्वोपरहै यद्यपि करिके रामजी के नामरूप लीला धाम चारौ परात्परहैं और अनादि है अव्यक्त है शुद्ध ब्रह्मस्वरूपहैं यथा (प्रमाण) सहोवाच–कौशल्या रघुनाथ एवमहा पुरुषः तस्य नामरूपलीला धाममनो बचनाद्य बिषयाः) इत्यथर्वणश्रुतिः ॥ इत्यादि प्रमाणहैं परंतुसौलभ्यता गुणकरिके रामनाम सर्वोपर है काहेसे कि रूपलीला धाम

सबको सुलभ नहीं है और सब देशमें है और नामजो है सो ऊँचनीच राजा रंक सबको सुलभ है और सर्व देशमें बिख्यातहै यथा (रामनाम भुविख्यातमितिश्रुतिः) पुनः(विनय) नीचहूको ऊँचहूको रंकहूको रायहूको सुलभ सुषद आपनों सो घरुहै ॥ इत्यादि सूत्र कहा है इससे रामनाम सर्वोपर है और सबके सारहै ताते सब छोड़िके एक रामनामहीं जपना चाहिये और श्रीरामजीके सौ कोटि रामायणमेंभी एक रामनामहीं सारहै सोभी गोस्वामी जीनें आपही विनयपत्रिकामें कहाहै यथा (पद) रामरावरो नाम मेरो मातु पितु है ॥ सुजन सनेही गुरु साहिब सखा सुहृद रामनाम प्रेमपन अविचल वितुहै॥ शत कोटि चरित अपार दधि निधि माथिलियो काढ़ि बामदेव नाम धृतुहै ॥ नामको भरोसो बलचारिहुँ फलको फल सुमिरिये छाँड़ि छल भलो कृतुहै ॥ स्वारथ साधकु परमारथ दायकु नाम रामनाम सारिषो न औरु हितुहै ॥ तुलसी सुभाय कही साँची अै परैगी सही सीतानाथ नाथचितहूँको चितुहै ॥ इत्यादि बहुत कहेहैं इससे रामनामही शतकोटि रामायणमें सारहै इसी प्रकारके बचन गोस्वमीजीने रामायणमेंभी कहाहै यथा (रामचरित शतकोटि महँ लिय महेश जियजानि) ताते रामनामके समान दूसरा सिद्धान्त कुछ नहीं है यही सिद्धान्त सबकाहै और गोस्वामीजीने तो सब ग्रन्थों में एक नामहीं सारकहाहै यथा (बरवै रामायणे) कलिनहिंज्ञान बिराग न योग समाधि॥ रामनाम जपुतुलसीनित निरुपाधि ॥ रामनाम दुई आखर हिय हितु जानु ॥ राम लषण सम तुलसी सिखवनु आनु ॥ माय बाप गुरु स्वामि रामकर नाम ॥ तुलसी जेहि न सोहाइ ताहिबिधि बाम ॥ रामनाम जपु तुलसी होइ बिशोक ॥ लोक सकल कल्यान नीक परलोक ॥ तप तीरथ मषदान नेम उपबास ॥ सबते अधिक रामजपु तुलसीदास॥ पुनः वैराग्य संदीपनी) तुलसी जाके बदन ते धोखेउ निकसत राम ॥ ताके पगकी पगतरी मेरेतनके चाम ॥ (पुनः रामाज्ञा) राम नामकलिकाम तरु सकल सुमंगल कन्दु ॥ सुमिरत करतलसिद्धिजग पग पग परमानन्दु ॥ रामनाम पर रामते प्रीति प्रतीति भरोस ॥ सोतुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस (पुनःदोहावली) कलि पाषंड प्रचार प्रवल पोप पाँवर पतित । तुलसी उभय अधार रामनाम सुरसरि सलिल ॥ पुनः ॥ रामनाम अवलंब बिनु परमारथ की आस । बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास ॥ इसीप्रकारसे सर्वत्र कहाहै कहांतक लिखें सब ग्रंथके प्रमाणदेनेसे ग्रन्थवृहद् होजायगी इससे दो चार ग्रन्थके बचन लिखदियाहै कि सज्जन लोग थोड़ेहीमें जानलेगें कि रामनाम सर्वोपर है और सबके सार है काहेसे कि राम तापनीयोपनिषदमें लिखा है कि ज्ञानमार्ग केवल एक रामनामहै और श्री रामजी के जो सौ कोटि चरित्रहैं सो सब धर्म मार्ग के उपदेशार्थ हैं यथाप्रमाण ॥

श्लोक। धर्ममार्गंचरित्रेण ज्ञानमार्गञ्चनामतः।
स्वस्यध्यानेनवैराग्य मैश्वर्य्यंस्वस्यपूजनात्॥

(अर्थ) श्री रामजीके जो चरित्रहैं सो तो वेद विदित जो धर्म है याने माता पिता की आज्ञा पुत्रको किसप्रकारसे मानना चाहिये और गुरुकी भक्ति, ब्राह्मणकी भक्ति अवश्यनें करना चाहिये और सत्यबादी होना चाहिये औंर एक पत्नीव्रत होने चाहिये सबके ऊपर दयारखना चाहिये सबसे निचानु संधान रखनाचाहिये प्रजाको प्राण के समान रक्षा करना चाहिए वेद शास्त्रकी आज्ञा मानना चाहिए दुष्टनको दण्ड देना चाहिए और सन्ध्या तर्पण तीर्थ व्रत मूर्त्तिपूजन किस प्रकार करना चाहिए और शील सन्तोष क्षमा दया दम इत्यादिको धारण करना चाहिए और योग यज्ञ जप तप दान किस प्रकार करना चाहिए और आपसमें भ्रातृत्व कैसा रखना चाहिए और स्वामी सेवकधर्म्म किस प्रकारकी होना चाहिए और सब छोड़के भगवद्भजन किस तरह से करना चाहिए और भागवतसेवा धर्म्म कैसा होताहै और संसार में स्त्रीको कैसा करना चाहिए और स्वपति सेवाधर्म्म किस तरहकी होतीहै सो सब और भी नानाप्रकार के जितने शुभाचरण हैं जोकि वेद शास्त्रमें प्रसिद्ध हैं सो सब धर्म्म हैं उस धर्म्मको किस प्रकारसे चारों वर्णाश्रमको करना चाहिए सो सब धर्म्मको यथार्थ दिखानेके वास्ते पूंर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्रीसाकेतनगराधिप श्रीरामजीने अपने स्वरूपको पञ्चप्रकार याने श्री राम जानकी भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नरूप होके दिखाए इससे सब चरित्र धर्म्ममार्गके वृद्धि कारक हैं ताते धर्म्ममार्ग है और रामनाम जो है सो ज्ञानमार्ग है भाव जो कोई जन्म मरणसे रहित होनेचाहैं सो सब साधनको प्रत्यागन करके श्रीरामनामके शरणहोजाइए तबतो कल्याण है नहीं तो महाभयङ्कर कालसे बचना दुर्लभ है यह वचन त्रिकाल में भी मिथ्या नहीं होसकताहै काहेसे कि वेदमें लिखा है कि (ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः) याने विना ज्ञान मुक्ति नहींहै सो यह वचन वेदका बज्रलीक है कभी कोई कालमें झूठनहीं होसक्ता है ओर सब छोड़के श्रीरामनाम निर्वाणदायक को जपना यही यथार्थ ज्ञानहै और ज्ञान कथनी है केवल वेदार्थ के नहीं जानने से पाषाण्डियों ने अहंब्रह्मास्मीत्यादि मानिके वेदार्थको नष्टभ्रष्ट करडारा है सो मूर्खता है ताते सबको त्यागके रामनाम को स्मरण करनाही मुख्य ज्ञानहै इसमें सन्देह किञ्चिन्मात्र न करना चाहिए इसीसे राम नाम ज्ञानमार्ग हैं और अपना ध्यान याने जो कोई रामजीका ध्यान करतेहैं तिनको रामजी वैराग्य देतेहैं और अपनी मूर्त्तिपूजन से धन देतेहैं यह वेदके सिद्धान्त हैं ताते सब छोड़के एक रामनाम जपना यही मुख्य धर्म्म है इसीसे गोस्वामीजीने भी सौ कोटि

रामायण के सार रामनाम कहा है काहेसे कि रामनाम के समान दूसरा कुछ नहीं है देखिए सदाशिवसंहिता में लिखाहै कि एक समयमें सब ऋषिलोगों ने आपस में भ्रम से बादविवाद किया और वेदनके प्रमाण ददे कोई कहै कि मेरा मत सर्वोपरि है कोई कहै कि नहीं मेराही मत ठीकहै इसी प्रकारसे परस्पर बहुत शास्त्रार्थ किये परञ्च निर्णय नहीं भया तब सबकोई मिलके स्वयं वेदही से बूझा कि यथार्थ मत कौन है तब वेद ने भी सब मतमें अपना प्रमाण देखके घबड़ा गए तब सबने ब्रह्मा से बूझा कि यथार्थ मार्ग कौनहै तब ब्रह्माजीने भी सब मत प्रमाणिक देखके भ्रमायगए तब सबने भगवद्ध्यान किया तब आकाशबाणी भई कि आप सब शेषजीसे जाके बूझिए जो शेष जी कहैं वही मार्ग सर्वोपरि यथार्थ जानना और सब भ्रमदायक है ऐसा वचन सुनके सबकोई वेदके सहित मिलके शेषजी से बूझा तब श्रीशेष भगवान जो हैं सब जीव के आचार्य सो भ्रमनाशक वचन ऋषियोंके सहित वेदसे बोले यथा प्रमाण (सदाशिवसंहितायां विंशमोऽध्यायं श्रीशेषोवाच वेदान्प्रति) ॥

श्लोक। रामनाम्नोऽथमुख्यार्थं भगवत्त्वेप्रतिष्ठितम्।
विस्मृतंकण्ठमणिवद्वेदाशृणुततत्त्वतः ॥ १ ॥
तात्पर्य्यवृत्त्याविज्ञेय बोधयामिविभागतः।
रामनाम्निशुचिर्ज्ञेयाः षण्मात्रातत्त्वबोधकाः॥२॥
रामनाम्निस्थितोरेफो जानकीतेनकथ्यते।
रकारेणतुविज्ञेयः श्रीरामःपुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥
अकारेणतथाज्ञेयो भरतोविश्वपालकः।
व्यंजनेनमकारेण लक्ष्मणोऽत्रनिगद्यते ॥ ४ ॥
ह्रस्वाकारेणनिगमाः शत्रुघ्नसमुदाहृतः।
मकारार्थोद्विधाज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ॥ ५ ॥
प्रोच्यतेतेनहंसावै जीवाःचैतन्यविग्रहाः।
संसारसागरोत्तीर्णा पुनरावृत्तिवर्जिताः ॥ ६ ॥
दास्याधिकारिणःसर्वे श्रीरामस्यमहात्मनः।

एतत्तात्पर्य्यमुख्यार्थादन्योऽर्थोयोनुभूयते॥७॥
सोऽनर्थइतिविज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः ॥८॥

अर्थ—श्रीशेषजी बोले कि रामनामके जो मुख्य अर्थहैं उसीमें भगवत्त्व प्रतिष्ठित हैं याने भगवान शब्द यथार्थ रामनामही में घटताहै काहे से कि षट्गुण करके जो युक्त होय उसे भगवान कहना चाहिए और रामनाम में भी षडक्षर हैं ताते छवो गुण रामनामही के छवो अक्षर में विराजमानहैं इससे यथार्थ भगवान एक रामनामहीहै दूसरा भगवान नहींहै भाव जैसे कि शिव भगवान इन्द्रभगवान बरुण भगवान नारद भगवान बाल्मीकि भगवान वेदव्यास भगवान अगस्त्य भगवान इत्यादि सबको भगवान कहते हैं परञ्च दिव्यगुण करके युक्त यथार्थ भगवान् रामनामही है और सब औरही गुण के सम्बन्ध से भगवान कहेजाते हैं इसीसे शेषजी कहते हैं कि रामनामही में मुख्य भगवत्त्व अर्थ प्रतिष्ठित है औरमें नहीं सो हे वेद आपको विस्मरण होगयाहै जैसे कि मणि है कण्ठही में और भूलसे खोज अन्यत्र करे तैसेही आप करते हैं भाव रामनाम के यथार्थ अर्थ आपही में कथन है परञ्च आप भूलगए हैं ताते आप तत्वको सुनो हम कहते हैं १॥ जो तात्पर्य्य वृत्ति करके जानने योग्य है सो हम बोधार्थके वास्ते विभाग करके कहतेहैं श्रीराम नाम में तत्वके बोध करानेवाली पवित्र छः मात्राहैं ऐसाजानना॥२॥ तिसमें रामनाम में जो रेफ स्थितहै सो तो श्रीजानकी जीके स्वरूप कहते हैं और स्वयं रकार जो है सो श्रीरामजीके स्वरूप जानो जो सब पुरुषों में उत्तम हैं॥३॥ और मध्याकार जो है अर्थात् रकार मकारके बीचके जो अकार है सो जैसे श्रीराम पुरुषोत्तम हैं तैसेही श्रीभरतजीके स्वरूप जानो जो सम्पूर्ण संसारके पालन करनेवालेहैं और व्यञ्जन जो हैं अर्थात् मकारके अनुस्वार सोई तो यहां पै स्पष्ट श्री लक्ष्मणजीके स्वरूप हैं॥४॥ और हे निगम ह्रस्वाकार जो हैं याने मकार के जो अकार हैं सोई तो सम्पूर्ण शत्रुओं के नाश करनेवाला श्रीशत्रुघ्नजीके स्वरूप उदाहरण याने प्रमाण जानो और मकारका दो अर्थ होताहै एक तो निरनुनासिक दूसरा सानुनासिक भेदसे॥५॥ तेई सब ब्रह्मासे च्यूंटी पर्य्यन्त हंस स्वरूप जीवहैं और सदा चैतन्यहैं ऐसा कहाहै जो जीव संसाररूप समुद्रसे तरजाते हैं याने पारहोके पुनर्जन्म मरणसे रहितहोजातेहैं॥६॥ पूर्वोक्त ब्रह्मासे च्यूंटी पर्य्यन्त जितने जीवहैं तिन सबको दासत्वभाव अधिकार है याने श्रीराम परमात्मा की सेवकाई करना यही मुख्याधिकार है हे वेद रामनाम के इतनेही तात्पर्य्य मुख्यार्थ हैं और अन्यार्थ जो हैं अथवा कहे सो अर्थ नहींहै वह अनर्थ है ऐसा जानना और संसारके देनेवाला है॥७॥ इसका अभिप्राय यहहै कि रामनाम के दो

अर्थहैं एकतो रागमुख अर्थहै याने श्रीसीतारामजीकी प्राप्ति होने के वास्ते सो तो एही अर्थहैं जोकि कह आएहैं और दूसरा अर्थ यहहै कि रामनामसे ॐकार भया ॐकार से त्रिधा अहङ्कार भया तिससे ब्रह्मा विष्णु शिव भए तथा त्रैवेद भया इत्यादि अर्थ संसार गुरुखहै याने संसारमें भटकने के वास्ते है ताते जो कोई अपना कल्याण चाहै सो प्रथम के कहे अर्थको विचारे और सदा सर्वकाल श्रीरामनाम अभयदायक को जपै और छहो मात्रा में छहो स्वरूपों का ध्यान करें अर्थात् ऊर्ध्वरकार में श्रीजानकी जी महारानी का ध्यानकरे और स्वयं रकार में श्रीरामजी का ध्यान करे और मध्याकारमें श्री भरतजीका ध्यान करे और मकार के जो अनुस्वार हैं याने बिन्दु तिसमें श्रीलक्ष्मणजी का ध्यान करे और मकारके जो अकार हैं तिसमें श्रीशत्रुघ्नजीका ध्यानकरे और सानुनासिक जो मकार है तिसमें स्वस्वरूप का ध्यान करे कि मैं सदा निर्विकार हूं और भगवद्दास हूं भगवदंश हूं और युगल सरकारके नित्य समीपी हूँ इत्यादि विचारे और सद्ग्रन्थ जो हैं गीता बाल्मीकि भागवत विनयपत्रिकादि तिसको देखे और सदा एकांत को सेवन करे और संसारको अनित्य समझे तबतो कल्याण है यही सबका सिद्धान्तहै नहींतो कल्याण होना दुर्लभ है इससे रामनामके समान दूसरा कुछ नहींहै देखिए रामनामही से सर्वावतार भी होतेहैं और रामजी भी चारों भाई रामनामही से अवतार लेते हैं सो प्रमाण रामतापनी उपनिषद में प्रसिद्ध है यथाः—

श्लोक। अकाराक्षरसम्भूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः।
उकाराक्षरसम्भूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः ॥ १ ॥
प्रज्ञात्मकस्तुभरतो मकाराक्षरसम्भवः।
अर्द्धमात्रात्मकोरामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीरामतापनी उपनिषदमें याज्ञवल्क्यजीने भरद्वाज महर्षि से कहाहै कि अकार अक्षर से श्रीलक्ष्मणजी उत्पन्न भएहैं जो विश्वभावन अर्थात् विश्वात्मक अभिमानी हैं और उकार अक्षरसे श्रीशत्रुघ्नजी भएहैं जो तैजसात्मक अभिमानी हैं और प्रज्ञात्मक अभिमानी जो श्री भरतजी हैं सो मकार अक्षरसे प्रगट भएहैं और अर्द्धमात्रा जो रेफ है तिससे प्रत्यगात्मा श्रीरामजी भएहैं जो सच्चिदानन्द के स्वरूप हैं पुनः (स्कान्दे)

श्लोक। सर्वेऽवताराःश्रीराम नामशक्तिसमुद्भवाः।
सत्यंवदामिदेवेशि नाममाहात्म्यमद्भुतम् ॥ ३ ॥

वा०पु०। सर्वेषामवताराणां कारणंपरमाद्भुतम्।
श्रीमद्रामेतिनामैव कथ्यतेसद्भिरन्वहम्॥४॥

अर्थ—स्कन्दपुराणमें श्रीशिवजीने पार्वतीजीसे कहाहै कि हे देवेशि सब अवतार श्री रामनामकी शक्तिसे उत्पन्न होतेहैं हम सत्य कहते हैं कि रामनामके माहात्म्य आश्चर्य्य हैं ॥ १ ॥ पुनः वायुपुराण में शिवजीने नारदजी से कहाहै कि सब अवतार के परम कारण आश्चर्य्यमय श्रीमान् रामइति नामहै यह मत सबके सदासे सिद्धान्त है ॥ २ ॥ इसी प्रकारसे बहुत प्रमाण हैं इससे रामनामही सर्वावतार के कारण हैं और सबके सार भी एक नामही है दूसरा सब धोखाहै अन्तमें सबको काल भक्षण करजायगा जहां तक देखने में और सुनने में आताहै सो एक भी न रहेगा केवल एक निर्वाणदायक राम नाम रहजायगा इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए श्रीरामनामही से पुनर्सृष्टि होतीहै और ब्रह्मा विष्णु शिवादि भी होतेहैं और चारों वर्ण भी रामनामही से होते हैं कोटि कोटि ब्रह्माण्ड भी नामही से होतेहैं यथा प्रमाण (पद्मपुराणे श्रीवेदव्यासउवाच) ॥

श्लोक।रामनामांशतोजाताब्रह्मांडाःकोटिकोटिशः।
रामनाम्निपरेधाम्नि संस्थितास्वामिभिस्सह॥ १॥
स्वाभाविकीतथाज्ञान क्रियाद्याःशक्तयःशुभाः।
रामनामांशतोजाताः सर्वलोकेषुपूजिताः ॥ २ ॥

(अर्थ)—पद्मपुराणमें श्रीवेदव्यास जीने सब विप्रनसे कहाहै कि श्रीरामनामहीके अंशसे कोटि कोटि ब्रह्माण्ड उत्पन्न होतेहैं और परम तेजमय श्रीरामनामहीमें स्वामिके सहित याने त्रिदेव के सहित सब ब्रह्माण्ड स्थितहैं ॥ १ ॥ तैसेही श्रीराम नामसे स्वाभाविकी ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति उपासनादि लेके जितनी शुभदायक शक्तिहैं सो सब उत्पन्न भयेहैं और सब लोकमें सुपूजित होरहेहैं ॥ २ ॥ इसी प्रकारसे बहुत प्रमाणहैं इससे सब के कारण राम नामहीहै दूसरा सब भ्रमजालहै ॥

श्लोक। रकाराज्जायतेब्रह्मा रकाराज्जायतेहरिः।
रकाराज्जायतेशम्भू रकारात्सर्वशक्तयः॥ १॥
आदावन्तेतथामध्ये रकारेषुव्यवस्थितम्।
विश्वंचराचरंसर्व मवकाशेननित्यशः ॥ २ ॥

रकाराज्जायतेवायू रकाराच्छब्दउच्यते।
वाक्तत्त्वञ्चमकारेण रामएवेतिवैश्रुतिः ॥ ३ ॥
रकाराच्छेषलोकश्च अकारोमर्त्यसम्भवः।
मकाराच्छून्यलोकश्च त्रयोलोकनिरामयः ॥४॥
रामेणअक्षराजाताः स्वरारामेणजायते।
वेदवेदाङ्गवेदेषु रामेणजायतेध्रुवम् ॥ ५ ॥
रामशब्देनवर्णाणां विजानीयात्प्रयत्नतः।
रकारेब्राह्मणाजाता अकारेणनृपास्तथा ॥ ६ ॥
मकारेणाविशःप्रोक्ता अकारेणाधमास्मृताः।
अनुस्वारेणब्रह्माण्डेसर्वेरामेणसंयुता ॥ ७ ॥

(अर्थ)--रकारसे ब्रह्माजी भयेहैं रकारसे विष्णुभयेहैं रकारहीसे शिवजी भयेहैं और रकारहीसे देविदुर्गादि सब शक्ति भईहैं ॥ १ ॥ आदि अन्त तथाहि मध्य सब रकारहींमें स्थितहैं और जेतने विश्वमे चराचर जीव हैं सोसब नित्यशः रकारहींमें अवकाशतेहैं याने प्रवेश करतेहैं ॥ २ ॥ रकारसे पवनभये हैं रकारसे शब्द भयेहैं और वाक नाम बाणी के तत्त्व मकार है भाव मकारसे बाणी भयाहै इसीको राम इति ऐसा वेद कहते हैं ॥ ३ ॥ रकारसे शेषलोक याने पाताल भयाहै और अकारसे मृत्यु लोकभया है और मकार से शून्यलोक याने स्वर्ग लोक भयाहै इससे तीनो लोक निरामयहैं ॥ ४ ॥ रामनामहीसे सम्पूर्ण अक्षर भयेहैं और सहस्वरभी रामनामहीसे भयाहै और वेद वेदके अंग सब रामनामहीसे भयाहै यह निश्चयहै ॥ ५ ॥ और रामही शब्द चारौ बर्णमें भी प्रयत्नसे जानना चाहिये जैसे कि रकारसे ब्राह्मण भयेहैं अकारसे नृपजो राजाहैं याने क्षत्री सो भयेहैं ॥ ६ ॥ और मकारसे विशःनाम बैश्यभयेहैं और मकारके अकार से अधम जो शूद्रहैं सो भयेहैं और अनुस्वार जो विन्दुहै तिसमें सब ब्रह्माण्ड स्थितहैं ऐसा श्रीरामनाम सबके आदिकारणहै और सर्वोपरिहै तातेएक रामनामहिं सबके सारहै। (महारामायणे) ॥

श्लोक। नारायणादिनामानि कीर्तितानिबहून्यपि।
आत्मातेषांचसर्वेषां रामनामप्रकाशकः ॥ १ ॥

अन्यानियानिनामानि तानिसर्वाणिपार्वति।
कार्य्यार्थेसम्भवानीह रामनामादितःप्रिये ॥२॥

(अर्थ) महारामायणमें शिवजीने पार्वतीजीसे कहा है कि नारायणादि लेके भगवन्तके नाम बहुत कथन कियाहै परन्तु रामनाम तिनसब नामनके आत्मा है और प्रकाशक हैं देखिये यह बचन कैसाहै इससे रामनामसर्वोपरिहै ॥ १ ॥ पुनः केदार खण्डमें शिवजीनें पार्वतीसे कहाहै कि हे प्रिये पार्वति ! अन्य जितने भगवत नामहैं सो सब नाम संसार के कार्य्यार्थ प्रकट भये हैं और रामनाम अनादिहै सब नामके कारण है ॥ २ ॥

(पुनः बशिष्ठ संहितायां) ॥

श्लोक। नारायणस्वयम्भूश्च शिवश्चेन्द्रादयस्तथा।
सनकाद्यामुनीन्द्राश्च नारदाद्यामहर्षयः ॥ १ ॥
सिद्धाःशेषादयश्चैव लोमशाद्यामुनीश्वराः।
लक्ष्म्यादिशक्तयःसर्वाःनित्यमुक्ताश्चसर्वदा ॥२॥
मुमुक्षवश्चमुक्ताश्च ऋषयश्चशुकादयः।
तत्प्रभावंपरंमत्वा मन्त्रराजमुपासते ॥ ३ ॥

(अर्थ) श्रीमन्नारायण जो हैं और स्वयम्भू जो ब्रह्माजी हैं और शिवजी जोहैं और इन्द्रादिक जेतने देवताहैं और सनकादिक जो मुनियों में ईश्वर हैं और नारदादि जो महर्षिगणहैं अट्ठासी सहस्र और सम्पूर्ण सिद्ध लोग जोहैं और शेषादिक जेतने सर्पगण हैं और लोमशादिक जितने मुनीश्वर हैं और लक्ष्मी आदि लेके जितनी शक्तियां हैं और नित्यमुक्त जितने हैं सो सब सर्वदा और जितने मुमुक्षूलोग हैं मोक्षके कांक्षा करनेवाले और जितने मुक्तलोग हैं और जितने ऋषिलोग हैं शुकदेवादि लेके सो सब कोई रामजी के उस परम प्रभावको मानके मंत्रराज जो रामनाम है अथवा षडक्षर तिसकी उपासना करते हैं याने जपते हैं यहां ये षडक्षर हैं और श्रीरामनाम से सदा अभेद है यथाः—

श्लोक। सर्वेषांराममन्त्राणां श्रेष्ठंश्रीतारकम्परम्।
षडक्षरमनुंसाक्षात्तथायुग्माक्षरंवरम् ॥ १ ॥

(अर्थ)—मत्स्यपुराण में लिखाहै कि श्रीरामजीके सब मंत्रोंमें श्रेष्ठ श्रीरामतारक मंत्र है साक्षात् तैसेही श्रीरामनाम दोऊ अक्षर श्रेष्ठ हैं ॥ १ ॥ देखिए ऐसा श्रीरामनाम सर्वोपरि है कि जिसको विष्णु नारायणादि जो स्वयंब्रह्म हैं सो सब भजते हैं तो दूसरे को क्या कहना है इससे रामनामही एक सारहै शिवसंहिता में लिखाहै कि सर्वावतार श्रीरामनामको जपते हैं यथा प्रमाण शिवसंहितायां पञ्चम पटले शिवउवाच।

श्लोक। आसीनन्तमयोध्यायां सहस्रस्तम्भमंडिते।
मण्डपेरत्नसंज्ञेच जानक्यासहराघवम् ॥१॥
मत्स्यःकूर्मःकिरिर्नैको नारसिंहोऽप्यनेकधा।
वैकुंठोऽपिहयग्रीवो हरिःकेशववामनौ ॥२॥
यज्ञोनारायणो धर्मपुत्रोनरवरोपिच।
देवकीनन्दनःकृष्णो वासुदेवोबलोपिच ॥३॥
पृश्नीगर्भोमधून्माथीगोबिन्दोमाधवोऽपिच।
वासुदेवोपरोनन्तः सङ्कर्षणइरापतिः ॥ ४ ॥
प्रद्युम्नोऽप्यनुरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपिसर्वदा।
रामसन्दोपतिष्ठन्ते रामादेशव्यवस्थिताः ५
एतेरन्यैश्चसंसेव्यो रामनाममहेश्वरः।

(अर्थ)—श्री अयोध्या जी में सहस्रों मणिखम्भ करके भूषित स्वर्णके मण्डपमें श्री जानकी जीके सहित श्रीराघव जी आसीन हैं ॥ १ ॥ तहां ये मत्स्यावतार जो हैं कच्छपावतार जो हैं और किरिः अनेकों अर्थात् अनेकन बाराह अवतार जो हैं (यहां ये किरिः नाम बाराहके हैं) और अनेकन नृसिंह भगवान जो हैं बैकुण्ठ भगवान जो हैं हयग्रीव भगवान जो हैं हरि भगवान जो हैं केशव भगवान जो हैं वामन भगवान जो हैं नरनारायणावतार जो हैं धर्मके पुत्र बड़े श्रेष्ठ और देवकीनन्दन कृष्ण जो हैं वासुदेव भगवान जो हैं बलदेवजी जो हैं निश्चय करके॥ ३ ॥ पृश्नीके गर्भ में निवास करनेवाले जो भगवान हैं मधुनाम दैत्यके बलको जो मथन करनेवाले हैं मधुसूदन भगवान और गोबिन्द भगवान जो हैं माधव भगवान जो हैं निश्चय करके और सङ्कर्षण भगवान जो हैं लक्ष्मीपति भगवान जो हैं ॥ ४ ॥ और प्रद्युम्न भगवान जो हैं अनिरुद्ध भगवान जो

हैं और चतुर्व्यूहादि जो सब हैं सो सब सर्वदा निश्चय करके श्रीरामजी की आज्ञा में स्थित हैं। इतना यह जो कह आएहैं और भी अन्य जितने भगवतके रूप हैं सो सब सहस्रों रामनाम महाईश्वर की सेवा कर रहे हैं तो दूसरेको क्या कहना है इससे रामनाम सर्वोपरि है और सबके सारहैं इससे परे सिद्धान्त कुछ नहींहै और न होगा और न है इस वचनको निर्पक्ष होके बिचारिए काहे से कि बिचारबे योग्य है देखिए जितने पूर्वाचार्य भएहैं तिनके सिद्धान्त और अद्य जो जो महात्मा लोग भए हैं तिन सबके एक नामहीं सिद्धान्त है दूसरा नहीं देखिए कबीरजी ने भी एक नामही कहाहै (यथाप्रमाण) रामको नाम चौमुक्तिका मूलहै निगम निचोर रर तत्व छानी। रामको नाम षटशास्त्र में मथ लिया रामको नाम षटदर्शनें है कहानी॥ रामको नामलै ध्यान ब्रह्माकिया ररंकारे धुनि सुनी मानी। कहैं कब्बीर अवगाह लीला बड़ी रामको नाम निर्वाण बानी॥ रामको नामलै विष्णु पूजा करैं रामको नाम शिवयोग ध्यानी। रामको नामलै सिद्ध साधक जियो जियो सनकादि नारदहु ज्ञानी॥ रामको नामलै राम दिक्षा लियो गुरुवाशिष्ठ निलि मंत्र दानी। रामको नाम लै कृष्ण गीता कथी पथी पारत्थ नहिं मर्म जानी॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे कबीरजीके भी सब ग्रन्थमें एक रामनामही सिद्धान्तहै अवगुरु नानक साहेब जीके वचन यथा (हरिनामसुखमनिग्रंथके) रामनाम जो करैं बिचार॥ ते धनवन्त गनी संसार॥ नामसंग जिसका मनमान॥ नानक तिन्हे निरंजन जान॥ अलष अभेव पुरुष परताप॥ आप जपाये तो नानक जाप॥ नामके धारे सकेल जेता॥ नामके धारे खंड ब्रह्मंड॥ नामके धारे सुमृति वेदपुराण॥ नामके धारे सून्न ज्ञान ध्यान॥ नामके धारे आकाश पाताल॥ नामके धारे सकल अकार॥ नामके धारे पूरीय सबभवन॥ नामके संग उधरे सुनि श्रवन॥ करि कृपा जिस अपने नाम लाए॥ चौथेपद महिसो गतिपाए॥ इत्यादि बहुत कहाहै गुरु नानक जीके भी सब ग्रन्थमें एक नामही सिद्धान्तहै॥ दादूरामजीके वचन॥ दरिया यह संसार है रामनाम निज नाव॥ दादूढील न कीजिये यह औसर यह दाव॥ इत्यादि बहुत कहेहैं दादूजीके भी एक नामही सिद्धान्त है॥ संतदास जीके वचन॥ ध्यावत है वा रामको ब्रह्मा विष्णुमहेस॥ नरक्यौं चूकेसंतदास गुजरतहै यहभेस॥ रामनाम पर तत्त्वहै परम त्वत कोइ नाहिं॥ शिवसनकादिक शेष लगिसबै संतइहिमाहिं॥ दूलमदास जीके वचन॥ रामनाम दुइ अक्षररटैं निरंतर कोय॥ दूलमदीपक बारिउठै प्रीति प्रतीति जो होय॥ पलटूदास जीके वचन॥ रामनाम धोखेउ निकसे तामुख देउँ कपूर॥ पलटू ताके नफरके हौं पनहीकीधूर॥ इत्यादि सब महात्मन के सिद्धान्त से एक रामनामहीसार पाया जाताहै इससे रामनाम सर्वोपर है अबश्री अयोध्याबासी महात्मनके प्रमाणसे रामनाम

सर्बोपर देखातेहैं यथा करुणा सिन्धुजीके वचन ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मनारायणादिभ्यो वतारेभ्यः परात्परः। रामस्तस्यामृतंनामरामेतिजीवनांसताम् ॥ १ ॥ नाम्नांश्रीपरमेश्वरस्यविमलंराकाशपूर्णोयथा ॥ नक्षत्रपुञ्जकर्म्मधर्म्मसकलंज्ञानंचयोगादयः ॥ २ ॥ एतेषांचफलंविरागतपसो रामस्यनामप्रभोः ॥ अर्थात् ब्रह्मनारायणादि लेके और जतने अवतार हैं तिन सबको राम जीके राम ऐसा जो नाम है अमृतरूप सोईजीवनहै ॥ पुनः परमेश्वर के विमल नामजोहैं रामनाम सोई तो राकके पूर्ण चन्द्रमाहैं और जितने कर्म धर्म ज्ञान बैराग्य योगादि साधनहैं सो सब नक्षत्रगणहैं २ ॥ पुनः दोहा ॥ रामनाम ते होत सबसो काहूते नाहिं ॥ पक्षपातहठ छोड़िके समुझि लेव मनमाहिं। रामनाम चर अचरमें रम्यो गगन पथनीर। जो यहिविधि लखि गहिरहै रामउपासकधीर ॥ जप तप दान अचार व्रत योग ज्ञान बिज्ञान। रामचरण साधन सकल नाम अधीन प्रमान ॥ इत्यादिक नामशतक में बहुत कहे हैं इससे नामहीं सबके सारहै (श्रीस्वामी परमहंस शीलमणि जीके वचन) रसना रामनाम रसमाती आठ पहरजक जाकेहैं। शीघ्र सरित सावनकी जैसी तैसी लगन लगाकेहैं ॥ साधन और नज़र नहिं लावैं तुच्छसबै ममताकेहैं। नाम सैफगहि शीलमणी हग अवध शहरके बांकेहैं ॥ इत्यादि बहुत कहे हैं (स्वामी श्रीरघुनाथदास जी महाराज के वचन) सत कोटि मथि काढ़ि लीन्ह्यों है गरलपान कीन्ह्यो है कहो सो नाम ऐसो कौन नामीको। नामबल शोख्यो सिन्धु अबौ काशिहूं में मरत करत जीवन जहांलौ जौन मुक्ति अनुगामीको ॥ औरो शिवसती तन त्यागके समै सो मानो प्रगट दिखायो भाव सेव्य स्वामीको। साईं उर आनि रघुनाथ जन जानिकै निरन्तर निःकाम करत रामहिं नमामिको ॥ १ ॥ मरामरा कहत मुनीश मन ब्रह्म भयो रामराम कहत को जानै कौन पद्दहै। यमन हरामके कहत राम धाम पायो प्रगट प्रभाव भल पोथिनमें गद्द है ॥ काशिहू मरत उपदेशत महेश जाहि जानि न परत ताहि मनमोह मद्द है। ऐसेहू समुझि सीताराम नाम जो न भजे जन रघुनाथ कहैं तासों फिरि हद्द है ॥ २ ॥ इत्यादि बहुत कहे हैं इससे रामनाम सर्वोपरि है (स्वामी श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज के वचन यथा) रटे नहिं नाम ताकेमुख मांझ थूकिए। कीजिए न शङ्क रङ्क रावको समान मानि तानि बैन वान लक्षचालतन चूकिए ॥ मान अपमान दिशि देखिए न भूलि कहूं प्रबल प्रताप उपदेशहीन मूकिए। नाम महाराज साज राजसुख दैन गुन देव नर नाग कोन चित्तबीच फूकिए ॥ श्रीयुगल अनन्य जौन सन्त सतगुरु कहैं रटे नहिं नाम ताके मुख मांझ थूकिए ॥ १ ॥ रटेनाहिं नामसो विशेष बीट कीटहै। जीवंत मृतक ताते जानी न परत पीर अन्तक सदन जाय अन्त शिर पीटिहैं ॥ कहें हम पण्डित प्रवीन सभा जीते बहु रटे विना नाम पढ़ेपाथर अरु ईट हैं। दान अभिमान सो तो अतिही नदान पन नृगके समान नृपहानी गिरगीट

हैं। श्रीयुगल अनन्य सब फोकट धरम लखु रटें नहिं नाम सो विशेष कीटकीटहैं ॥ २ ॥ रटैनहिं नाम ताके मुखहींमें नर्क है ॥ सुनिये न बात घातकठिन विचारि जिन महा म्लेक्ष मूढ निशिचर सेन फर्कहै ॥ नाना मत बाद क्योग सुगन सुगंध मांझ मोहि रहे मूक कैसे जाने नाम अर्क है ॥ सीताराम लोक अभिराम भक्त पास सठ जात सकुचात रैन ऐन गेह गर्कहै ॥ श्री युगल अनन्य बात विदित पुराण बिच रटे नहिं नाम ताके मुखहीं में नर्क है ॥ ३ ॥ इत्यादि नाम माहात्म्य बहुत कहे हैं कहांतक लिखे जिस महात्मा को विशेष करिके नाम माहात्म्य देखनेकी इच्छाहोय सो महाराजका संग्रह किया भया श्री रामनाम प्रताप प्रकाशको कोई अयोध्या बासी संतके द्वारालेके देखिये कि जिसमें ग्यारहसौ श्लोक पूर्वाचार्यों के प्रमाणहैं एक रामनामके ऊपर इससे देखबे योग्यहै काहेसे कि नाम के महत्त्व ऐसा कोई ग्रंथमें नहींहै जैसा कि इस ग्रन्थमें है॥ पुनः श्रीगोस्वामी जीके सिद्धान्त बचन विनय ॥ भरोसो जाहि दूसरो सो करो ॥ मोंकोतो रामको नाम कामतरु कलि-कल्यान करो ॥ कर्म उपासन ज्ञान वेदमत सबसब भांतिखरो॥ मोहि तो सावनके अंधहि ज्यौं सूझत रंगहरो ॥ चाटत तो पातरीश्वान ज्यौं कतहुँन उदर भरो ॥ सोहौं सुमिरत नाम सुधारस पेषत परसि धरो ॥ स्वारथहू परमारथहू को नहि कुंजरो नरो ॥ सुनियत सेतुपयोधि पषानन करि कपि कटक तरो ॥ प्रीति प्रतीति जहां जाकी तहं ताको काजसरो ॥ मेरे माय बाप दोउ आखरहौं शिशु अरनि अरो ॥ शंकर साखि जो राखिकहौं कछुतो जरि जीभगरो ॥ अपनो भलो राम नामहि ते तुलसिहि समुझि परो ॥ १ ॥ इत्यादि बहुत कहेहैं इससे सब महात्मनके सिद्धान्त से सार एक नामहीं है दूसरा सब बृथाहै इसी रामनामको गोस्वामीजीने श्रीमद्रामायणमें नव दोहा पर्यन्त बन्दना कियाहै और सब प्रकारसे एक रामनामहीं सिद्धान्त कियाहै (इहांये नवदोहा बन्दना करनेका हेतु यहहै कि श्रीगोस्वामी जीने दोहावली में लिखाहै कि रामजीके नामजोहै सोई तो अंकहै और सब साधन शून्यहै यथा (दोहा) नाम रामको अंकहै सब साधन है सून ॥ अंकगये कछु हाथनहि अंक रहे दशगून ॥ अर्थात् रामनाम जोहै सोईतो अंकहै अंकके प्रमाण नव तक है आगेनही इससे रामनामके जो नव दोहातक बन्दना है सोई तो नवौं अंकहै और रामायणमें अथवा दूसरे ग्रन्थमें जितनी साधन कथन है सो सब शून्य है इससे गोस्वामीजी यह देखाये कि रामनामे जो सबके सार है तिनको तो दृढ़ होके धारण करिये और रामायणमें जितनी साधनहै सो सब करिये तबतो दशगुणहोगी नहींतो रामनाम को छोड़िके जो और साधन करेगें तो शून्य मिलेगी मात्र कुछ हाथ न लगेगी इससे सब साधन को छोड़िके रामनाम जपना येहीसर्वोपरिहै इससे नवदोहा तक कहा अथवा नवधाभक्तिके सार रामनामहीहै इससे नवदोहातक कहा देखिये यहांये गोस्वामी जीने कैसा गुप्त अभिप्राय कहाहै इस

अगाध अभिप्रायको समझतहीं बनताहै देखिये रामायणमेंभी एक राम नामहिं सारहै सो गोस्वामीजीने अपही खोलिके कहाहै यथा उदाहरण॥(मूल)--

दो०। भणितमोरिसबगुणरहित विश्वबिदितगुणएक। सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्हके विमल बिवेक॥

(अर्थ)--श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि भनित जो मेरा काव्यहै सो सब गुण करिके रहित है भाव जितने काव्य के गुण पिङ्गलमें कहाहै तिनसब गुण करिके रहित है परंच बिश्वजो संसारहै तिसमें एकगुण विदितनाम बिख्यातहै अर्थात् सब कोई उसगुणको जानतेहैं यथा (रामनाम भुविख्यात मभिरामेण वा पुनः) इत्यथर्वणेश्रुतिः॥ इहांये बिश्व बिदित कहनेका भाव यहहै कि रामजीके रूप लीलाधाम सबको सुलभनहीं है काहेसे कि सर्व देशमें नहींहै केवल ज्ञाताके वास्तेहैं और रामनामजो है सो ऊँच नीच सबको शुलभहै और सर्व देशमें है इससे विश्व बिदित कहा इहां ये कोई २ यह अर्थ करते हैं कि यह रामायण विषय गुणसे रहितहै और विश्वमें विदित होगी यह एकगुणहै सो यह अर्थ ठीकनहींहै इहांये बिश्व बिदित एक गुण रामनामहीहै दूसरानहीं ताते यही अर्थ ठीकहै सो गोस्वामी जी कहतेहैं कि सो विश्व बिदित गुण हमारे काव्य में बिचारिके सुनिहहिं को सुनिहहिं कि जिन्हको सुमति नाम सुष्ठबुद्धिहै और बिमल नाम निर्मल बिवेक नाम बिचारहै बिवेक के स्वरूप हंसके समान होना यथा (संतहंस गुण ग्रहहिं पय परि हरि बारि बिकार॥ अस बिवेक जब देइ बिधाता॥ तबताजि दोषगुणहिं मनुराता॥ इत्यादि बिवेक के स्वरूप कहाहै देखिये इहांयेभी गुणहीं मनुराता कहा इससे इहांयेभी गुणके अर्थ रामनामहीं जानना चाहिये दूसरा नहीं इसीसे बिश्व विदित गुण कहा पुनः (भरत हंस रवि बंस तडागा॥ जनमि कीन्ह गुणदोष बिभागा॥ गहिगुण पय तजि अवगुणबारी॥ निज यश जगत कीन्ह उजियारी॥ देखिये इहांयेभी गुणके अर्थ नामहीं है ताते ऐसा हंसके सदृश जिनको बिवेक है सोसुनहहिं॥ १॥ (मूल)--

एहिमहँ रघुपति नाम उदारा। अति पावनपुराण श्रुतिसारा॥ १॥

(अर्थ)--अबश्री गोस्वामीजी वह पूर्वोक्त जो बिश्व बिदित गुण हैं सो कहत हैं कि एहि महुँ नाम अंगुल्या निर्देश करिके देखातेहैं कि एहि रामायण महँ रघुपति जो श्रीराम

जी हैं तिनके राम ऐसा जो नाम उदार है सो। है इहिगें कहने का यह भाव है कि जो रामनाम गुण विश्व विदितहै सोई रामनाम गुण एहिगहैहै अर्थात् दूसरा गुण नहीं है अथवा रामजीके धामरूप लीला इसमें सबहै परंच सबते उदार नाम बड़ा अथवा श्रेष्ठ एहिगहँ रघुपतिके नामही है और उदार के स्वरूप यथा (जहँतहँ पिअहिं बिबिधिमृग नीरा ॥ जनु उदार गृह याचक भीरा) इत्यादि उदारके स्वरूप कहा है इससे उदार नाम बड़ेकेहैं भाव जैसे उदारके पास चाहे जैसा गरीब जावे और जो यांचे सो सब मिलसकती है नहिं नहिं कहसकतेहैं तैसेही श्रीरामनाम ऐसा महानदाताहै कि चाहै जैसा पापी होय जिसके पापके हरने वाले त्रिलोकमें दूसरा कोई नहींहै तिनके पापके नाश करने वाला नामहै कोई पापीको नाहिंनहिं करसकतेहैं और जोचाहै सो सब मिलसकते हैं ऐसा नाम उदारहै उदारके यथार्थ स्वरूप गोस्वामी जीने (विनयमें) कहाहै (यथा) सुमिरु सनेह सोतू नामराम रायको ॥ संबल निसंबलको सखा असहायको ॥ भागहै अभागेहीको गुन गुनहीनको ॥ गाहक गरीबको दयालदानि दीनको ॥ कुलअकुलीनको सुनो है वेदसाखी है ॥ पांगुरेके हाथ पांय आंधरे कि आंखि है ॥ माय बाप भूखको अधार निराधार को ॥ सेतु भवसागर को हेतु सुखसार को ॥ पतितपावन रामनाम सो न दूसरो ॥ सुमिरे सुभूमि भयौ तुलसी सो ऊसरो ॥ १ ॥ भलो भली भांतिहै जो मेरे कहे लागिहै ॥ मन रामनामसो सुभाय अनुरागिहै ॥ रामनाम को प्रभाव जानि जूड़ीआगिहै ॥ सहित सहाइ कलिकाल भीरु भागिहै ॥ रागराम नामसों बिराग योग जागिहै ॥ बाम विधि भालहू न कर्म दाग दागिहै ॥ रामनाम मोदक सुधासनेह पागिहै ॥ पाइ परितोष तून द्वार द्वार बागिहै ॥ रामनाम कामतरु जोई जोई मांगिहै ॥ तुलसीदास स्वारथ प्रमारथौ न खागिहै ॥ २ ॥ इत्यादि उदार के स्वरूप बहुत कहाहै इससे रामनाम ऐसा उदार कोई नहींहै इससे उदार कहा और रघुपति कहनेके भाव आगे नामबन्दनामे कहेंगे पुनः गोस्वामीजी कहतेहैं कि वह रामनाम अति उदार कैसाहै कि अति पावनहै अति पावन कहनेके हेतु यहहै कि और जेतने योग वैराग्य तीर्थ व्रतादिहैं सो सब पावनहैं तिनको भी पवित्र करने वाला रामनाम है यथा (कल्याणानां निधानं कलिमल मथनं पावनं पावना नामिति हनुमत्संहितायां) अथवा सबते पवित्र जो ज्ञानहै यथा प्रमाण (गीतायां) नहिं ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिहविद्यते ॥ इत्यादि लिखा है कि ज्ञानके समान इस लोकमें निश्चय करके पवित्र नहींहै तिस पवित्र ज्ञानकोभी पवित्र करने वाला रामनाम है इससे अतिपावन कहा पुनः वह रामनाम कैसा है कि वेद पुराण के सार नाम निचोरहै अर्थात् वेदमें पुराणमें यथार्थ तत्त्व एकरामनामहीहै दूसरा सब भटका है अथवा अति पावन जो वेद पुराणहै याने उपासना काण्ड तेहिके सार रामनामहै यथा (पावन पर्वत वेद

पुराना ॥ रामकथा रुचिराकरनाना ॥ पुनः ॥ वेदपुरान उदधि घनसाधू ॥ बरषहिं रामसुयश बरबारी ॥ मधुरमनोहर मंगल कारी ॥ इत्यादि उपासना काण्डके पावन ताई कहाहै काहेसे कि वेदत्रैकाण्डहै याने कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड उपासनाकाण्ड तिसमें उपासनाकाण्ड जोहै सो अतिपावन है तेहिके सार रामनाम है काहे से कि उपासनाही काण्डमें रामनाम बर्णनहै और ज्ञानकाण्ड में कर्मकाण्ड में तो भक्तिके और नामरूप लीला धामादिके अभावहै इससे अपावनहै ताते अति पावन पुराण श्रुतिके सार रामनामहै मुख्य तात्पर्य्य गोस्वामीजी का यहहै कि उपासनाकाण्ड मेंभी सार एक रामनामही है इससे सबछोड़िकै रामनाम जपना चाहिये ॥ १ ॥ (मूल)--

मंगल भवन अमंल हारी।
उमासहित जेहि जपत पुरारी ॥ २ ॥

(अर्थ)--पुनः वह राम नाम कैसाहै कि मंगल जो ज्ञान बैराग्यादिकहै तिनको भवन नाम घरहै इहांये भवन कहनेका यह भावहै कि अपना भवन सबको प्रियहोताहै जैसे कोई अपने भवनको छोड़िके दूसरे ठौरनहीं रहिसकते हैं तैसेही जेतने मंगल पदार्थ हैं सो सब रामनामको छोड़िके दूसरे ठौर नहीं रहते हैं सब मंगल रामनामहीं में निवास करतेहैं काहेसेकि मंगलको रामनाम बहुत प्रियहै जैसाकि अपना घरसबको प्रियहै इससे यह देखाये कि नाम जापक जनको सब मंगल स्वयं आके प्राप्तहोतेहैं इससे सब साधन त्यागिके श्रीरामनाम जपना सर्वोपरिहै पुनः वह रामनाम कैसाहैकि अमंगल जो काम क्रोध लोभादिकहै तिनकेहारी नाम हरण करनेवाले हैं भाव बिना रामनामके जपे अमंगलका नाशहोना सर्वथादुर्लभहै इससे अमंगलहारी कहा पुनःवह रामनाम कैसाहै किजे-हिको उमाजो पार्वतीजी हैं तिनके सहित पुरारी जो श्री शिवजी जोहैं से जपतेहैं भाव शिवजी साक्षात् ईश्वरहैं और पार्वतीजी आद्याशक्तिहैं सो जेहि रामनामको जपत नाम आजपर्य्यन्त जपरहेहैं तो दूसरेको क्याकहनाहै अर्थात् उदार न होते तो अतिपावन पुराणश्रुतिके सार न होते मंगलभवन न होते अमंगलहारी न होते तो उमाके सहित शिवजी क्योंकर जपते इससे रामनाम सर्वोपरि है इहां ये और सब जापकों को छोड़िके शिवही पार्वतीको क्यों कहा इसका हेतु यहहै कि शिवजी और पार्वतीजी मुख्य जापकहैं इन दोउनते विशेष जापक दूसरा कोई नहींहै यह सर्वत्र सिद्धान्तहै इससे गोस्वामीजीने मुखियानाम जापक के द्वारा इहां नाममाहात्म्य सूचित किया कि जिससे ऐसा कोई न जाने कि नाम माहात्म्य नहींहै इससे इन्हीं दूनो को कहा काहेसे कि जहां शिव पार्वती के नाम कहे तहां सब जापक आगये क्योंकि शिवजी जापक शिरोमणिहैं इससे प्रथम कहा दूसरे

जो जो गुण इहांवे नाममें कहाहै सो सो सबगुण नाम जापक शिवजीमेंहैं जैसाकि ग्रन्थकार स्वामीने प्रथम नामको उदार कहा सो शिवजीमेंभी उदार गुण प्रसिद्धहै काहेसे कि नामहीके बलसे पञ्चकोशपर्य्यन्त काशी क्षेत्रमें मोक्षके सदाव्रत देरहेहैं यह बड़ी आश्चर्य्य उदारताहै देखिये मोक्षपद ऐसा दुर्लभ कि योगीकोभी होना असम्भवहै सो सब चराचरको मोक्ष देना यह नामके कृपासे शिवजीको उदारतागुण मिलाहै इसीसे दानी शिरोमणि नाम जिनको विख्यातहै यथा (दानी कोउ शंकरसेनाहीं) इत्यादि कहाहै पुनः अति पावन पुराण श्रुति के सार नाम को कहा सो शिवजी अतिपावनही हैं और वेद पुराण के सारग्राहीभीहैं यथा (नामैव वेद सारांशंसिद्धान्तं सर्वदा शिवम्) पुनः रामचरित शतकोटि महँ लिय महेश जियजानि ॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे जैसा वेद शास्त्रके सार रामनाम है तैसेही शिवजी महाराज भी सारग्राहीहैं पुनः रामनामको मंगलभवन कहा और अमंगल हारी कहा सो शिवजी मंगलके स्थानही हैं यथा (नामप्रसाद शंभु अविनासी । साज अमंगल मंगलरासी ॥) इत्यादि कहाहै और अमंगल के हारी प्रसिद्धहीहैं इस से इहां ये सबजापक को छोड़िके ग्रन्थकार स्वामीने शिवजीको कहाहै दूसरे जहां कहीं गोस्वामीजी नाममाहात्म्य कहतेहैं तहां प्रथमही शिवजी को कहतेहैं सो आगे नामबन्दनामें प्रसिद्धहै ॥ २ ॥ (मूल)--

भणित बिचित्रसुकबिकृतजोऊ । रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥ ३ ॥

(अर्थ) अत्र श्री गोस्वामीजी रामनाम से जो काव्य रहित है तिनके अशोभित्व देखातेहैं कि भणित जो काव्यहैं सो बिचित्र नाम अद्भुतहोय अर्थात् छन्द प्रबन्ध करिके युक्तहोय अथवा बिचित्र नाम संस्कृत होय और सुकबि नाम अच्छे कवेश्वरकृत होय जोऊ नाम जौन काव्य परंच रामनाम न होय तो सोहन सोऊ नाम वह बिचित्र काव्य शोभा नहीं देतीहै भाव इसी से हमने इसमें रघुपति नाम उदार कहाहै ॥ ३ ॥ (मूल)--

बिधुबदनी सब भांति सवांरी । सोह न बसन बिना बर नारी ॥ ४ ॥

(अर्थ)--कैसी शोभा नहीं देतीहै वह पूर्वोक्त काव्य कि जैसे बिधुबदनी अर्थात् चन्द्रमुखी सबभांतिसे सँवारी नाम सजीहोय परंतु एक बसन नाम बस्त्र न होय तो बर नाम श्रेष्ठ नारी अथवा उत्तम कुलोत्पन्ना स्त्री शोभा नहीं देतीहै भाव वहां तो सुकबि और इहांये बिधुबदनी तहां भणिति जो काव्यहै सो संस्कृत और इहांये बर नाम श्रेष्ठ

नारी अर्थात् उत्तम कुलोत्पन्ना वहां विचित्र यानि सर्व काव्यालंकार करके युक्त और यहांयेसब भांति सँवारी अर्थात् पन्द्रह शृंगार करके सम्पन्न वहां रामनाम बिनु सोहन सोऊ इहांये बसन बिना शोभानहीं देतीहै (शंका) इहांये ग्रन्थकार स्वामीने सब उपमा छोड़िके नग्न स्त्रीकी उपमा क्यों दिया इसका क्या हेतुहै (उत्तर) इसका हेतु यहहै कि नग्न स्त्रीको देखनेमें दोषहै ऐसा शास्त्रका सिद्धान्तहै यथा प्रमाण श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे ॥

श्लोक । तन्माताकोटरानाम नग्नामुक्तशिरोरुहा ।
पुरोऽवतस्थेकृष्णस्य पुत्रप्राणरिरक्षया: ॥ १ ॥
ततास्तिर्यङ्मुखोनग्ना मनिरीक्षन्गदाग्रजः ।
बाणश्चतावद्विरथ श्छिन्नधन्वाऽविशत्पुर॥ २ ॥

(अर्थात्)--जिससमयमें श्रीकृष्ण भगवन और बाणासुर का संग्राम होतारहा उसी समयमें तौन बाणासुर के माताजो कोटरा नाम करके रही सो नग्नहोके और केशखोले हुये प्रथमही श्रीकृष्ण भगवानके सन्मुख खड़ी होगई पुत्रके प्राणरक्षार्थे तदनन्तर शास्त्रमें नग्नस्त्रीको देखना दोषहै ऐसा जानके भगवतने मुखनीचे कर लिया इतनेहींमें तबतक बाणासुर रथ और धनुषसे रहितहोके अपने पुरमें घुसगया ॥ २ ॥ इत्यादि लिखाहै इससे इहांये गोस्वामीजीके मुख्याभिप्राय यहहै कि जैसे नग्न स्त्री को देखनेमें दोषहै तैसेही रामनामसे जो काव्य रहित तिनको देखनेमें दोषहै इससे चाहै कैसा भी अपूर्व काव्य होय परंच एक श्रीरामनामके यश यानि गुणमहत्त्व न होय तो देखना धर्म नहींहैं इससे यह पाया गया कि रामनाम काव्यकी प्रतिष्ठाहै बिनानामके काव्य निलज्यहै याते काव्यकी शोभा रामनामहींहै देखिये इहांये गोस्वामीजी ने क्या कहाहै इसबातको अच्छी प्रकारसे विचार करना चाहिये देखिये इसअपूर्व बचनसे यह सिद्धभया कि इस रामायणकी शोभा प्रतिष्ठा लज्जा जो है सो एक रामनामहींहै इससे रामनाम सर्वोपरि है और यही एक रामायणमें भी सारहै इसीसे एहिमहँ रघुपति नाम उदार कहाहै काहेसे कि रामनामसे रहित काव्य वृथाहै यह सबका सिद्धान्तहै और यही एक कुंजीहै सद्ग्रन्थ पहिचानने के वास्ते काहेसे कि प्राचीन जो सद्ग्रन्थहैं पूर्वाचार्य्योंके बनाये उसमें आदि मध्यांत कहीं न कहीं दो एक श्लोक रामनामके माहात्म्य अवश्यमेव होंगे क्योंकि रामनाम बिना काव्य सिद्ध नहीं होतीहै और जिस काव्यमें रामनाम नहींहै वहचाहै ऋषिप्रोक्त होय अथवा दूसरे कृतहोय उसको पाषण्डीमतकी जानना चाहिये जैसाकि (योगवाशिष्ठादि) ग्रन्थहैं

काहेसे कि (ब्रह्मसंहिता) में लिखाहै कि कलियुगके प्रभाव से जितने सद्ग्रन्थहैं सो सब नष्टहोजायँगे और पाषण्डियोंके बनाए ग्रन्थ नानामतके श्रीरामनामसे रहित प्रसिद्धहोंगी यथा प्रमाण (ब्रह्मसंहितायां शिवोवाच ब्रह्मापति ॥

श्लोक॥ कलिप्रभावतोनष्टाःसद्ग्रन्थानांकथाःशुभाः।
पाषण्डैर्निर्मितंनाना मतंश्रीनामवर्जितम् ॥ १ ॥

पुनः कोशलखण्डे श्रीसूतोवाच ऋषिन्प्रति ॥

नतत्पुराणोनहियत्ररामो यस्यांनरामोनहि संहितासा । सनेतिहासोनहियत्ररामः काव्यंनतत्स्यान्नहियत्ररामः २ ॥ शास्त्रंनतत्स्यान्नहियत्र रामस्तीर्थंनतद्यत्रनरामचन्द्रः ॥ यागःसआगोनहिं यत्ररामो योगः सरोगोनहि यत्ररामः ३ ॥ नसासभायत्रनरामचन्द्रःकालोऽप्यकालःकलिरेवसोस्ति। संकीर्त्यतेयत्रनरामदेवो विद्याऽप्यविद्यारहिताह्यनेन ४ ॥ स्थानंभयस्थानमरामकीर्ति रामेतिनामामृतशून्यमस्य ॥ सर्पालयंप्रेतगृहंगृहंतद्य त्रार्चितेनैवमहेश पूज्यः ॥ ५ ॥ उक्तेनकिंस्याद्बहुनातिविश्वं सर्वंमृषास्याद्यदिरामशून्यम्।एतच्चकृष्णःपुनराहनो सौस्पृष्टोपवीतंजयमालिकाञ्च ॥ ७ ॥

इत्यादि बहुत प्रमाणहैं इससे रामनामसे जो काव्य रहितहै उसको नहीं देखना चाहिये दोष होताहै इससे गोस्वामी जीने नग्न स्त्रीकी उपमा दियाहै ऐसही बचन श्री हनुमानजीने भी रावणसे कहाहै (यथा) रामनाम बिनु गिरा न सोहा॥ देखु बिचारि त्यागि मदमोहा ॥ बसन हीन नहिं सोह सुरारी ॥ सब भूषन भूषित बर नारी ॥ भाव रामनामसे रहित जो बाणी है सो नग्न स्त्रीके समान है उसकोभी श्रवण करनेमें दोषहै इससे सुनना नहीं चाहिये चाहै जैसी बाणी होय ॥ (मूल)--

सबगुण रहित कुकवि कृतबानी। रामनाम जस अंकित जानी ॥ ५ ॥

(अर्थ)--और सर्व काव्यालंकार गुणसे रहित होय और कुकवि नाम कुत्सितकवि कृत बाणीहोय अर्थात् बाणीभी भदेशहोय संस्कृत न होय परंतु रामनामके यशकरके अंकित होय रामनामका यश यहहै कि जिनका जिनके रामनामसे उद्धार भयाहै तिन सबकी कथाहोय और रामनामके गुण महत्त्वादि वर्णनहोयँ ऐसे नामके यश करके अंकित नाम चिह्नित होय ऐसाजानिके ॥ ५ ॥ (मूल)--

सादर कहहिं सुनहिं बुधताही। मधुकर सरिस संत गुणग्राही ६ ॥

(अर्थ)--उसको सादर नाम आदरके सहित बुधजो पण्डितहैं अथवा ज्ञानी अथवा संत महात्मा सो कहहिं नाम कहते हैं और सुनहिं नाम पराये के कहे हुये आदरपूर्वक सुनतेहैं काहेसे कि सन्त महात्मा भौंराके समान गुणके ग्राही नाम ग्रहण करनेवाले होतेहैं भाव जैसे भ्रमर पुष्पका बिचार नहीं करते हैं कि कौनके पुष्पहैं केवल सुगन्धि से प्रयोजन रखतेहैं तैसेही सन्तमहात्मा जोहैं सो काव्यका बिचार नहीं करतेहैं कि सर्बगुण युक्तहै अथवा सर्व गुणसे रहित है कि कुकवि कृतहै कि सुकबि कृतहै अथवा संस्कृतहै कि भाषाहै सो नहीं देखतेहैं केवल बिश्व विदितगुण जो रामनाम है तिससे प्रयोजन रखतेहैं देखिये इहां येभी गुणग्राहिय कहा संतको इससे पूर्वोक्त विश्व विदित गुण नामहीं है इसमें सन्देह नहींहै देखिये इस अपूर्व बचनसे रामायण मेंभी एक रामनामही सार पायाजाता है इससे रामनाम सर्वोपरिहै इसी रामनामको गोस्वामीजीने रामयणमें नव दोहा पर्य्यन्त बन्दना कियाहै और सर्वप्रकारसे वर्णन करिके एक श्रीरामनाम सर्वोपरि देखायेहैं सो नाम बन्दनामें निजमत्यानुसार कहौंगा पुनःइसी नवौ दोहाके माहात्म्य गोस्वामीजीने उत्तरकाण्डके अन्तमें कहाहै कि ॥ सतपंच चौपाई मनोहर जानि जोनर उरधरे ॥ दारुण अविद्या पंचजनित बिकार श्रीरघुबरहरे ॥ इत्यादि कहाहै अपनेको न समुझिपरे तो हरिइच्छाहै काहेसे कि रामायण के अभिप्राय अगाधहैं और गोस्वामीजीने तो ऐसाकोई बचन नहींकहाहै कि जो न लगे सबके अभिप्राय पूर्वा पर खोलदियाहै केवल गोस्वामीजी के कृपाअनुग्रह से लगानेवाले होना चाहिये और सतपंच चौपाई के अर्थयहहैं कि रामनाम यशकरके युक्त जितनी चौपाईहैं नवो दोहामें सो सब सत्यपञ्चहैं काहेसे कि रामनाममें सब सतपंचन की सम्मती मिलतीहैं औरमें नहीं

काहेसे कि और और में कोई की सम्मती मिलती है कोई की नहीं और नाम में जो सद्-ग्रंथ जितने हैं वेद पुराण शास्त्र और साम्प्रदायी पन्थाई सबकी सम्मति मिलती है सो पूर्वही बिस्तार पूर्वक कहि आये हैं इससे नामही सम्बन्धि जितनी चौपाई हैं सोई सत्यंच है इहां पै दूसरा अर्थ नहीं है काहेसे कि कलियुग है इसमें नाम छोड़िकै दूसरा साधन नहीं-है यथा ॥ चँहुयुग चहुँश्रुति नाम प्रभाऊ ॥ कलि विशेखि नहिं आन उपाऊ ॥ पुनः ॥ नहिं कलिकरम न भक्ति बिबेकू ॥ रामनाम अवलंब न एकू ॥ इत्यादि बहुत कहे हैं कहां तक लिखें ताते थोरही में जानलीजिये और बिस्तार पूर्वक ग्रन्थ समासमें कहेंगे इससे इहां पै संक्षेप कहा है श्रीगोस्वामीजी का मुख्याभिप्राय यह है कि यहरामायण रामनाम यश करके अंकित है इससे माननीय होगी काहेसे कि जब सामान्य राजाके नाम यश करके अङ्कित होनेसे तो छोटेसे कागद अमोल होजातेहैं और सब कोई मानते हैं तो सर्वेश्वर प्रभु श्रीरामजी के नाम यश करिके अङ्कित यह रामायण है तो ऐसा कौन जीवहै कि जिनको प्रिय न लगेगी देखिये इससे गोस्वामीजी का यशामृत भारतखण्ड भरमें बहरहा है याने ऊँच नीच सबको सबदेश में सब भाषामें होके कल्लोल कर रहाहै ऐसे श्रीमदादि कबि बाल्मीकिजीके अवतार श्रीमद्गोस्वामी तुलसी दासजीको बारबार साष्टांग दण्डवत्प्रणाम है ॥ ७ ॥ और रामनाम के यथार्थ स्वरूप जिस महात्माको देखना होय सो श्रीगोस्वामीजी कृत श्रीरामनाम कलामणि कोष मञ्जूषा को लेके एकान्त में बैठके देखिये क्योंकि रामनाम के यथार्थ स्वरूप गोस्वामीजी ने कहा है काहेसे कि यह ग्रन्थ गोस्वामीजी के निज सिद्धान्त है इससे देखबे योग्य है और इसी ग्रंथमें गोस्वामी जीने शपथ भी कियाहै कि रामनाम से जो विमुख हैं तिनको यह ग्रन्थ नहीं दीजियेगा (यथा) तुलसी पर प्रस्थान मों मारुति दीन्हे मोहि ॥ परको नाहीं दीजिय आन हमारे जोहि ॥ रामनाम के रसिकजे तिनको जीवनमूरि ॥ अर्द्ध इन्दु अरु बिन्दुमों तुलसी रेफहि पूरि ॥ इत्यादि बहुत अपूर्व कहे हैं इससे जरूर देखने के योग्य है इस ग्रन्थमें ॥ एक छत्र यक मुकुट माणि सब बरणनि पर जोउ। तुलसी रघुबर नामके वरन बिराजित दोउ ॥ इसी दोहाका सिद्धान्त वर्णन है सो देखनेसे जान पड़ेगा— और जो कदापि कहो कि गोस्वामीजीकी यह नहीं बनाई है कोई दूसरहीने बनाके गोस्वामी जीके नाम धर दिया है तो यह कहना ठीक नहींहै काहेसे कि गोस्वामीजी के यह तो निश्चय है नहीं कि कितने ग्रन्थ बनायेहैं और न इस बातको कहीं गोस्वामी-जीने लिखा भी है कि हमारे इतने ग्रन्थ हैं हाँ जोतो कहीं कोई ग्रन्थ में गोस्वामीजी का लिखा प्रमाण होय अथवा उनके शिष्यका प्रमाण होयतो ठीकहै नहींतो दूसरे की प्रमाण न मानी जायगी काहेसे कि जिनको जेतना मिला है उन्हों ने उतनाही लिखाहै इससे

अप्रमाण है और जो कदापि कहो कि कथन बहुत कठिन है गोस्वामी जीके कोई ग्रन्थ में न मिलता है और न ऐसा कोई ग्रन्थका सिद्धान्त है तो यहभी कहना ठीक नहीं है काहेसे कि रामनाम भी तो कठिन है विना विधि पूर्वक जपे कल्याणभी तो होना दुर्लभ है और यह बाततो प्रसिद्धही है कि तत्त्व पदार्थ महात्मा लोग कहीं कोई ग्रन्थमें समय पाके कहदेते हैं बार २ नहीं कहते हैं और गोस्वामीजीके कोई ग्रन्थमें जो नहीं मिलता है सो इसका कारण यह है कि और जितने ग्रन्थ हैं सो सब के हितार्थ गोस्वामी जीने बनायाहै यथा ॥ कीरति भणिति भूति भलि सोई ॥ सुरसरि सम सबकहँ हितहोई॥ इत्यादि कहा है और (विनयपत्रिका) अथवा रामनाम कलामणिकोष मञ्जुषा व वैराग्य संदीपनी आदिजो ग्रंथहैं सो गोस्वामी जीके निजसिद्धान्त हैं और जो कहो कि क्या और ग्रन्थ में सिद्धान्त नहीं हैं तो कहा है सब ग्रन्थ में परन्तु अखण्ड नहीं कहा है मिश्रित कहाहै और इन सब ग्रन्थ में अखण्ड कहाहै इससे यह सब ग्रन्थ देखवे योग्य हैं देखिये सिद्धान्त बस्तु तो महात्मा लोग कहीं कहीं कहते हैं जैसे कि रामनाम के माहात्म्य सर्वत्र कहा है परंच दशनामापराध कहीं कोई ग्रन्थमें कहा हैयथा प्रमाण (शिवसंहितायां)॥

श्लोक। सन्निंदाशतनामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भेदधी रश्रद्धाश्रुतिशास्त्र देशिकगिरा नामार्थ वादभ्रमः ॥ नामास्तिक्यनिषिद्धवृत्तिविहित त्यागौचधर्मान्तरैः साम्यंनामचशङ्करस्यचहरे नामापराधादश ॥ १ ॥

(अर्थ)--नाम जापक जनकी निन्द करना १ दूसरा अपराध यह है कि शत नाम अर्थात् भगवत के जितने नाम हैं तिन सब नाम के जो वैभव नाम ऐश्वर्य्य है तिनको एक साधारण कथा समझना २ पुनः तीसरा अपराध यह है कि श्रीश जो हैं लक्ष्मीपति भगवान और ईश जो हैं शिवजी तिनमें भेद बुद्धि करना ३ और चौथा अपराध यह है कि वेद में अश्रद्धा होना याने निन्दा करना ४ शास्त्र में अश्रद्धा ५ छठवां अपराध यह है कि देशिक जो आचार्य्य हैं अर्थात् गुरु स्वामी तिनकी गिरा जो बाणी है तिनमें अश्रद्धा होना भाव आज्ञा न मानना ६ पुनः सतवां अपराध यह है कि भगवत के नामार्थ में बादा विवाद करना और भ्रम करना ७ और अष्टमापराध यह है कि नामास्तिक्य अर्थात् नाम में आस्तिक रहना और निषिद्ध बृत्ति रखना भाव नाम के बल से पाप करना यह महा अपराध है ८ और नवां अपराध यह है कि बिहित याने शास्त्रोक्त जो कर्म धर्म्मादिक हैं तिनको त्याग देना कि हमतो नाम जपते हैं हमको कर्म्म धर्म्म से क्या प्रयोजन है सो न

करना भाव लोक उपदेशार्थ जरूर करना चाहिये न करने से अपराध है ९ और दशवां अपराध यह है कि शिवजी के और विष्णु भगवान के नाम समान याने प्रकृत नाम के तुल्य जानना १० यह दशनामापराध है इसको विचार पूर्वक त्यागि के राम नाम जपना चाहिये ॥ और पद्मपुराण में दूसरेही प्रकार से नामापराध कहा है जैसा कि ॥ शिव बिष्णु में भेद मानना १ वेद शास्त्र की निन्दा करना २ संतन की निन्दा करना ३ नाम के बल से पाप करना ४ श्रद्धाहीन को नामोपदेश करना ५ कर्म्म धर्म्म तीर्थ व्रतादि को नाम के बराबरी मानना ६ नाम के महात्म्य में मिथ्या बुद्धि करना ७ नाम महात्म्य में बिश्वास न होना ८ गुरु वाक्य का निरादर करना ९ नाम माहात्म्य में कल्पना करना और अहंममादि न त्यागना १० इत्यादि कहा है इस से नाम जपने वाले को उचित है कि दशापराध से रहित होके रामनाम जपना चाहिये देखिये इसी प्रकार के तत्त्व पदार्थ महात्मा लोग कहीं २ कहते हैं और यह बात तो सर्वथा निश्चय है कि तत्ववाली ग्रन्थ अवश्यमेव निरादर होता है और बहुतेरे कुबिचारीलोग निन्दा भी करतेहैं जैसेकि कवीरजी रामसनेहीजी गुरूनानक जी दादू रामजी तथा और भी बहुतेरे महात्मा लोग भये हैं तिनको पन्थाई जानके सब कोई निन्दा करते हैं और है यथार्थ देखिये जिन्होंने सब के सार राम नाम को धारण किया है और स्वकीय ग्रन्थ में वर्णन किया है तिनको तो पान्थाई जान के निरादर करते हैं और जिन्होंने अनेकन प्रकारके जञ्जाल बर्णन किये हैं तिनको साम्प्रदायी कहते हैं और मानते हैं यह बड़ी आश्चर्य्य है क्या करें प्रभु की ऐसेही इच्छा है काहे से कि विना उनके कृपा भये तत्त्व पदार्थ देख नहीं परती है और बिना तत्त्व जाने तत्त्व वाली ग्रन्थ भी नहीं देख परती है यह सबके सिद्धान्त हैं ॥ और कथन में भेद एक गोस्वामीहीं जी के नहीं हैं भेद तो सब पूर्बाचार्य्यों के ग्रन्थ में पाई जाती है इस से इसका हेतु यह है कि वेद त्रैकाण्ड है तिसमें ज्ञानकाण्ड में आत्म बिचारही मुख्य कहा है और ब्रह्म जीव के एकता किया है तहां पै कर्म काण्ड के और उपासना काण्ड के अभाव है इति भेद पुनः जहां पे कर्म काण्ड कथन है तहां पे कर्म्महीं श्रेष्ठ कहा है वहां पे ज्ञान काण्ड के और उपासना काण्ड के अभाव है इति भेद और जहां पे उपासना काण्ड प्रति पादन है तहां पे उपासनाहीं मुख्य माना है वहां पे ज्ञान काण्ड के और कर्म्म काण्ड के अभावहै इति त्रिकाण्ड भेद पुनः वेद त्रिगुणात्मक हैं ॥ (यथा) त्रैगुण्य विषयावेदानिस्त्रैगुण्यभवाऽर्जुन ॥ इत्यादि गीता में कहा है इससे जहां रजोगुण बर्णन है तहां स्वर्ग प्राप्ति है और जहां सत्व गुण कथन है तहां ज्ञान होके मोक्ष प्राप्ति है और जहां तमोगुण वर्णन है तहां नरक प्राप्ति है इसी

प्रकार के इसमें भी एक से एक विरुद्ध है॥ पुनः पुराण में भी छः सात्विक हैं ६ राज सी हैं ६ तामसी हैं इसी प्रकार के बहुत भेदा भेद हैं कहांतक लिखें जितने वेद शास्त्र पुराण हैं सो सब त्रिकाण्ड और त्रिगुणात्मक जानना चाहिये ऐसेही ऋषियों मुनियों के बचन भी त्रिकाण्ड त्रिगुणात्मक जनाना चाहिये इसी से वेदव्यासजी ने अष्टादश पुराण बनाये हैं और अठारह पर्व महाभारत बनाये हैं और अठारहि अध्याय सबके सार सिद्धान्त गीता बनाये हैं और अठारहि उप पुराण भी हैं और अठारहि स्मृति भी हैं इससे यहां पे सब में तीनों वेद के और तीनों काण्ड के और तीनों गुण के बिभाग जानना चाहिये और श्रीमद्वाल्मीकीरामायण जो है सो वेद के सार जो गायत्री है चौबिशाक्षर तेहिपे चौबिश सहस्र श्लोक व्याख्यान हैं तिसमें भी पर ब्रह्म साच्चिदानन्द श्री दशरथराजाकिशोर की अति अपूर्ब लीला वर्णन हैं सो तो न त्रिकाण्डही हैं न त्रिगुणात्मकही हैं वह तो सब ते परे हैं काहे से कि उसमें अखण्ड भगवत की लीला वर्णन हैं दूसरी बात लेशमात्र भी नहीं है और जितने ग्रन्थ हैं सो सब पञ्चायती हैं और पूर्वापर सब मे विरुद्ध है और बाल्मीकीयरामायण में तो कहीं कोई विरुद्धता नहीं है इसका हेतु यह है कि बाल्मीकिजी महाराज सत्यवक्ता ऋषि हैं इससे इनके प्रमाण अट्ठासी सहस्र ऋषियों के ऊपर हैं इस बात को ज्ञाता लोग जानते हैं काहे से कि वाल्मीकीयरामायण कुछ सामान्य वस्तु नहीं है सामान्य तो केवल मूर्ख लोग जानते हैं कि जिनको सद्ग्रन्थ का विचार ठीक नहीं है और न पूर्वाचार्य्यों के बचनहीं का बिचारहै कि किनका प्रमाण कैसा मानाजाताहै और कौन२ ग्रन्थ प्रबल हैं जैसे कि वेदान्त में गीता प्रबल है और धर्मशास्त्र में मनुस्मृति प्रबल है पुराण में भागवत प्रबलहै और शत कोटि रामायण में तथा सब ऋषियों के बचन में आदिकाव्य श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण प्रबलहै और गोस्बामीजी के सब काव्यमें सिद्धांत शिरोमणि बिनयपत्रिका प्रबल है इसी प्रकार के अनेकन भेद हैं कहांतक लिखें इससे कथन में भेद सबके पाये जाते हैं ऐसेही भगवद्भक्ति में भी बहुत भेद हैं देखिये एक तो बिष्णु भगवान की भक्ति है एक सर्वोपरि श्रीसाकेत बिहारी श्रीरामजीकी भक्ति है तिसमें राम जी के भक्त बिष्णुभक्त से बिशेष हैं यथा प्रमाण॥ शिवसंहितायां॥

श्लोक। इन्द्रादिदेवभक्तेभ्यो ब्रह्मभक्तोऽधिकोगुणैः।
शिवभक्ताधिकोविष्णु भक्तः शास्त्रेगीयते॥ १॥
सर्वेऽपिविष्णुभक्तेभ्यो रामभक्तोविशेष्यते॥
रामादन्यपरोध्येयो नास्तीतिजगतांप्रभुः॥ २॥

तस्माद्रामस्ययेभक्ता स्तेनमस्याशुभपार्थिभिः

(अर्थ)—इन्द्रादि देवतों के भक्तसे ब्रह्माके भक्त में अधिक गुण हैं और शिवजीके भक्त से विष्णुभक्त अधिकहै ऐसा शास्त्रमें कहाहै ॥ १ ॥ और सम्पूर्ण विष्णु भक्त से श्रीरामजी के भक्त विशेष हैं तिससे दूसरा परे संसारमें कोई नहीं है इससे रामजी के जे भक्त हैं तिनको नमस्कार व प्रार्थना करने से शुभ मंगल होतीहै काहेसे कि रामजी के समान दूसरा कोई नहीं है इससे रामजी के भक्त श्रेष्ठ हैं ताते रामजी की भक्ति भी विशेष जानना चाहिये यह बचन हनुमान जीने गन्धमादन पर्वत पे श्री अगस्त्यजीसे कहाहै पुनः एक विष्णुसम्बन्धी नवधाभक्ति है जोकि रामजीने पञ्चबटीमें श्रीलक्ष्मणजीसे कहा है यथा ॥ श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं ॥ इत्यादि कहा है यही नवधा भागवतादिक में कहाहै और दूसरा रामसम्बन्धी नवधाभक्ति है जो रामजीनें शबरी से कहा है इससे दो प्रकारके नवधा गोस्वामी जीने रामायण में कहा है और दूसरा आशय नहीं है इसी प्रकार के बहुत भेद हैं दूसरे जैसा जो अधिकारी है उनको वैसेहीं उपदेश कहाहै इससे जहां कहीं तत्त्व पदार्थ मिले सद्गुरुबचनानुकूल सो लै लेना चाहिये और भेदा भेदसे कुछ प्रयोजन न रखना चाहिये इससे श्रीरामनाम कलामणि कोष मञ्जुषा स्वयं गोस्वामी जीका बनाया ग्रन्थ है इससे सब सन्देह छोड़िके अवश्यमेव देखना चाहिये काहेसे कि तत्ववाला ग्रन्थ है और गोस्वामी जीके भी सब ग्रन्थ में निज सिद्धान्त तत्त्व पदार्थ दोई हैं एक तो सर्वोपरि सिद्धान्तशिरोमणि रामनाम दूसरा आत्मज्ञान है यह दो सिद्धान्त हमारे मलीन बुद्धि वाले को देखपरा तिसमें आत्मज्ञान सर्वोपरि है काहे से कि बिना ज्ञान भये श्री रामनाम के यथार्थ स्वरूप जानना और दश नामापराध से रहित होके नाम जपना सर्वथा दुर्लभ है इस से ज्ञान साधन जरूर के करना चाहिये बिना ज्ञान भये संसार से मुक्त होना असंभव है काहेसे कि वेद वाक्य त्रिकाल में भी मिथ्या नहीं होसकती है कि ॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः ॥ अर्थात् बिमुख ज्ञान मुक्ति नहीं काहे से कि बिना ज्ञान भये भक्ति भी होना दुर्लभही है इससे ज्ञान सर्वोपरि है इसी बात को गोस्वामीजीने बिनयपत्रिका जो सिद्धान्त ग्रन्थ है उसमें सर्वथा ज्ञानही प्रतिपादन किया है ताते विनयपत्रिका देखने योग्य है और जिस महात्मा को श्री रामजी की प्राप्ति की चाह है सो बिनय को एकान्त में बिचार करके मनन करिये काहेसे कि बिनय साक्षाद्वेदार्थही है इससे परे ग्रन्थ न भूतोनभविष्यति ॥१॥ और ज्ञान नाम तो केवल जानने का है कुछ ब्रह्म जीव के एकता करने को ज्ञान नहीं कहा है जो कहोकि जानना क्या तो जानना यह है कि प्रथम तो निजस्वरूप को जानना कि मैं कौन हूं कहां से आया हूं पुनः कहां जाऊंगा इति

पुनः तत्पश्चात् चिद्विलाश माया कृत संसार को जानना यानी माया के यथार्थ स्वरूप जानना तिसके पीछे भगवत के स्वरूप जानिके भजन करना इसको ज्ञान कहते हैं और यही समग्र वेद के अर्थ हैं काहे से कि वेद नाम भी जाननेही का है इससे ज्ञान शब्द के और वेद शब्द के अथवा विद्वान् शब्द के एकही अर्थ हैं इससे ज्ञान नाम जाननेहीं का है कुछ ब्रह्म जीव के एकता करने को ज्ञान नहीं कहते हैं ब्रह्म जीव के एकत्व करना तो भूल है और यही मुख्य अज्ञानता के हेतु है काहे से कि कहां सर्वेश्वर सर्वज्ञ प्रभु और कहां अज्ञान के पात्र अल्पज्ञ जीव तिनको एकता करना यह बड़ी हँसी की बात है और जो कदापि कहाकि ब्रह्मजीव की एकता तो वेदही कहिरहा है यथा ॥ तत्त्वमसि ॥ अर्थात् तत् ब्रह्म है जीव त्वं असिनाम है यह महा वाक्य वेद का सार कहा जाता है यथा ॥ वेदसारमहावाक्य तत्त्वमसिसुलोचन ॥ इत्यादि प्रमाण हैं सो क्या मिथ्या है तो मिथ्या नहीं है। है सत्य परञ्च इसके अर्थ यह नहीं हैं जोकहाकि क्या अर्थ है तो सुनो इस श्रुति के यह अर्थ हैं कि वेद जो हैं सो माया बद्ध जीव को उपदेश देरहा है कि हे जीव तत् नाम वह जीव अर्थात् भगवदंश शुद्ध चैतन्य निर्विकार सनातन माया से रहितै भगवद्दास नित्य समीपो त्वं नाम तुम असिनाम है भाव तुम जो अपने को माया बद्ध होके मानि रहा है कि मैं मरता हूँ जीता हूँ सुखी हूँ दुःखी हूँ सो तुम नहीं हौ तुम तो ॥ नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ॥ नचैनंक्लेदयन्त्यायोनशोषयतिमारुतः ॥ इत्यादि गीता में बहुत कहा है सोई वेद कहते हैं कि तत्त्वमसि ॥ पुनः ममदरशन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज स्वरूपा ॥ पुनः॥ जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा॥पुनः॥ईश्वर अंसजीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी॥ इत्यादि स्वरूप तत्त्वमसि ॥ पुनः ॥ राम नाम में जो षट मात्रा हैं तिसमें चारमात्रा में तो चारो भाई स्थित हैं और पंचममात्रा में श्रीजनकनन्दनीजू परिकर सहित बिराजमान हैं और छठवें मात्रा में ब्रह्मा से चींटी पर्य्यन्त सब हंसरूप जीव हैं सोई वेद कहते हैं कि तत्त्वमसि अर्थात् वह हंस स्वरूप तुम हौ इसी प्रकार के बहुत प्रमाण हैं इससे इस श्रुति के मुख्य यथार्थ अर्थ यही हैं काहे से कि जितने वेदपुराण शास्त्र श्रुति स्मृति हैं सो सब जीव के उपदेशार्थ हैं और उपदेश जो है सो अज्ञानही के वास्ते है कुछ ज्ञानी के वास्ते नहीं है यह बात सर्वत्र प्रसिद्धहै और सब विद्वानलोग जानते हैं और यह भी सबविद्वान लोग जानते हैं कि अज्ञानता जीवही में है कुछ ईश्वर में नहीं है काहे से कि ईश्वर तो सत्य ज्ञान स्वरूप है यथा प्रमाण ॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मएकमेवाद्वितीयमनसैवेदमाप्तव्यंनेहनानास्तिकिञ्चनानिष्फलंनिष्क्रियंशान्तंनिर्वद्यंनिरंजनम् ॥ इत्यादि श्रुतिषु ॥ पुनः ॥ विज्ञान

मानन्दंब्रह्म इति श्रुतिः ॥ पुनः॥ब्रह्म कैसा है कि सर्वज्ञ है और सर्व रूप है ॥ यथा ॥ यः सर्वः सर्ववित् ॥ इतिश्रुतिः ॥ पुनः ॥ कैसा है कि ॥ योवेत्तिसर्वंनहितस्यवेत्ता ॥ इत्यादि श्रुति में बहुत प्रमाण लिखा है इससे ब्रह्म सर्वज्ञ हैं जीव अल्पज्ञ हैं ताते इन दोऊ के एकत्व करना मूर्खता है और जो कदापि कहीं एकत्व लिखा होय तहां ये भगवत समता के अर्थ समझना चाहिये । यथा ॥ ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवतीतिश्रुतिः ॥ अ-र्थात् ब्रह्म को जाने तो ब्रह्म ऐसा होय कुछ स्वयं ब्रह्मही नहीं होते हैं कैसे(कीटभृङ्गन्या यण्तरतीति) अर्थात् जैसे भृङ्गने कीट को शब्द सुना के अपना स्वरूप कर लेते हैं तैसेही प्रभुने अपना सार शब्द जो राम नाम है तिसको सुना के जीव को अपना स्वरूप करलेते हैं इस प्रकार से कीट भृंग के न्याय करके जीव संसार से तरते हैं और भगवत समता को प्राप्त होते हैं ऐसेही कबीरजी ने भी कहा है यथा ॥ चला जब लोक को शोक सब त्यागियां हंसको रूप सत गुरु बनाई ॥ भृंग ज्यों कीट को पलटि भृंगे किया आप समरंग दै लै उड़ाई ॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे कीट भृंग न्याय में स्पष्ट समता धर्म्म है पुनः ब्रह्म सूत्र में भी ऐसेही कहा है यथा (भोगमात्र साम्यलिङ्गाच्च) याने भोगमात्र समदेह से पुनः ॥ तथा विद्वान् पुण्य पापे विधूय निरंजनः परमां शान्ति मुपै तीति श्रुतिः ॥ अर्थात् तथाहि विद्वान याने ज्ञानवान पुरुष पुण्य पाप से रहित होके और निरंजन नाम माया से रहित होके परमशान्ति को प्राप्त होते हैं भाव भगवत समता को पावते हैं ॥ पुनः (गीतायां) इदंज्ञानमुपाश्रित्याममसाधर्म्यमागताः ॥ पुनः ॥ अन्तकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम् ॥ यःप्रयातिसमद्भावं यातिनास्त्यत्रनसंशयः ॥ इत्यादि बहुत कहा है इस से भगवत समता के अर्थ जानना चहिये दूसरा आशयनहीं है यथा ॥ उलटा नाम जपत जग जाना ॥ बालमीकि भए ब्रह्मसमाना ॥ इत्यादि गोस्वामीजी ने भी कहा है इस से इसमें सन्देह नहींकरना चाहिये मोक्ष होनेसे भगव द्रूपलाभहोती है यथा ॥ मुक्तस्य विग्रहोलाभः इत्यादि श्रुतिषु॥ पुनः॥ ब्रह्मैवजिघ्रति ब्रह्मैवपश्यति ब्रह्मैवशृणोतीति श्रुतिः ॥ अर्थात् मुक्तहोने से जीवब्रह्म कैसा सूंघते हैं ब्रह्मकैसा देखते हैं ब्रह्मकैसासुनते हैं पुनः ॥ अदत्तहरिहस्तेन हरिपादेनगच्छतीतिस्मृतिः ॥ याने भगवत ने जब अपना हाथ पग देते हैं तब जीव भगवत सान्निधि जाते हैं पुनः ॥ समृत्युन्तरतिससर्वेषुलोकेषुकामचारोभवतीति श्रुतिः॥ अर्थ ॥ मृत्युसो तरते हैं सो सब लोक में कामेच्छा बिचरते हैं ॥ कर्तृत्वंकरणत्वंच सुभावश्चेतनाधृतिः॥ यत्प्रसादादिमेसंतिनसंतियदुपेक्षया॥इतिश्रुतिः॥ अर्थ॥ कार्य करनेकी शक्ति और करानेकी शक्ति और सुंदर स्वभाव चैतन्यता धैर्यता यहसब गुण जिनकी कृपासे हैं जिनके परित्याग से नहीं है भाव भगवतके कृपासे समता धर्म प्राप्तहोतीहै विना कृपानहीं॥

इत्यादि बहुत प्रमाणहै इससे जहांकहीं एकत्व कहाहो तहां पै समताहीके अर्थ जानियेगा काहेसे कि जीव और ईश्वर सदाके सखाहैं और समता धर्म्म विशेष करके सखेत्वहीमेंहै दूसरेमें नहीं इससे सख्यरस सर्वोपरि है इसीसे वेदांतमें सखेत्व विशेष प्रमाण है यथा॥ द्वासुपर्णासयुजा सखायासमानवृक्षंपरिषस्वजाते। तयोरेकःपिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीतीतिश्रुतिः॥ इत्यादिप्रमाणहै तातें जीव ईश्वर एक नहीं है एकत्व करना मूर्खताहै काहेसे कि ईश्वर सब प्रकारसे समर्थ है और जीव सबप्रकारसे असमर्थ है पुनः॥ एकता कैसे होसकती है और जो कदापि कहो कि अज्ञानता से जीव ईश्वर में भेदमानते हैं हैंएकही तो यहभी कहना सर्वथा अयोग्य है काहेसे कि जो ब्रह्मजीव दोऊ एकही है तो जीवको अज्ञानी कहना अथवा जीवमें अज्ञानता होना बड़ी आश्चार्य्य है काहेसे कि ब्रह्मतो सत्य ज्ञान स्वरूपहै इससे जीवको भी सत्यज्ञान स्वरूप होना चाहिये सो नहीं देख परती है तातें आज कलिके जो कलियुगिया वेदान्ती हैं सो सब धूर्त और नास्तिक हैं काहेसे कि जो जीव अज्ञानी हैं तो ब्रह्मभी अज्ञानी है और जो ब्रह्म ज्ञानी है तो जीव सबको ज्ञानी होना चाहिये सो नहीं देख परताहै इससे एकता कहना विरुद्ध है भगवत के समान दूसरा कोई नहीं है यथा॥ सकारणकारणकारणाधिपो नचास्यकश्चिज्जनितानचाधिपः॥ नतस्यकार्य्यंकरणञ्च विद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते तिश्रुतिः॥ इत्यादि प्रमाणहै इससे जीव भगवत के समान नहीं है जीव और ईश्वरमें सदा सर्बकाल भेद है यथा॥ सत्यात्मासत्योजीवःसत्यंभिदःसत्यंभिदः इतिश्रुतिः॥ तातें सबको उचित है कि स्वामी सेवक भाव मानिके भगवत के भजन करना चाहिये बिना भजन किये कल्याण नहीं है और जो ब्रह्मजीव सब एकही होजायगा तो उपदेशही नहीं बनेगा और गुरु शिष्यभी होना बिरुद्धही होजावेगा इससे ईश्वर भिन्न है माया भिन्नहै जीव भिन्न है और तीनौ अनादि कालसे हैं इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये॥

दोहा। सेवकसेव्य भावबिनु भव न तरिय उरगारि।
भजहु रामपदपङ्कज अस सिद्धांत बिचारि॥१॥
जो चेतन कहँ जड़ करै जड़हि करै चैतन्य।
अससमर्थरघुनायकहि भजहिंजीवतेधन्य॥२॥

इति श्रीसतपञ्चार्थ प्रतिपादन समाप्तः॥

श्री जानकीबल्लभोबिजयतेसदा ॥

श्लोक ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपित वामभागं । पाणौमहाशायकचारुचापं नामामिरामं रघुबंशनाथम् ॥ १ ॥

अथ श्री सतपञ्चार्थप्रकाश रामायण गूढ़ार्थ प्रबोधिनी टीकासहित प्रारम्भः ॥

दोहा (मूल)

गिराअरथजलबीचिसम कहियतभिन्न न भिन्न ।
बंदौं सीताराम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥ १ ॥

(अर्थ)--प्रथमतो श्रीगोस्वामीजी नें सबकी पृथक २ बन्दना किये पुनः तिसके पीछे श्रीयुगल सरकार की बन्दना किये यथा ॥ जनक सुता जगजननि जानकी ॥ अतिशय प्रिय करुणा निधान की ॥ ताके युगपद कमल मनावौं ॥ जासु कृपा निर्मलमति पावौं ॥ पुनः ॥ पुनि मनबचन करम रघुनायक ॥ चरण कमल बदौंसब लायक ॥ राजिव नयन धरे धनुशायक ॥ भगत विपति भंजन सुखदायक ॥ इत्यादि भिन्न २ बन्दना करके अब श्रीगोस्वामीजी इस दोहामें श्रीयुगलसरकार को एकत्र करके बन्दना करते हैं इहां पै एकत्र करके बन्दना करनें का यह अभिप्राय है कि आगे ग्रन्थ कार स्वामी सर्वोंपरि श्रीरामनाम की वन्दना करैगें तिसमें ऐसा कहेंगें कि ॥ बदौं नाम राम रघुबर को ॥ इत्यादि कहेंगें इससे ऐसा कोई उपासक लोग न जाने कि गोस्वामी जी श्रीसीतारामजी के उपासक नहीं रहे केवल रामहीं उपासक रहे काहेसे कि जो कदा

पि युगलोपासी होते तो दोऊनाम के बन्दना करते इससे ज्ञात होता है कि रामजी सर्वोपरि हैं और श्रीजानकीजी सामान्य हैं इस भेद बुद्धिको मिटाने के वास्ते श्रीगोस्वामीजी युगल स्वरूप को एकत्व करके बन्दना करते हैं और प्रथममें जो दूनौंमूर्ति की भिन्न २ करके बन्दना किया इससे यह पायागया कि जैसे सबकी बन्दना किये हैं तैसेही श्रीमहारानीजी के भी सामान्य रीतिसे बन्दना किये हैं परंच गोस्वामीजी के सिद्धान्त से श्रीरामजी सर्वोपरि हैं इस भ्रमको मिटाने के वास्ते गोस्वामीजी नाम बन्दनाके प्रथमहीं युगुल सरकारको एकत्र करके बन्दना करते हैं जो कदापि कहो कि प्रथममें क्यों नहीं एकत्र करके बन्दना किये जो अब नाम बन्दना के वास्ते एकत्व करके बन्दना करते हैं इसका हेतु यह है कि नाम गोस्वामीजी के इष्टहै और निज सिद्धान्त है इसीसे बिस्तार पूर्वक बन्दना करैंगे और सर्व प्रकार से एक नामहीं सिद्धान्त देखावेंगे ताते युगलसरकार को प्रथमहीं एकत्व करके बन्दना करते हैं और यह देखाते हैं कि हमको युगल स्वरूप नामकी इष्टता है एक की नहीं इसीसे एकत्व करके बन्दना करते हैं श्रीरामायनमः ॥ श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि सीताराम जीके जो पदहैं याने चरण कमल तिनको बन्दौं नाम बन्दना करते हैं वह श्रीसीतारामजी कैसे हैं कि जिनको खिन्न जो गरीब हैं सो परम नाम अत्यन्त प्रिय हैं इहां पै अन्न बस्त्रादि स हीन गरीब नहीं किन्तु जिन्हों नें नानाप्रकार के भोजन पदार्थ को त्यागिके शाक पत्ती आदिसे निर्बाह करके भजन करते हैं पुनः ॥ जिन्हों नें सुन्दर तोसक तकिया युक्त पलंग को त्याग के पृथ्वी पे सोते हैं और नाना प्रकार के बस्त्रालंकार को छोड़िके जीर्ण कथा को पीनादिको धारण करते हैं ऐसे २ आचरण करिके जो जन खिन्न नाम दुर्बल याने गरीब होरहे हैं सो जिनको परमप्रिय है अथवा खिन्न नाम गरीब भाव जिन्हों ने सब से गरीबी वृत्ति धारण करना बहुत कठिन है और जिनको गरीबी वृत्ति आगया है वह जीव धन्य है अब यह देखाते हैं कि जिनको गरीबी वृत्ति धारण करने वाले परम प्रिय हैं वह श्रीसीतारामजी दोऊ कैसे हैं कि कहियत नाम कहनेही मात्र भिन्न नाम न्यारे हैं परंच भिन्न नहीं हैं कैसे भिन्न नहीं हैं सो देखाते हैं कि जैसे गिरा जो बाणी है तिससे अर्थ कहियत मात्र भिन्न हैं परंतु भिन्न नहीं हैं तैसेही श्रीसीतारामजी युगल स्वरूप कहियत मात्र में भिन्न हैं परंच भिन्न नहीं हैं पुनः ॥ कैसे भिन्न नहीं हैं कि जैसे जलसे बीचि नाम तरंग कहियत मात्र भिन्न हैं परंतु भिन्न नहीं है तैसेही श्रीसीताराजी युगल स्वरूप नाम रूप करके तथा वस्त्रभूषणादि करके कहनेहीं मात्र भिन्न हैं कि श्रीरामजी पुरुष हैं और श्यामस्वरूप हैं कीट मुकुटादि को धारण किये हैं और जानकीजी महारानी स्त्रीस्वरूप हैं गौरांगी हैं चन्द्रिकादिको धारण किये हैं इत्यादि रूप करके कहनेहीं

मात्र न्यारा है परंच तत्त्व करके दूनौ स्वरूप एकहैं (शंका) इहां पै ग्रन्थकार स्वामी ने केवल युगलस्वरूप को तत्त्व करके एकता देखाने के वास्ते दो दृष्टान्त दियाहै तो एकता तो एकही दृष्टान्त से होजाती है तो पुनः ॥ दूसरा दृष्टान्त देनेका क्या प्रयोजन रहा (उत्तर) यह आपका कहना सहीहै एकतातो एकही दृष्टान्तसे होजाती है परंच कारण कार्य्य के बिचार करनेसे बड़ाबिरुद्ध होजाता इससे दो दृष्टान्त दिया है देखिये एक दृष्टान्तसे तो यह बिरुद्ध होता है कि गिराहै कारण और अर्थ है कार्य्य पुनः ॥ गिरा है स्त्रीलिंग और अर्थ है पुलिंग इससे यह विरुद्ध भया कि श्रीजानकीजी गिरा स्थाने कारणरूप हैं और अर्थ स्थाने श्रीरामजी कार्य्यरूप हैं भाव जानकीजी से रामजीभये हैं यह सिद्धभया है इससे यह पायागया कि प्रधान शक्तिही हैं और दूसरे दृष्टान्त से यह बिरुद्ध भया कि जलहै कारण और बीचि है कार्य्य पुनः ॥ जलहै पुलिंग और बीचि है स्त्रीलिंग इससे यह बिरुद्ध भया कि श्रीरामजी जलस्थाने कारणरूप हैं और बीचिस्थाने श्रीजानकीजी कार्य्य रूपाहैं अर्थात् रामजीसे जानकीजी भईहैं यह सिद्धभया इससे यह पायागया कि प्रधान ब्रह्महीं है देखिये एक दृष्टान्तसे तो शक्ति सिद्धभया दूसरे दृष्टान्त से ब्रह्म सिद्धभया यद्यपि करके यह बात सर्वथा बिरुद्ध है और हँसीके योग्य है काहेसे कि भगवत के स्वरूप में कारण कार्य्य होना असम्भव है परंच लोकमें कहने के वास्ते अवश्यमेव होजाता कि जानकीजीसे रामजी हैं अथवा रामजी से जानकीजी हैं इसमहा बिरुद्ध को मिटाने के अर्थ गोस्वामीजीने दो दृष्टान्त दिया है ताते इहां पै मुख्याभिप्राय यह समझना चाहिये कि नतो जानकीजीसे रामजी हैं और न रामजीसे जानकीजी हैं जैसे बाणी और अर्थ दोऊ नामरूप करके आनादि से भिन्नहैं परंतु तत्त्व करके एकही हैं पुनः जैसे जल और बीचि नामरूप करके अनादि कालसे भिन्न है तत्त्व करके एकही हैं तैसेही श्रीसीतारामजी युगलस्वरूप अनादि कालसे नाम रूपादि करके भिन्न हैं परंच तत्त्व करके दोऊ एकहैं इहांपै कारण कार्य्य बिचार करने का कुछ प्रयोजन नहीं हैं केवल तत्त्व करके एकत्त्व समझना चाहिये काहेसे कि तत्त्व करके दोऊ मूर्ति एक हैं यथा ॥ तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा ॥ जानत प्रिया एक मन मोरा ॥ इत्यादि कहा है पुनः ॥ सएवात्मानं द्वैधापातयत्ततःपतिश्चपत्नीचाभवतामितिवृहदारण्यकेश्रुतिः ॥ अर्थात् सो परमात्मा ने अपनी आत्मा के रक्षार्थ अपनेही आत्माको दो प्रकार करते भये तिसीसे पति और पत्नी याने स्त्री पुरुष दो रूप भये ॥ देखिये जैसा इस श्रुतिमें लिखा है तैसेही युगल स्वरूप श्रीसीतारामजी हैं पुनः ॥ रामःसीताजानकी रामचन्द्रो नित्याखण्डंचपश्यन्तिधीराः (इत्यथर्वणे) अर्थ ॥ श्रीरामजी सीता हैं व श्रीजानकीजी रामजी हैं और दोऊ नित्यहैं, अखण्डहैं ऐसा धीरमान याने ज्ञानी लोग देखते

है॥ इसी प्रकारके बहुत प्रमाण हैं इससे दोऊ स्वरूप आत्मा करके एक हैं रूप करके दो हैं इसमें सन्देह न करना चाहिये ॥ पुनः ॥ पाद्मे ॥ अर्द्धमात्रास्थितौश्रीमत्सीतारामौ परात्परौ ॥ इत्यादि कहा है इससे तत्त्व करके एक हैं स्वरूपादि करके कहियत भिन्न हैं इहां पै गोस्वामीजी ने केवल नाम बन्दना की विरुद्धता मिटाने के वास्ते युगल स्वरूप को एकता किये हैं कि रामनामहीं में श्रीसीतानाम है और सीतानामहीं में श्रीरामनाम है जो कदापि यह कहो कि दोनों नाम एकही हैं तो गोस्वामीजी ने सीतानामहीं की बन्दना क्योंनहीं किये उसीमें श्रीरामनामकी बन्दना होजाती तो इसका हेतु यहहै कि यद्यपि करके दोऊ स्वरूप एकहैं परंच सही कर प्रधान रामहींजी कहेजायँगे काहे से कि श्रीरामजी पुरुष हैं इससे रामजी को छोड़ि के महारानीजी को प्रधान कहना अशोभित है तातें ग्रन्थकार स्वामीने श्रीरामनामको प्रधान करिके बन्दना किये और उसीके अन्तर्गत श्रीसीतानामको भी बन्दना किया सीता नामके अन्तर्गत रामनाम को नहीं कहा काहेसे कि पुरुषको प्रधान कहना योग्य है स्त्री को प्रधान कहना योग्य नहींहै इसीसे जहाँ कहीं कहाहै तहांपै श्रीरामहीजी को प्रधान कहाहै यथा महारानीजी के बचन ॥ प्रभु करुणा मय परम बिवेकी ॥ तनु तजि रहति छाह किमि छेकी ॥ प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई ॥ कहँ चान्द्रिका चन्दु तजि जाई॥ इत्यादि प्रधानत्त्व कहा है इससे रामनाम को प्रधान करके बन्दना किया इसी रामनाम के अन्तर्गत श्रीसीतानाम को भी समझना चाहिये अब इहांसे नव दोहा पर्य्यन्त नाम बन्दना करैंगें तिसमें श्रीजानकीजीके नाम कहीं नहीं कहेंगे इसका अभिप्राय केवल इतनाही है कि एक बार इस दोहा में एकत्त्व कहदिये अब कहने का कुछ प्रयोजन नहींहै किंतु इतनी बात अवश्यमेव जानना चाहिये कि जौन२ व्यवस्था रामनामके वर्णन करैंगें तौन २ व्यवस्था श्रीसीतानाम के अथवा रूपके जानना चाहिये सो थोड़ा बहुत निजमत्यानुसार बीच २ में कहते जायँगे ॥ १ ॥ (मूल)—

बंदौं नाम राम रघुबरको। हेतु कृशानु भानु हिमकरको ॥ १ ॥

(अर्थ)—अभीतक तो गोस्वामीजी ने रूप की बन्दना किये अब गोस्वामीजी निज सिद्धान्त जो सर्वोपरि श्रीरामनाम हैं तिनकी बन्दना करते हैं और रामनाम को तीन अक्षर करके देखाते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि बन्दौं नाम कौन नाम तो राम रघुबर को जो नाम है तिनको बन्दौं नाम बन्दना करता हूं इति ॥ यहां पै राम रघुबरकहने का अभिप्राय यह है कि राम तीन हैं एक राम तो भृगुवर हैं दूसरा

यदुबर रामहैं अर्थात् जिसे कि बलराम कहतेहैं जोकदापि कहो कि यदुबर राम कैसे हैं तो सुनो जो यदुकुलमें अवतार लेवें उनको यदुबर राम कहना चाहिये और गोस्वामीजी ने अपने ग्रन्थमें यदुकुलही प्रधान कहाहै यथा ॥ जब यदुबंश कृष्ण अवतारा ॥ होइहहिं हरण महा महिभारा ॥ इत्यादि कहाहै इहसे यदुबर राम कहना सिद्ध है और तीसरा राम रघुबर रामहैं सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि नतो हम भृगुवर परशुरामके नाम बन्दौं नहम यदुबर रामके नाम वन्दौं मैं तो राम रघुबर का जो नामहै तेहिके बन्दना करताहौं जो कहो कि राम रघुबर के तो बहुत नामहैं तिनमें से कौन नाम को आप बन्दना करतेहैं तो सुनो नाम तो अनन्त हैं सही कर परंच जो नाम मुख्यहै और नाम करण में जो नाम गुरू बशिष्ठजी ने कहाहै सोई नाम प्रधानहै ताते हम उसी नाम को बन्दना करते हैं वह कौन नामहै तो सुनो यथा ॥ बशिष्ठोबाच ॥ इन्हके नाम अनेक अनूपा ॥ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥ जो आनन्द सिंधु सुखरासी ॥ सी करतंत्रैलोक निवासी ॥ सो सुख धाम राम अस नामा ॥ इत्यादि कहाहै इससे राम रघुब्बर के जो राम ऐसा नामहै मुख्य तेहिको बन्दना करताहौं देखिये जो कदापि राम नाम मुख्य नाम न होता तो इन्हके नाम अनेकहैं अनूपहैं ऐसा कहिके पुनः॥ राम अस नाम क्यों रखते इससे ज्ञात होता है कि राम नाम प्रभुके मुख्य नाम है इसमें सन्देह करना मूर्खताहै पुनः॥ ऐसाही बचन नारद जी ने भी कहाहै यथा ॥ यद्यपि प्रभु के नाम अनेका ॥ श्रुति कह अधिक एक ते एका ॥ राम सकल नामन्ह ते अधिका ॥ इत्यादि कहाहै ताते रामरघुबर के राम नाम सब नामन से अधिक है पुनः ॥ इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामोनाम जनैःश्रुतः ॥ इत्यादि श्री माद्वाल्मीकीय में भी राम नामहीं बिख्यात कहा है इससे राम रघुबर को जो मुख्य राम नामहै तिनकी बन्दना ग्रन्थकार स्वामी करतेहैं दूसरे नाम का नहीं जो कहो कि और सब नामको छोडि के राम नामहीं की क्यों बन्दना किये इसका हेतु यह है कि रामनाम सब नामन में मुख्यहै इससे मुख्य प्रधान जानके बन्दना किये काहेसे कि मुख्य की बन्दना करनेसे सब की बन्दना होगई सबका पूजन होगया जैसे कि बृक्षके मूलमें जल सिञ्चन करनेसे शाखा पत्रादि सब हरित होजाते हैं और सबको बृद्धि होतीहै पुनः जैसे मुख के द्वारा भोजनादि करनेसे सर्वांग की पोषण पालनादि होतीहै यथा ॥ मुखिया मुखसों चाहिये खान पान कहुँ एक ॥ पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ॥ इत्यादि कहाहै तैसेही इहां पै राम नाम की वन्दना करनेसे सब की बन्दना होगई अथवा राम नाम सब नाम की आत्माहै सो पूर्वही में कहि आये हैं इससे आत्माकी बन्दना करनेसे सर्वांग होगया ताते सब नामको छोड़िके राम नामकी बन्दना किये पुनः राम रघुबर कहनको दूसरा अभिप्राय यहहै कि गोस्वामीजीश्रीमद्वाल्मीकिजी के अवतारहैं यह बात बशिष्ठ संहितामें लिखीहै यथा प्रमाण (बशिष्ठसंहितायां श्रीवाशिष्ठोवाच अरुन्धतींप्रति)

श्लोक। बाल्मीकिस्तुलसीदासःकलौदेविभविष्यति।
रामचन्द्रकथासाध्वीं भाषारूपांकरिष्यति॥ १॥

(अर्थ)-- बशिष्ठजी कहतेहैं कि हेदेवि! बाल्मीकिजी कलियुगमें तुलसीदास होयँगे और हे साध्वी! श्रीरामचन्द्रजी की जो कथाहैं सो भाषारूप में करैंगे इत्यादि कहाहै इससे जैसे बाल्मीकिजी नें अपने रामायण में सर्वत्र रघुबर दशरथात्मजही करिके रामजी को वर्णन कियाहै यथा प्रमाण सर्वोपरि श्रीरामजी के वचन ब्रह्माजीसे युद्धकाण्डमें ॥ आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ॥ अर्थात् जिस समय में श्री जानकीजी को रामजी ने अग्निमें प्रवेश होनेको कहाहै उस समयमें सम्पूर्ण देवतों के सहित ब्रह्माजी आके प्राप्त भयेहैं और प्रभुकी आश्चर्य लीला देखिके ऐश्वर्य्य दर्शायके स्तुतिकिया और कहा कि आप यह प्राकृत मनुष्यके समान जानकीजी को क्यों उपेक्षा करते हैं यह वचन रामजी ने सुनके विचारा कि देखो हमने जिस ऐश्वर्य्यको आज पर्यन्त छिपाया नर देह धरिके उसी ऐश्वर्य्य को वेद वक्ता ब्रह्माजी प्रगट करते हैं तब रामजी बोले कि हे ब्रह्मा! हमतो अपने आत्माको मनुष्य करके मानतेहैं जो कहो कि मनुष्यमें कौन तो राम याने रामनाम करके जो मनुष्यहैं पुनः॥ जो कदापि कहो कि राम मे भी तो आपके तीन स्वरूप हैं एक परशुराम दूसरा आप तीसरा वलराम इनमें से कौन तिसपै प्रभु बोले कि दशरथात्मजम् अर्थात् दशरथनन्दन करके जो रामहैं सोहम अपनेको मानतेहैं अब हम जोहैं जहांसे जिसवास्ते आयेहैं सो आप कहो इस प्रकारसे ब्रह्मासे रामजीने कहा देखिये यह बचन प्रभुके आदि काव्य बाल्मीकि रामायण के बीचमें अपूर्व है और इसका अभिप्राय भी अगाधहै इसी प्रकार इहां भी गोस्वमीजी ने कहाहै इसीसे रामरघुबर कहाहै काहेसे कि गोस्वामीजी बाल्मीकिजी के अवतार हैं ताते माधुर्य्यता पक्ष नहीं छोड सकतेहैं इसीसे गोस्वामीजी ने केवल रामनामकी बन्दाना नहीं किया काहेसे कि रामनाम पूर्ण ऐश्वर्य्यहै और सबके आदि कारणहैं सो पूर्वहीमें लिखि आयेहैं और कबिरादि के मत से राम नामहीं सर्वोपरिहै तिसमें भी कोई दूसरेही रामनामहैं दशरथात्मज के रामनाम नहीं उनके मतसे तो दशरथात्मजभी उस राम नाम को जपतेहैं सो प्रथमहीं कबीरजी के बचनमें लिखि आयेहैं क्योंकि रामनाम सबके सारहै नामहीं निर्गुणहै सगुणहै नामहीं निराकारहै नामहीं ज्योतिस्वरूप है नामहीं वेद पुराणहै शास्त्र यंत्र मंत्र सबके कारणहै नामहीं से नारायण बासुदेवादिक भयेहैं नामहींसे बिराटादि स्वरूप भये हैं नामहीं से ब्रह्माबिष्णु शिवादिक भये हैं नामहींसे देबि दुर्गादिक शक्तियां भईहैं नामहीं से सर्वावतार होतेहैं नामहीं से राम लक्ष्मणादिक भ्राताभये हैं नामही से लक्ष्मी आदिक भईहैं नामहीं से तीनौं लोक भये हैं

नामहींसे कोटि २ ब्रह्माण्ड भयेहैं नामहीं से उत्पत्ति पालन संहारन होताहै नामहींसे चन्द्र सूर्य्यादिक भयेहैं नामहीं अव्यक्तहैं अनिर्बचनीयहै नामहीं दृश्यादृश्य सबके कारणहैं नामहीं को नारायण बिष्णु शिव कृष्णादिक सर्वावतार जपतेहैं कहांतक कहें कि जो कुछ त्रिकालमें है सो एक राम नामहींहै दूसरा सब कालग्रसितहै सो गोस्वामीजी ने आपही नवो दोहा में बिस्तार पूर्बककहेंगे और इसी प्रकार के सब महात्माओं के भी सिद्धान्तहैं सोई सिद्धान्त गोस्वामीजी के भी हैं परंच यह रघुवरहीं रामको वह नामहै दूसरेको नहीं काहेसे कि बाल्मीकिजी के अवतारहैं ताते अवतार पक्ष नहीं छोड़ते हैं और गोस्वामीजी के मत से दूसरा राम भी नहीं है जो है सो रघुबरही रामहै सो यह बात पार्वतीजी के प्रश्नही में प्रसिद्धहै यथा ॥ पार्वतीजी के वचन ॥ राम सो अवध नृपति सुत सोई ॥ की अज अ-गुण अलख गति कोई ॥ इत्यादि कहाहै सो यह वचन शिवजी को नहीं अच्छा लगा यथा॥ एक बात नहिं मोहिं सोहानी॥ यदपि मोहबश कहेहु भवानी॥तुम्हजो कहा रामकोउ आना॥ इत्यादि कहाहै इससे शिवजी के सिद्धान्तसे अथवा गोस्वामीजी के सिद्धान्तसे दूसरा राम नहीं है जो हैं सो यही दशरथात्मजही हैं देखिये यद्यपि करके गोस्वामीजी ऐश्वर्य्य स्वरूप को वर्णन करते हैं परंच अन्तमें रघुबरही दशरथात्मज कह देतेहैं यथा ॥ राम सच्चिदानंद दिनेशा ॥ नहिं तहँ मोह निशा लव लेशा ॥ सहज प्रकाश रूप भगवाना ॥ नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥ हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना ॥ जीव धर्म अहमिति अभि-माना ॥ राम ब्रह्म व्यापक जगजाना ॥ परमानंद परेस पुराना ॥ दोहा ॥ पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ ॥ रघुकुल मणि ममस्वामि सोइ कहि शिव नायउमाथ॥ इति रघुकुल मणि ममस्वामि सोइ ॥ पुनः ॥ आदिअंत कोउ जासु न पावा ॥ मति अनुमानि निगम अस गावा ॥ बिनु पदचलै सुनै बिनु काना ॥ कर बिनु करम करै विधि नाना ॥ आनन रहित सकल रस भोगी ॥ बिनु बाणी वकता बड़ योगी ॥ तन बिनु परस नयन बिनु देषा ॥ ग्रहै घ्रान बिनु बास असेषा ॥ अस सब भांति अलौकिक करणी ॥ महिमा जासु जाइ नहिं बरणी ॥ दोहा ॥ जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहिधरहिं मुनि ध्यान ॥ सोइ दशरथ सुत भक्तहित कौशलपति भगवान ॥ इति ॥ सोई दशरथ सुत कोशलपति भगवान इसी प्रकार से गोस्वामीजी ने सर्वत्र सब ग्रन्थमें कहा है ताते गोस्वामीजी के सिद्धान्त से रघुबरही राम सर्वोपरि हैं यह सिद्धांत श्रीवालमीकिजी महर्षि के हैं इसीसे गोस्वामीजी केवल राम नाम के बन्दना नहीं किये रामरघुबर कहे और अन्याभिप्राय नहीं है यही बात गोस्वामीजीने पूर्वमें भी कहि आये हैं कि ॥ एहिमहुँ रघुपति नाम उदारा ॥ सो यही रघुपति नाम उदार है दूसरा नहीं अब यहांपै उदारता गुण और अतिपावन पुराण श्रुति के सार किस प्रकार से हैं सो विस्तार पूर्वक नव

दोहा पर्य्यन्त में वर्णन करके देखाते हैं ॥ श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि पुनः वह राम ऐसा नाम कैसा है कि कृशानु जो अग्नि है और भानु जो सूर्य्य हैं और हिमकर जो चन्द्रमा है तेहिके हेतु नाम कारण हैं अर्थात् रकार कृशानु बीज है और मध्याकार जो है सो भानु बीज है और मकार जो है सो हिमकर के बीज है देखिये इहांपै गोस्वामीजी ने कैसा क्रमसे कहा है जैसा रामनाम में तीन अक्षर हैं तैसेही कार्य्यमें भी देखाये हैं इहां पे ग्रन्थकार स्वामी रामनाम को प्रथम केवल सृष्टि के हेतु करके वर्णन करतेहैं काहेसे कि प्रथम संसार के सृष्टिही मुख्य है सोई गोस्वामीजी देखाते हैं कि यह रामनाम तीनौ अक्षर युक्त कैसाहै कि कृशानु भानु हिम करके कारण है यहां पै कारण के अर्थ नतो बीज बृक्ष न्याय समझना चाहिये न पारस लोह न्याय समझना चाहिये यहांपै तौ स्वतः इच्छानुकूल जानना चाहिये काहेसे कि समर्थ हैं जो कहो कि इन्हीं तीनौके कारण कहने से सृष्टि के हेतु कैसे भया तो इसका हेतु यह है कि यह तीनौ संसार में प्रसिद्ध सबके हितकारी है और समर्थ हैं पुनः सृष्टि कर्त्ता हैं काहेसे कि लोकमें और वेदमें मुख्य यज्ञहै और यज्ञमें प्रधान अग्नि है और अग्निमें हवन करने से सूर्य के पास पहुँचता है सूर्य्यने अपनी किरणसे जल शोषण करके पृथ्वी पै बर्षते हैं और जलसे अन्न होते हैं अन्नसे प्रजा लोग होते हैं यथा प्रमाण ॥

श्लोक। अग्नौप्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यामुपतिष्ठति॥
आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः ॥ १ ॥

इत्यादि वेदमें बहुत प्रमाण हैं इससे इनके हेतु कहा पुनः चन्द्रमा भी सर्व औषधि के तथा अन्नके अमृत बर्षाके पुष्ट करते हैं इससे यह भी संसारके हितकारी हैं यथा ॥ बंदौंकौशिल्यादिसिप्राची ॥ कीरति जासु सकल जग माची ॥ प्रगटेउ जहँ रघुपति शशि चारू॥ बिश्व सुखद खल कमल तुषारू ॥ इति विश्व सुखद पुनः॥ जग हितहेतु बिमल बिधु पूषन ॥ इति जगहित हेतु ॥ पुनः॥ राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ॥ इति सब काहु सुखद॥ पुनः॥ उएउ अरुण अवलोकहु ताता ॥ पंकज कोक लोक सुखदाता॥ इति लोक सुखदाता ॥ पुनः ॥ संत हृदय संतत हितकारी ॥ बिश्व सुखद जिमि इन्दु तमारी॥ इति बिश्वसुखद ॥ पुनः ॥ समरथ को नहिं दोष गुसाईं ॥ रबि पावक सुरसरि की नाईं॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे यह तीनौं सब प्रकार ते सृष्टि के हित कारी हैं तेहिते इन तीनहूं के हेतु राम नाम को कहा इससे यह देखातेहैं कि जब कार्य्य में यह गुण है तो कारण में न जानेकैसा गुण होगा (शङ्का) इहांपै ग्रन्थकार स्वामीने प्रथमही में हेतु कृशानु भानु हिम करके क्यों कहा प्रथम तो

त्रिधि हरि हर मय कहना रहा काहेसे कि यह त्रिदेव सब के आदि हैं और संसार के भी आदि कर्त्ता हैं पीछे इन सब को कहना रहा काहेसे कि ए सब भी इन्हीं के सृष्टि किये हुये हैं इसका क्या अभिप्राय है ॥ उत्तर ॥ इसका अभिप्राय यह है कि ब्रह्मा विष्णु शिव तीनौं मुख्यहैं सहिकर परंच लोकमें प्रसिद्ध नहीं हैं और सब को देख भी नहीं परते हैं केवल ज्ञाता लोग जानते हैं दूसरे इन सबकी उत्पत्ति पालन संहार भी सब को नहीं देखपरती हैं इससे प्रथम नहीं कहा और अग्नि सूर्य चन्द्रमा सबको देख परते हैं और इनके प्रताप तेज तथा पोषण पालनादि भी सबको देख परते हैं इससे प्रथम कहा अथवा रामनामके प्रताप तेज देखाने के वास्ते कहा कि जिसमें सब कोई यह जाने कि जब कार्य में यह शक्तिहै तो रामनाम में न जाने कैसी शक्ति होगी ताते रामनाम सर्वोपरि है और भजबेयोग्य है यह विश्वास होने के वास्ते प्रथम कहा और कृशानु भानु के अन्तमें जो हिमकर कहा इससे यह दिखाये कि अग्नि और सूर्य्य में बड़ी उष्णता होती है तिनकी शान्तिके वास्ते हिमकर याने शीतलता पद दिए भाव रकार अग्नि के समान है और अकार सूर्य्य के समान ऊष्ण है ताते केवल रकार अकार नहीं जपना चाहिए मकार भी जपना चाहिए भाव पूर्णनाम जपना चाहिए तब शान्ति होती है नहीं तो नहीं वहां ए क्रमसे ग्रन्थकार स्वामी वर्णन किए हैं जैसे कि प्रथम रकार है तब अकार है तत्पश्चात् मकार है तैसेही प्रथम अग्नि भयाहै तब सूर्य्य भयाहै तत्पश्चात् चन्द्रमा भया है इसीसे क्रमसे कहाहै दूसरा एक यह भी दिखाए कि राम रघुवरका जो राम ऐसा नामहै सो तीन अक्षर करके युक्तहै और परशुरामजी का पञ्चाक्षर का नामहै ताते यथार्थ नाम नहीं है यथा ॥ राममात्र लघु नाम हमारा । परशु सहित वड़ नाम तुम्हारा ॥ इत्यादि कहाहै पुनः तैसाही बलरामजी का भी नाम चार अक्षर का है ताते यथार्थ रामनाम यह भी नहीं है इससे जहां कहीं वेद पुराण शास्त्रमें श्रीराम नामका माहात्म्य वर्णन होय तहां पै रघुवरही राम का नाम माहात्म्य जानना चाहिए परशुराम बलराम का नहीं इसीसे यहां पर रघुवर कहा दूसरे तीन अक्षर भी करके दिखाया और भी अनेकाभिप्राय हैं कहांतक लिखें ऐसेही श्री सीतानाम को भी तीनों के हेतु जानना चाहिए ॥ १ ॥

बिधि हरि हर मय वेद प्रानसो ।
अगुण अनूपम गुण निधानसो ॥

(अर्थ)—पुनः वह रामनाम रघुबरको सो रामनाम तीनों अक्षर युक्त कैसा है कि बिधि जो ब्रह्मा है और हरि जो विष्णु भगवान हैं और हर जो शिवजी हैं तिन मय है

भाव तीनों अक्षर त्रिदेवमय हैं मयनाम परिपूर्ण मानों तीनों अक्षरही स्वयं तीन स्वरूप धारण किये हैं इससे मय कहा क्योंकि यह त्रिदेव स्वयम्भू हैं और तीनों गुणोंको धारण करके संसार की उत्पत्ति पालन संहार करते हैं दूसरे भगवत स्वरूपही हैं और संसार के मुख्य कर्त्ता हैं इससे तिनमय कहा और कृशानु भानु हिमकर स्वयम्भू नहीं हैं इस से हेतुमात्र कहा परिपूर्णता नहीं कहा ताते इन सब में अंशमात्र जानना चाहिए पुन; सो राम रघुबरके नामके तीनों अक्षर कैसे हैं कि तीनों वेद के प्राण हैं वेद तीनही हैं यथा गीतायां ॥ वेद्यंपवित्रमोङ्कार ऋक्सामयजुरेवच ॥ इत्यादि प्रमाण हैं इससे वेदत्रय नामही है यहां पै वेदके प्राण कहनेका यह भाव है कि वेद सब शास्त्र, पुराण, स्मृति, संहिता, तंत्र, रहस्य, नाटक, व्याकरण, ज्योतिष याने जितने ग्रन्थ हैं सबके मूल हैं और वेद के प्राण रामनाम है भाव रामनामहीं से बेद सजीव हैं नाम बिना वेद शव तुल्य हैं इससे ग्रन्थकारस्वामी यह देखाये कि वेद में भी एक रामनामहीं सार है ताते यहां पे पूर्वोक्त बचन सिद्ध होगया कि ॥ एहिमहुँ रघुपति नाम उदारा ॥ अति पावन पुराण श्रुतिसारा ॥ इत्यादि कहा है इससे रामनाम सर्वोपरि है यहां पर्य्यन्त गोस्वामीजीने रामनाम को मुख्य सृष्टि के हेतु करके बर्णन किया और गुणमयी भी रामनाम को कहा काहे से कि अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा यह तीनो भी गुणमयी हैं और बिधि हरि हर भी त्रिगुणात्मकही है अर्थात् ब्रह्मा रजोगुणमय हैं और बिष्णु भगवान सत्व गुणमय हैं और शिवजी तमोगुणमय हैं इति। पुनः ॥ वेद भी त्रिगुणात्मकही हैं यथा ॥ त्रैगुण्य विषया वेदानिस्त्रैगुण्यभवाऽर्जुन ॥ इतिगीतायां ॥ अर्थात् ऋग्वेद रजोगुणी है इसके देवता रजोगुणी ब्रह्मा जी हैं इस वेद के अत्रि ऋषि गोत्र हैं इस वेद में प्रधान रजोगुण वर्णन है इसमें मुख्य ब्रह्मा को कहा है और भी इसके सिवाय जितने रजोगुणी देवता हैं अग्नि सूर्य्य इन्द्रादिक तिनकी बड़ाई है इस ऋग्वेदके पीतवर्ण हैं इस वेद के बिभाग रजोगुणी ६ पुराण हैं यथा ॥ ब्रह्माण्डपुराण १ ब्रह्मवैवर्त्तपुराण २ मार्कण्डेयपुराण ३ भविष्यपुराण ४ बामनपुराण ५ ब्रह्मपुराण ६ यह ६ पुराण रजोगुणी हैं इसमें रजोगुणी देवतन की बड़ाई किया है इस ऋग्वेद के और पुराण के अधिकारी क्षत्री हैं इसके अधिकारी स्वर्ग लोक जाते हैं पीछे पुण्यक्षीण होने से मृत्यु लोकमें आके जन्ममरण को धारण करते हैं इति। पुनः ॥ सामवेद सत्वगुणी है इस वेद के देवता सतोगुणी विष्णु भगवान हैं इस वेद में मुख्य सतोगुण कथन है इसमें प्रधान भगवत् को कहा है इसी से भगवत ने गीता में कहा है कि ॥ वेदानां सामवेदोस्मि ॥ अर्थात् वेदन में सामवेद महीं हूं। इति पुनः ॥ इस वेद के गोत्र कश्यपजी हैं इसके शुक्लवर्ण हैं शुद्ध सात्विक स्वरूप हैं इस वेद के बिभाग सात्विक ६ पुराण हैं यथा ॥

विष्णुपुराण १ नारदीपुराण २ श्रीमद्भागवत ३ यहां पे बहुतेरे लोग देवीभागवत कहते हैं सो नहीं है देवीभागवत् तो कोई शाक्त का कल्पित है ताते अप्रमाण है और श्रीमद्भागवत् स्वयं वेदव्यासकृत है ताते अष्टादशपुराणमें यही है इति। पुनः ॥ गरुड़-पुराण ४ पद्मपुराण के उत्तरखण्ड ५ वाराहपुराण यह ६ पुराण सात्विक हैं इस सात्विकपुराण के और सामवेद के अधिकारी ब्राह्मण हैं इसके अधिकारी भगवत् को प्राप्त होते हैं काहे से कि इस सामवेद के जाननेवाले केवल भगवत् को गाते हैं यथा॥ गायन्तियंसामगाः ॥ इत्यादि कहा है इससे ब्राह्मण को अवश्यमेव वैष्णव होके भगवत् की पूजन स्मरण करना चाहिये दूसरे देव का नहीं इसीसे पद्मपुराणमें लिखा है कि ॥ ब्रह्मजानातीतिब्राह्मणः ॥ और सात्विक राजस तामस के भी निर्णय पद्मपुराणहीं में लिखा है सो देखलीजियेगा ताते ब्राह्मण को मुख्य भगवत् का भजन स्मरण पूजन पाठ नैवेद्यादि करना चाहिये काहे से कि भगवत् ब्राह्मण के मुख्य देवता हैं यथा प्रमाण (वाशिष्ठस्मृतौ) नारायणः परब्रह्म ब्राह्मणानांहि दैवतम् ॥ अर्थात् नारायण जो परब्रह्म हैं सो ब्राह्मणन के निश्चय करके देवता हैं ॥ पुनः पाद्मे । शुद्धसत्वमयोविष्णुः कल्याणगुणसागरः ॥ नारायणः परब्रह्मविप्राणां दैवतंहरिः ॥ अर्थ । शुद्धसत्वगुणमय जो विष्णु भगवान हैं सर्व कल्याणगुण के समुद्र सो नारायण परब्रह्म सम्पूर्ण दुःख के हरने वाले सब ब्राह्मणों के देवता हैं ॥ इसी प्रकार के सद्ग्रंथ में बहुत प्रमाण हैं कहां तक लिखें इससे ब्राह्मण को भगवत्भक्ति जरूर के करना चाहिये यह सब ऋषियों मुनियों के परमसिद्धान्त हैं इसमें संदेह न करना चाहिये ॥ पुनः ॥ यजुर्वेद तमोगुणी है इस वेद में तमोगुण वर्णन है इस वेद के देवता तमोगुणी शिवजी हैं इसके गोत्र भरद्वाज जी हैं इस वेद के रक्तवर्ण है इस वेद में शिवजी को प्रधान कहा है इस वेद के विभाग तामसी छः पुराण हैं यथा॥ मत्स्यपुराण १ कूर्मपुराण २ लिङ्गपुराण ३ शिवपुराण ४ स्कन्दपुराण ५ अग्निपुराण६ यह ६ पुराण घोर तमोगुणी हैं इस तमो-गुणीपुराण के और यजुर्वेद के अधिकारी वैश्य हैं इसके अधिकारी अधोगच्छन्ति यथा ॥ ऊर्ध्वंगच्छान्ति सत्वस्था मध्येतिष्ठन्तिराजसाः । जघन्यगुणवृत्तिस्था अधोगच्छ-न्ति तामसाः १ ॥ इति गीतायां ॥ पुनः पद्मपुराणे शिवोवाच ॥ पार्वतिम्प्रति ॥ सात्विकामोक्षदाः प्रोक्ताराजसाः स्वर्गदाःशुभाः॥ तथैवतामसादेविनिरयप्राप्तिहेतवः ॥ २॥ इत्यादि प्रमाणहैं इससे ब्राह्मणको भगद्भक्ति करना चाहिये और क्षत्रीको ब्रह्माकी सूर्य्य की अग्नि की इन सबकी उपासना करना चाहिये और वैश्य को शिवजी की भक्ति करना चाहिये इसी से गोस्वामीजीने रामायण में लिखा है यथा वशिष्ठोवाच भरत-प्रति ॥ शोचिय वैश्य कृपिण धनवानू ॥ जोन अतिथि शिवभक्त सुजानू ॥ देखिये

यह बचन रामायण भर में विलक्षण है और सिद्धान्त है इस बचन को सामान्य नहीं जानना चाहिये काहे से कि सर्वोपरि आचार्य्य वशिष्ठजीके बचन हैं ऐसे २ बिलक्षण बचन रामायणमें बहुत हैं जैसे कि॥ द्वादश अक्षर मंत्रपुनि जपहिं सहित अनुराग॥ बासुदेव पद पंकरुह दम्पति मनु अतिलाग॥ देखिये यहां पे द्वादशाक्षर मंत्र क्यों लिखा इसका हेतु यह है कि बैष्णवी ग्रन्थ में लिखा है कि क्षत्री जो भगवद्भक्त होय तो बासुदेव मंत्र का उपदेश देनाचाहिये और बासुदेवही की उपासना क्षत्री को करना चाहिये इसी बात को गोस्वामीजीने दूसरे ठौर लिखा है यथा॥ करै जो धर्म्म कर्म्म मन बानी॥ बासुदेव अर्पित नृपज्ञानी॥ देखिये यहां पे भी बासुदेवही को कहा है इससे क्षत्री को बासुदेवही के मंत्रोपासना करना चाहिये और जो कदापि कहोकि आपने तो अभी कहा है कि भगवत् की भक्ति केवल ब्रह्मण को करना चाहिये दूसरे को नहीं और अब आप कहते हैं कि क्षत्री को भी करना चाहिये सो क्यों तो इसका हेतु यह है कि हमने जो प्रथम में कहा है सो तो सनातनधर्म्म कहा है कि इस प्रकार से तीनौ वेदानुकूल तीनों वर्ण को चाहिये परंच भगवत् की भक्ति सबको उचित है ऐसा गीतादि में कहा है ताते इसमें सन्देह करना अयोग्य है और क्षत्री भगवद्भक्त होय तो बासुदेब मंत्र देना चाहिये यह अपने आचार्य्यन के सिद्धान्त हैं इसीसे ध्रुवजी को भी नारदजीने बासुदेवही मंत्र दियाहै सो भागवतादि में स्पष्टहै सो सिद्धान्त यहां पे गोस्वामीजी के जानना चाहिये दूसरा आशय बिरुद्ध है और अशास्त्र है देखिये ऐसे २ प्रसंग रामायणमें गोस्वामीजीने कहाहै पुनः तीसरा प्रसंग यथा॥ पीत यज्ञ उपवीतसुहाए॥ इति पुनः॥ पीत जनेउ महाछबिदेई॥ इत्यादि कहाहै देखिये यहांपे पीत यज्ञोपवीत ग्रन्थकारस्वामीने क्यों लिखाजो कहो कि बिवाहके समयहै तो यह कहना सर्वथा अयोग्य है काहे से कि एक बचन बिबाह समय के हैं और दूसरे बचन रंगभूमि के हैं तो मेरा कहना यह है कि वहां तो बिबाह के समय है और यहां रंगभूमि में क्या है जो पीतयज्ञ उपबीतसुहाये लिखा। इससे सर्वदा रामजी पीतजनेऊ धारण करते हैं जो कहो कि इसका अभिप्राय क्या है तो इसका अभिप्राय यह है कि शास्त्र का यह सिद्धान्त है कि ब्राह्मण सतोगुणी हैं इससे शुक्लवर्ण हैं इनको वस्त्र अथवा यज्ञोपवीतादिक सब शुक्ल धारण करना चाहिये और शुक्लवर्ण बिष्णुभगवान की पूजन करना चाहिये और क्षत्री जो हैं सो रजोगुणी हैं इससे पीतवर्ण हैं ताते इनको पीतवस्त्र पीतयज्ञोपवीतादि धारण करना चाहिये और पीतवर्ण ब्रह्मा का पूजन करना चाहिये और बैश्यजोहैं सो तमोगुण करके भयेहैं इससे रक्तवर्ण हैं ताते इनको रक्तबस्त्र रक्तजनेऊ धारणकरना चाहिये और रक्तवर्ण शिवजी की पूजन करना चाहिये और शूद्र जो हैं सो घोर तमोगुणमय हैं

ताते इनके कृष्णवर्ण हैं इनको कृष्णवस्त्रादि धारण करना चाहिये और घोर तमोगुणी भूत प्रेतादि की पूजन करना चाहिये सो शूद्रन में प्रसिद्ध है इसी प्रकार के चतुर्वर्णानुकूल सब हैं जैसे कि भगवत् के रूप सत्ययुग में श्वेतवर्ण त्रेता में पीतवर्ण द्वापर में रक्तवर्ण कलियुग में कृष्णवर्ण इस प्रकार के भागवतादि पुराणों में कहा है पुनः तैसेही सत्ययुग के श्वेतबर्ण है त्रेता के पीतवर्ण है द्वापर के रक्तवर्ण है कलियुग के कृष्णवर्ण हैं इसी प्रकार से सामवेद के शुक्लवर्ण है ऋग्वेद के पीतवर्ण है यजुर्वेद के रक्तवर्ण है अथर्वण वेदके कृष्णवर्ण है इस प्रकार से कहाहै इसका मुख्याभिप्राय यह है कि चारोयुग चारोवर्ण हैं और चारोवेद चारोवर्ण हैं और भगवत् के चारो स्वरूप चारोवर्णानुकूल हैं इससे पीतजनेऊ लिखा है इसी प्रकार के बहुत बचन गोस्वामीजीने कहा है कहांतक लिखें इससे शिवजीकी भक्ति वैश्य को करना चाहिये तनतो शोचिय वैश्य कृपिण धनवानू॥ जो न अतिथि शिवभक्त सुजानू॥ ऐसा कहा इसका आशय यह है कि वैश्यधन के अधिकारी हैं और शिवजी धनके दाता हैं इससे शिव भक्ति वैश्य को जरूर के करना चाहिये और जो कहोकि बिना शिवजीकी भक्ति किये रामजी की भक्ति नहीं होती है ऐसा सर्वत्र गोस्वामीजीने कहा है और आपने भी पूर्व में शिवजी को रामजीके प्राप्ति के वास्ते आचार्य्य कह आये हैं सो क्यों तो इस का हेतु यह है कि शिवसंहितादि में शिवजीने पारवती से कहा है कि जैसे आप के भक्त नष्ट भ्रष्ट होते हैं तैसे मेरे भक्त नहींहोते हैं पार्बतीजी बोलीं क्यों मेरेभक्त नष्टभृष्ट होते हैं आपके नहीं शिवजी बोले कि हे देवि! आपके भक्त घोर तमोगुणी मद्यमांस के भक्षण करनेवाले होते हैं इससे सब नष्ट होजाते हैं और हमारा भक्त कौन नष्ट होता है कि जो हमारे स्वामी श्रीरामजी से बिमुख होके धन द्रव्यादि के वास्ते हमारी भक्ति करते हैं और जो जन रामजी की प्राप्ति के वास्ते हमारी भक्ति करते हैं तिनको मैं योगियों को दुर्लभ पद देताहूँ ऐसे २ बहुत प्रसंग लिखे हैं इससे शिवजीकी केवल भक्ति करने वाला तमोगुणी है दूसरा नहीं ताते शिवजी की भी भक्तिमें अनेकन भेद हैं इहांपे केवल सनातनधर्म कहागया है कि इस प्रकारके तीनौ वेदानुकूल तीनौ गुणोंके संयुक्त तीनौ वर्णको त्रिदेवकी पूजन करना चाहिये और भगवत् की पूजन आराधन तथा भजनस्मरण सबको करना चाहिये काहेसे कि भगवत् सबके देव हैं इससे गोस्वामीजी ने त्रिदेवमय रामनाम को कहा पुनः॥ त्रिवेदके प्राण कहा ताते ऐसा नहीं जानना चाहिये कि रामनामभी त्रिगुणात्मकहै इसी भ्रमको मिटाने के वास्ते गोस्वामीजी कहते हैं कि पुनः॥ सो रामनाम तीनौ अक्षर युक्त कैसा है कि अगुण है अर्थात् पूर्वोक्त रजोगुणसे सतोगुणसे तमोगुणसे रहित है भाव सृष्टिके वास्त

त्रिगुण के भी कर्त्ता हैं और अगुणभी है इससे यहां पै अगुणपद दिया पुनः॥ कैसा है कि अनूप है अनूपम कहने का यह भावहै कि यद्यपि करके पूर्वोक्त ब्रह्माविष्णु शिवके नाम वेदमें असंख्य हैं परंच रामनामके समान दूसरा नाम नहीं है इससे अनूपम कहा अथवा कृशानुके भानुके हिमकरके हेतु दूसरा नामनही हैं रामनामही है पुनः॥ विधिहरिहर मय दूसरा नामनही है रामनामही है पुनः॥ वेदत्रयी के प्राण रामनामही हैं दूसरा नाम नहीं है जो कदापि इन सबके हेतु दूसरा नाम कोई कहै तो मत वाद समझना चाहिये इससे अनूपम कहा भाव रामनाम के समान रामनामही है दूसरा नाम रामनाम के समान कहना मूर्खता है यथा (प्रेमरामायणे)॥

श्लोक। असंख्यकोटिनामानि नैवसाम्यंप्रयान्तिच।
खद्योतराशयोयान्ति रवेःसादृश्यतांकथम्॥१॥

(अर्थ)--असंख्य कोटि जो भगवत् के नाम हैं सो सब रामनाम के समान नहीं प्राप्तहोसक्ते हैं जैसे असंख्य जुगुनू सूर्य की समता कैसे प्राप्तहोसक्ती हैं पुनः॥ राका रजनी भक्ति तव रामनाम सोइ सोम॥ अपर नाम उडुगणबिमल बसहु भक्त उर ब्योम॥ इत्यादि कहाहै पुनः॥ निरुपम न उपमा आन रामसमान राम निगम कहै॥ जिमिकोटि शत खद्योत समरबि कहत अति लघुता लहै॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे रामनामके समान रामनामही है रामधाम के समान रामही धामहै रामलीलाके समान रामलीलाही है रामरूप के समान रामरूपही है दूसरा नाम रूपलीला धामकी उपमा देना बड़ा अनुचित है इससे अनूपम कहा पुनः॥ वह रामनाम कैसा है कि गुणके निधान नाम स्थान है इहां पै मायाकृत गुण नहीं समझना चाहिये काहेसे कि मायाकृत गुणसे तो प्रथमही अगुण कहि आये हैं तो पुनः॥ गुण निधान कैसे कहैंगे इससे इहां पै भगवताश्रित जो दिव्य गुण है तेहिका स्थान जानना चाहिये इहां पर्यन्त गोस्वामीजी ने रामनाम तीनौ अक्षर को बर्णन किया और सृष्टिके हेतु देखाया और अन्त में अगुण अनूपम गुण निधान कहिके तीनौ अक्षर की मयत्री समाप्त किया और यह देखाये कि अग्निसे सूर्य से चन्द्रमा से ब्रह्मासे बिष्णु से शिवसे तथा तीनौ वेदसे रामनामही बड़ाहै और सबका सारहै इससे इन नवौ की उपासना छोड़िके रामनाम जपना चाहिये यह सबका परम सिद्धान्त है और गोस्वामीजी का भी यही सिद्धन्त है काहेसे कि गोस्वामीजी के तो एक तरफसे रामनाम को बर्णन करके सबसे विशेष नाम को देखाना है देखिये यहां पै गोस्वामीजी ने सृष्टि के मुख्य हेतु नवबस्तु वर्णन किये यथा॥ अग्नि १ सूर्य २ चन्द्रमा ३ ब्रह्मा ४ बिष्णु ५ शिव ६ और तीनौ वेद यह नौ भये इन नवौ

के कारण रामनाम है इससे नव दोहा तक नाम वन्दना किये काहेसे कि संसार की स्थिति नवही करके है और यही नवौ मुख्य हैं बिना इनके कुछनहीं होसक्ता है जैसे कि अग्नि सूर्य चन्द्रमा यह तीनौं न होयँ तो कोई कृत्य नहीं होसक्ता है और ब्रह्मा विष्णु शिव न होयँतो संसार की उत्पत्ति पालन संहार कैसेहोय और वेदत्रयी न होयतो वर्णाश्रमके धर्म कैसे होयँ इससे यही नवही प्रधानहैं और यही नवकरके सब विस्तार भयाहै और इननवौके हेतु रामनाम है इससे रामनाम सर्वोपरि है और रकार ब्रह्मस्वरूपहै इससे अगुणहै और अकार श्रीमहारानीजी का स्वरूपहै ताते अनूपमहै और मकार लक्ष्मणजी का स्वरूपहै इससे गुण निधानहैं काहेसे कि सब लक्षण के धाम जो होय सो कहावै लक्ष्मण यह लक्ष्मण शब्द का अर्थ है इसीसे गोस्वामीजी ने यहां पै तीनों अक्षर में तीन विशेषण दियाहै । आगे इसीप्रकार के तीन अक्षर युक्त चित्रकाव्य के हिसाब से श्रीसीतानाम को भी समझाना चाहिये और पूर्वोक्त नवौ वस्तु के कारण जानना चाहिये काहेसे कि युगलस्वरूप नाम तत्त्व महत्त्व करके एकही है इससे अगुण अनूपम गुण निधान महारानीजी का भी नाम जानब ॥ २ ॥ (मूल)

महामंत्र जोइ जपत महेशू। काशी मुक्तिहेतु उपदेशू॥

(अर्थ)—अब श्रीगोस्वामीजी रामनाम को षडक्षर करके जनाते हैं और मुख्य २ जापकों के द्वारा नाम माहात्म्य भी कहते हैं कि जिसमें ऐसा कोई नजाने कि रामनाम केवल सृष्टिही के हेतु है मोक्षार्थ नहींहै सो अब मोक्षदा भी देखातेहैं श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि जोई रामनाम महामंत्र को महेश जो श्रीशिवजी हैं सो जपते हैं जोई कहने का यह भाव है कि जौन रामरघुवर के नाम पूर्वोक्त नवौ वस्तु के कारणहै और अगुणहै अनूपम है गुण निधान है जोई रामनाम महामंत्र को शिवजी जपते हैं भाव दूसरा नाम नहीं इससे जोई कहा और महामंत्र कहने का यहभाव है कि रामनामहीं षडक्षर महामंत्र है जिसे कि रामतारक मंत्रराज कहते हैं इससे यह देखाया कि रामनाम में छःअक्षर हैं सो पूर्वही में लिखि आये हैं और एक यह भी देखाये कि शिवजी के जो बनाये हैं साबरमंत्र सप्तकोटि सो चित्त के भ्रांति करने वालाहै इसीसे शिवजीने बनाके प्रत्यागन कर दिया और महा मंत्र जो रामनाम है तेहिको जपते हैं इससे रामनाम महामंत्र है और सर्वोपरि है यथा प्रमाण (सारस्वत तंत्रे) शिवोवाच ॥ सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रम कारकाः ॥ एकएवपरोमन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥ इत्यादि कहाहै इससे महामंत्र कहा और राम तारक मंत्र के प्रमाण अथर्वण वेदके रामोत्तर तापनीयोपनिषद में लिखा है यथा॥ अकारः प्रथमाक्षरोभवति। उकारो द्वितीयाक्षरोभवति। मकारस्तृतीयाऽक्षरोभवति।

अर्द्धमात्रश्चतुर्थोऽक्षरोभवति । बिन्दुःपंचमाऽक्षरोभवति । नादःषष्टाऽक्षरोभवति । तारकत्वात्तारकोभवति । तदेवतारकंब्रह्मत्वंविद्धि । तदेवोपास्यामितिज्ञेयम् । गर्भ । जन्म । जरा-मरणसंसार । महद्भयात्संतारयतीति । तस्मादुच्यतेतारकमिति ॥ यएत त्तारकं ब्रह्मणोनित्यगधीते । ससर्वपाप्मानंतरति । समृत्युंतरति । सब्रह्महत्यांतरति । सभ्रूणहत्यांतरति । सवीरहत्यांतरति । ससर्वहत्यांतरति । ससंसारंतरति । ससर्वंतरति । सोऽविमुक्तमाश्रितोभवति । समहान्भवति । सोऽमृत । त्वंचगच्छतीतिद्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥ इत्यादि प्रमाण हैं इससे रामनामहीं षडक्षर महामंत्र है इससे महामंत्र कहा और महेश कहने का यह भाव है कि ऐसा रामनाम महामंत्र सर्वोपरि है कि जिसको महाईश्वर होके श्रीशिवजी जपिरहे हैं तो दूसरे को क्या कहना है इससे यह देखाये कि बैष्णव शिरोमणि जो शिवजी हैं सो भगवत के सब नाम और मंत्र को छोड़ि के रामनाम को जपते हैं इससे रामनाम सर्वोपरि है काहे से कि सर्वोपरि रामनाम न होता तो शिवजी ऐसे ज्ञाता और वैष्णं शिरोमणि होके श्रीराम नाम क्यों जपते दूसरेही नाम जपते इससे महेश कहा ताते रामनाम सर्वोपरि है और यहां पे सब जापकौं को छोड़िके प्रथमही शिवजीको क्या कहा इसका अभिप्राय यह है कि शिवजी ईश्वर हैं और वैष्णवाग्रगण्य हैं यथा ॥ वैष्णवानां यथाशम्भुः ॥ इत्यादि भागवतमें कहा है इससे वैष्णव शिरोमणि जानिकै प्रथम कहा काहेसे कि शिवजीके समान दूसरा नाम जापक नहीं है यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है इसीसे जहां कहीं नाममाहात्म्य कहते हैं तहां प्रथमही शिवजीको कहते हैं यथा ॥ मङ्गलभवन अमङ्गलहारी । उमा सहित ज्यहि जपत पुरारी ॥ इत्यादि कहा है इससे शिवजीको प्रथम कहने से सब जापक आजाते हैं काहेसे कि शिबजी जापक शिरोमणि हैं और इसके आशय आगे कहेंगे पुनः वह रामनाम महामंत्र कैसा है कि काशीनाम काशिनपुरी में मुक्ति नाम संसारके जन्म मरणसे छूटने के वास्ते उपदेश है अर्थात् मृत्युकाल में वही रामनाम महामंत्रको श्रीशिवजी दक्षिण कर्ण में उपदेश करके सबको मोक्ष देदेते हैं ताते मुक्तिके हेतु उपदेश है इससे गोस्वामी जीने यह दिखाया कि रामनाम केवल सृष्टिही के हेतु नहीं है मोक्षका भी हेतु नामही है भाव बिना नामके मोक्ष भी होना दुर्लभ है (शङ्का) यहां पै शिवजी मरने के समय में सबको राममंत्रोपदेश क्यों करते हैं इसका क्या हेतुहै (उत्तर) इसका हेतु यह है कि जितने शैव्यशाक्त हैं अथवा गाणपत्यशौर्य्य संन्यासी हैं सो सब प्रसिद्ध तो वैष्णव होनहीं सक्ते हैं काहेसे कि वैष्णवके द्रोही होते हैं और बिना वैष्णव भये जीव का कल्याण होना दुर्लभ है यह सब सद्ग्रन्थन का सिद्धान्त है काहेसे कि मोक्षके अधिकारी केवल भगवत् हैं दूसरे देव नहीं हैं इसीसे शिवजी कृपालु ने वैष्णवी मंत्रोपदेश करके अन्त में

वैष्णव करके तब मोक्ष देते हैं काहेसे कि मृत्युकाल में जीव परवश होजाता है ताते उपदेश देने में अवसर लगजाता है इससे मरणकाल में मंत्रोपदेश देते हैं और वैष्णवी मंत्र सिवाय वैष्णवके दूसरे से लेना न चाहिए बड़ा दोषहै और शिवजी वैष्णव शिरोमणि हैही हैं इससे वैष्णवी मंत्र देने के अधिकारी हैं ताते वैष्णवी मंत्र केवल वैष्णव से लेना चाहिए अवैष्णव से न लेना चाहिए और न अवैष्णव को उचितहै कि वैष्णवी मंत्र किसी को देवे जो कदापि मूर्खता से देवे तो दोनों नर्कगामी होयँ (शङ्का) शिवजी जो सब मंत्रवाले को राममंत्र देते हैं सो इसमें दोष नहीं है क्या? क्योंकि एक गुरू से मंत्र लेके पुनः दूसरे गुरू से मंत्र लेना अथवा देना उचित नहीं है ॥ (उत्तर) इसका हेतु यह है कि गुरू तीन प्रकारके होते हैं एक राजसी एक तामसी एक सात्विकी तिसमें सात्विकी गुरु जो है सो सर्वोपरि है सो यही वैष्णव हैं इन्हें सब मंत्रवाले को वैष्णवी मंत्र देना चाहिए और सब मंत्रवालों को वैष्णवी मंत्र वैष्णव से लेना चाहिए ऐसा प्रमाण है यथा—(पुष्करसंहितायां) ॥

श्लोक। अवैष्णवोपदेष्टायश्चान्यमंत्रेरतोपिच।
वैष्णवाद्विष्णुमंत्रेण पुनःसंस्कारमर्हति ॥

अर्थ—अवैष्णवों के जो शिष्य हैं और दूसरे मंत्र में रत हैं अर्थात् तत्पर हैं तिनको उचित है कि वैष्णव से फिर विष्णुमंत्र लेलेवें इत्यादि प्रमाण हैं और भी बहुत प्रमाण हैं प्रमाण देने से ग्रन्थविस्तार होजायगा ताते थोड़ेही में जान लें इससे शिवजी सब मंत्रवालों को राममंत्रोपदेश देते हैं इसमें सन्देह न करना चाहिए देखिए इसीसे शिव जीने काशीजीमें सहस्र मन्वन्तर श्रीरामनाम का जाप किए तब श्रीरामजी ने प्रगटहोके कहा वर मांगो तब शिवजी बोले कि जो कोई काशी क्षेत्रमें मरे तिनको मोक्ष होय यह बात सुनके श्रीरामजी ने विचारा कि जो हम ऐसेही मोक्ष होनेके वास्ते वरदान दे देंगे तो वैष्णवशास्त्र में विरुद्ध पड़ेगा काहे से कि शिवपुरी में मोक्ष होनेकी वैष्णवशास्त्र की आज्ञा नहीं है दूसरे बिना वैष्णव भए हमारे पदको कैसे प्राप्त होसक्ते हैं ऐसा विचार के श्रीरामजी बोले कि हे शिवजी आपके इस काशीक्षेत्र में जो कीट पक्षी आदि लेके जीव मरैं तिनको आप यह हमारा षडक्षर रामतारक महामंत्र को दक्षिण कर्ण में उपदेश दे देना सो मुक्त होजायँगे देखिए यहां पै मंत्र देनेका यही कारणहै कि बिना मंत्रोपदेश किए और वैष्णव भए गति होना असम्भव है और मृत्युकाल में मंत्रोपदेश होमेसे अवैष्णवत्व छूटगया वैष्णव होगए इसीसे रामजीने मंत्र दिया नहीं तो क्या वरदानसे गति न होती अवश्यमेव गति होती परञ्च वैष्णवशास्त्र की मर्य्यादा मिटजाती और रामजी

मर्य्यादा पुरुषोत्तम हैं अब काशीजीमें मोक्ष होनेका प्रमाण सुनिए यथा—(अथर्वण वेद रामोत्तरतापनीयोपनिषद के) ॥

श्लोक। श्रीरामस्यमनुंकाश्यां जजापवृषभध्वजः।
मन्वन्तरसहस्रैस्तु जपहोमार्चनादिभिः ॥ १ ॥
ततःप्रसन्नोभगवान् श्रीरामःप्राहशङ्करम् ॥
वृणीष्वयदभीष्टं तद्दास्यामिपरमेश्वरः ॥ २ ॥
अतःसत्यानंदचिदात्मा श्रीराममीश्वरःप्रपच्छ॥
मणिकर्ण्यां वा मत्क्षेत्रे गङ्गायां वा तटेपुनः ॥
म्रियतेदेहितज्जन्तोर्मुक्तिंनातोवरान्तरम् ३ इति
अथ सहोवाच श्रीरामः ॥
क्षेत्रेऽत्रतवदेवेश यत्रकुत्रापिवामृताः ॥
क्रिमिकीटादयोऽप्याशुमुक्ताःसन्तुनचान्यथा ४
अविमुक्तेतवक्षेत्रे सर्वेषांमुक्तिसिद्धये ॥
अहंसन्निहितस्तत्र पाषाणप्रतिमादिषु ॥ ५ ॥
क्षेत्रेऽस्मिन्योऽर्चयेद्भक्त्या मंत्रेणानेनमांशिव॥
ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच ॥६॥
त्वत्तोवाब्रह्मणोवापि येलभन्तेषडक्षरम् ॥
जीवन्तोमंत्रसिद्धाः स्युर्मुक्तामांप्राप्नुवन्तिते ७॥
मुमुर्षोर्दक्षिणेकर्णे यस्यकस्यापिवास्वयम् ॥
उपदेक्ष्यसिमन्मंत्रं समुक्ताभविताशिव ॥ ८ ॥
श्रीरामचन्द्रेणोक्तंयोऽविमुक्तं पश्यतिसजन्मातरि-
तान्दोषान्नश्यतीति चतुर्थखण्डः ॥ ४ ॥

इत्यादि प्रमाण हैं इससे काशी मुक्ति हेतु श्रीरामनाम महामंत्र उपदेश सिद्धहै इसमें सन्देह न करना चाहिए यह वेदके प्रमाण हैं ॥ २ ॥ (मूल)

महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥ ३ ॥

अर्थ–पुनः जासु नाम जिस रामनाम महामंत्र की महिमा गणराऊ जो श्रीगणेश जी हैं सो जान नाम जानैं हैं काहे से कि नामही के प्रभाव से प्रथम पूजित भए हैं अथवा आद्यपर्य्यन्त प्रथम पूजियत नाम पूजे जाते हैं यह प्रसङ्ग (शैव्यतंत्र) में लिखाहै कि एक समय में शिवजीने गणेशजी को योग्य जानिकै प्रथम पूजित करनेलगे तब कार्तिकेय स्वामी ने कहा कि प्रथम पूजित हमको करिये तब श्रीशिवजीने दोनोंको ब्रह्माजीके पास भेजदिया तब ब्रह्माजी ने कहा कि जो प्रथम त्रैलोक्य की प्रदक्षिणा कर आवै सो प्रथम पूजित होगा यह बात सुनके कार्त्तिकेयस्वामी तो बहुत शीघ्र मयूर पै सवार होके उड़चले और गणेशजी मूषा पै सवार होके बहुत धीरे २ चले काहेसे कि मूषाकी औकातही क्याहै इतनेहीमें भगवत्के कृपानुग्रहसे मार्गमें श्रीनारदजी मिले और सब समाचार गणेशजीसे बूझे गणेशजीने बतादियेसो सुनके नारदजी को दयाआई नारदजी ने कहा कि जिसके अन्तरगत तीनों लोक हैं ऐसा जो सर्वोपरि श्रीरामनाम है तिनको आप पृथ्वी पै लिखिके परिक्रमा कर लीजिये सो सुन के गणेशजीने बिश्वास पूर्वक वैसेही किया तत्पश्चात् कार्त्तिकेय स्वामी जहां २ जांय तहां २ आगे मूषापद के चिह्न देखि परे तब कार्त्तिकेय स्वामी निराश होगये और गणेशजीको शिवजीने सब देवतों में प्रथम पूजित किया सोई गोस्वामी जी कहते हैं कि नामहीं के प्रभाव से प्रथम पूजियत इससे यह दिखाया कि जब पृथ्वी पै लिखिकै प्रदक्षिणा किया तिससे तो प्रथम पूजित भये और गणराऊ याने सम्पूर्ण देवतों के राजा भए अथवा रहे प्रथम गणनाम भूतों से राजा पीछे नामके प्रभाव करके देवतों के राजा भए और प्रथम पूजेगए ऐसी नामकी महिमा है कि लिखके परिक्रमा किया सो तौ यह पदवी पाए तो प्रेमपूर्वक जपने से न जाने कौन पद पावे इससे रामनाम सर्वोपरि है (शङ्का) यहां पै शिवजी के पीछे गणेशजी को क्यों कहा (उत्तर) इसका हेतु यह है कि गोस्वामी जीने विचारा कि जब शिवजी को कहा तो गणेशजी को भी कहना चाहिये काहे से कि पिता पुत्र एकही होते हैं यथा (आत्मावैजायतेपुत्रः) इतिश्रुतिः॥ अर्थात् आत्मा जो है सोई निश्चय करके पुत्र उत्पन्न होते हैं ऐसा वेद में लिखाहै इससे शिवजी के आत्मस्वरूप गणेशजी को जानिकै शिवजी के पीछे कहा दूसरा एक यह भी दिखाया कि त्रिलोक रामनाम के अन्तरगत है ताते रामनाम सर्वोपरि है ॥ ४ ॥ (मूल)

जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयोशुद्ध करि उलटा जापू ॥५॥

अर्थ—पुनः ज्यहि रामनाम महामंत्र का प्रताप आदिकवि जी श्रीबाल्मीकि जी महर्षि हैं सो जान नाम जानैं हैं काहे से कि जिन्हों ने उलटे नामका जाप करके अर्थात् मरा मरा कहिकै शुद्ध भयो नाम भये हैं यहां पै आदि कवि कहने का यह भावहै कि कहां घोरकर्म व्याधा के करते रहे कि जिनको मारे ब्रह्महत्या के पाप करके सीधे रामनाम भी नहीं आता रहा सो सप्तऋषियों के उपदेश से श्रीरामनाम को उलटा जपिकै और सब पापों से रहित होके याने शुद्ध होके जिन्हों ने चौबीस अक्षर गायत्री पै चौबीस सहस्र रामायण बनाया कि जिस रामायण का आशय बड़े २ विद्वानों को भी समझना कठिन है तिसमें भी भविष्य कथन किया और संसार में जिनका आदिकवि सत्यवक्ता करके नामही विख्यात भया सो यह पदवी रामनामही के प्रताप से पाया तिसमें भी उलटे नाम के प्रताप से कुछ सीधे नाम के प्रताप से नहीं सीधे नाम के प्रताप से तो न जाने कौन पदवी पाते ऐसा नामका प्रताप है यथा—उलटा नाम जपत जग जाना। बालमीकि भए ब्रह्म समाना॥ इत्यादि कहा है इससे आदिकवि कहा दूसरा हेतु आदि कवि कहने का यह है कि बहुतेरे ज्ञातालोग कहते हैं कि उलटे नामके जपनेवाले व्याधा के पुत्र बालमीकि कोई दूसरेही हैं और श्रीमद्रामायण के बनानेवाले भृगुजी के पुत्र बाल्मीकि दूसरे हैं सो यह कहना ठीक नहीं है इसी भ्रमको मिटाने के वास्ते आदि कवि कहा इससे बाल्मीकि एकही हैं और व्याधा होने का कारण यह है कि यह बालमीकि जी भृगुजी के पुत्र रहे इनका नाम प्रथम भार्गव रहा सो दुष्ट व्याधा के सङ्ग करके व्याधा होगए पीछे इन्हीं सबके साथ रहने लगे जब सप्तऋषि मिले तो देख कि यह तो महा पापकर्मकारी है ऐसा बिचारके रामनामोपदेश किया जब पापके मारे सीधा रामनाम न आया तब उलटा नामोपदेश देके चले गए जब बहुत काल व्यतीत होगया नाम जपते २ तब इनके ऊपरको वल्मीक का अर्थात् बम्बी के आवरण होगया पीछे प्रचेता जो बरुण हैं तिनके वर्षा करने पै प्रगट भए इसीसे प्रचेता के पुत्र प्राचेतस नाम भया और बल्मीक से भए ताते वाल्मीकि नाम भया परञ्च पुत्र हैं मुख्य भृगुजी के इससे एकही बाल्मीकि हैं इसमें सन्देह न करना चाहिए इसीसे गोस्वामीजी ने आदिकवि कहा यथा—जान आदिकवि तुलसी नाम प्रभाव। उलटा जपत कोलते भए ऋषिराव॥ इत्यादि कहा है यहां पै उलटे नामका माहात्म्य कहनेका यह भाव है कि और जितने यंत्र मंत्र हैं अथवा भगवत् के नाम सो सब उलटा जाप होनहीं सक्ताहै दूसरे यत्रं मंत्र को उलटा जपने में विघ्नही होगा और श्रीरामनाम ऐसा कृपालु और

सरल कि चाहे जैसा जपै कल्याणही है इससे उलटा कहा और भयो शब्द कहने का यह भाव है कि न जाने व्याधा का सङ्ग करके कितने जीवहत्या और ब्रह्महत्या किये रहे सो नामके प्रताप करके शुद्ध होगए भाव शुद्ध होने योग्य नहीं रहे सो नाम के जपे से शुद्ध होगए ताते नामप्रताप बड़ा भारी है यथा—महिमा रामनामकी जान महेश। देत परमपद काशी करि उपदेश ॥ कलशयोनि जिय जान्यो नाम प्रतापु । कौतुक सागर शोख्यो करि जिय जापु ॥ इत्यादि बरवै रामायण में गोस्वामी जी ने कहा है इससे रामनाम का प्रभाव अतिशय प्रवल है (शङ्का) ग्रन्थकार स्वामी ने प्रथम नाम माहात्म्य में शिवजीको कहा सो ठीकहै काहे से कि प्रथम जापक हैं तत्पश्चात् गणेशजी को कहा सो भी ठीकहै क्योंकि गणेशजी शिवजी के पुत्र हैं पुनः तिसके पीछे पार्वती जीको कहना योग्य रहा काहे से कि पिता माताके बीच में पुत्रको कहना उचितहै सो नहीं कहा बीचमें बाल्मीकि जी को क्यों कहा (उत्तर) इसका अभिप्राय एक तो यह है कि श्रीगोस्वामी जी बिचारे कि गणेशजीके द्वारा पृथ्वी पै लिखि नाम का माहात्म्य कहा तो अब इसीके लगभग उलटे नामका भी माहात्म्य कह देना चाहिये काहेसे कि जैसः आश्चर्य्यमाहात्म्य लिखे नामके हैं तैसेही उलटे नामका भी अद्भुत माहात्म्य है इससे बीचमें कहा अथवा दूसरा हेतु यह है कि शिवजीके और पार्वतीजीके श्रीरामजी इष्ट हैं और तिनके यशके कर्त्ता वाल्मीकि जी महर्षि हैं इससे शिवजी को व पार्वतीजी को वाल्मीकि जी अतिशय प्रियहैं यह प्रियत्व दिखाने के वास्ते बीचमें कहा भाव जैसे कि शिव पार्वती को गणेशजी प्रियहैं तैसेही वाल्मीकिजी प्रियहैं इससे प्रथम कहा पीछे पार्वतीजी को कहा यथा ॥ ५ ॥ (मूल)

सहस नाम सम सुनि शिव बानी।
जपि जेईं शिवसंग भवानी ॥ ६ ॥

अर्थ—पुनः ज्यहि रामनाम महामंत्र को विष्णुसहस्रनाम के सम नाम बराबर शिव बाणी सुनिकै भवानी जो पार्वती जी हैं सो पिय जो हैं शिवजी तिनके संग नाम साथ में जेईं नाम भोजन करती भई यहां पै विष्णुसहस्रनाम के समान शिववाणी सुनि कै क्यों कहा पियबाणी क्यों नहीं कहा इसका हेतु यह है कि पियबाणी कहने से यह पाया जाता कि पार्वती जी पतिव्रता हैं इससे अपने पातिव्रत धर्म को बचाने के वास्ते मान लिया परञ्च विष्णुसहस्रनाम के तुल्य रामनाम नहीं है और शिवजी तो पागल हैं इससे जोई मनमेंआताहै सोई बक देते हैं यह निश्चय होता है इससे पियबाणी नहीं कहा शिवबाणी कहा काहेसे कि शिवजी ईश्वर हैं इससे इनकी बाणी शिवनाम कल्याण

कारी है अथवा शिवनाम ईश्वरबाणी है अथवा शिवनाम मर्य्यादा युक्त बचन हैं इससे बेखटक पार्वती जी को निश्चय होगया कि रामनाम विष्णुसहस्रनाम के समान है काहे से कि पार्वती जी को यह बिश्वास है कि शिवजी मिथ्या नहीं कहसक्ते हैं यथा सती बचन ॥ शम्भु गिरा पुनि मृषा न होई। शिव सर्वज्ञ जान सब कोई ॥ पुनः ॥ तुम त्रिभुवन गुरु बेद बखाना। आन जीव पांवर का जाना ॥ इत्यादि कहा है इससे भगवत् के विषय में शिवजीके वचन सर्वोपरि हैं दूसरे वैष्णव शिरोमणि हैं और भागवतादि में लिखाहै कि शिवजी के समान तत्त्वज्ञाता दूसरा कोई नहीं है जो शिवजी की निन्दा करे सो तत्त्वसे विमुख होय ऐसा नन्दीश्वर ने सब ब्राह्मणों से कहाहै दक्ष की यज्ञशाला में इससे शिववाणी कहा भाव विष्णुसहस्रनाम के समान एक रामनामहीं है दूसरा नाम नहीं है जो कदापि कहीं किसी ग्रन्थ मे विष्णुसहस्रनाम के समान दूसरा नाम होय तो अशिवबाणी जान लेना भाव पक्षपात समझना चाहिए और श्रीरामनाम के विषय में पक्षपात नहीं है निश्चय विष्णुसहस्रनाम के तुल्य जानना चाहिए यहकथा पद्मपुराण में लिखी है कि एक समय में शिवजी ने पार्वती जी को संगमें भोजन करने के वास्ते बुलाया तब पार्वती जी बोलीं कि विष्णुसहस्रनाम का पाठ करके आती हूं तब शिवजी ने बिलम्ब जानके और प्रसन्न होके निज सिद्धान्त जो श्रीरामनाम है सर्वोपरि सो बताया यथा पद्मपुराणे शिवोवाच ॥

श्लोक। रामरामेतिरामेति रमेरामेमनोरमे।
सहस्रनामतत्तुल्यं रामनामवरानने ॥ १ ॥
पुनः ॥ (ब्रह्मवैवर्त्तपुराणेयशोदोवाच)
नाम्नांसहस्रदिव्यानां स्मरणेयत्फलंलभेत्।
तत्फलंलभतेनूनं रामोच्चारणमात्रतः ॥ २ ॥
पुनः ॥ (विष्णुपुराणे वेदव्यासोवाच)
विष्णुरेकैकनामापि सर्ववेदाधिकंमतम्।
तादृङ्नामसहस्रेण रामनामसमंमतम् ॥३॥
श्रीरामेतिपरंनाम रामस्यैवसनातनम्।
सहस्रनामसादृश्यं विष्णोर्नारायणस्यच॥४

पुनः॥(वृद्धपराशरस्मृतौ)

श्रीरामायनमोह्येषं तारकंब्रह्मकथ्यते।

नाम्नांविष्णोःसहस्राणां तुल्यएवमहामनुः ५

पुनः॥(क्रियायोगसारे)

विष्णोर्नामसहस्राणां पाठाद्यल्लभतेफलम् ॥

तत्फलंलभतेमर्त्यो रामनामस्मरन्सकृत॥६

विष्णोर्नामानिविप्रेन्द्र सर्ववेदाधिकानिवै ॥

तेषांमध्येतुतत्त्वज्ञ रामनामपरंस्मृतम् ॥७॥

पुनः॥(आनन्दसंहितायां)

एकैकरामनाम्नस्तु सर्वतापप्रनाशनम्

सहस्रनामकोटीनां फलदंवेदविश्रुतम् ॥८॥

पुनः॥(आदिरामायणे श्रीरामोवाचनारदम्प्रति)

नारायणस्ययावन्ति पुराणेष्वागमेषुच।

दिव्यनामसहस्राणि कीर्त्तयन्यत्फलंलभेत

ततःकोटिगुणंपुण्यं फलंदिव्यंमदात्मकम्।

लभतेसहसाब्रह्मन् सकृद्रामेतिकीर्त्तनात् ॥

पुनः॥(विश्वामित्रप्रातःपञ्चके)

प्रातर्वदामिवचसारघुनाथनाम वाग्दोषहारिस-

कलंकलुषंनिहन्तृ ॥ यत्पार्वतीस्वपतिनासहभोक्तु

कामाः प्रीत्यासहस्रहरिनामसमंजजाय ॥११॥

इत्यादि बहुत प्रमाण हैं इससे विष्णुसहस्रनाम के समान एक रामनामही है

यह सब महात्मन का सिद्धान्त है इसमें सन्देह करना अथवा पक्षपात समझना मूर्खता है इससे गोस्वामी जी ने यह दिखाया कि विष्णुसहस्रनाम का बड़ा भारी माहात्म्य है परन्तु एक बार रामनाम के कहने से सहस्रनाम का फल होताहै ताते विष्णुसहस्रनामादिक स्तोत्र के पाठसे रामनाम जपना सर्वोपरि है देखिए कैसा श्रीरामनामका आश्चर्य माहात्म्य है इसीसे तो विष्णुसहसूनाम के समान शिववाणी सुनिकै पार्वती जीने विष्णुसहसूनाम का पाठ छोड़िकै विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम को जपिकै स्वामी के संग भोजन करती भई यहां पै रामनाम को जपिकै स्वामीके संग भोजन किया इससे यह दिखाया कि श्रीरामनामके जापक कैसे भी नीच होयँ तो उनके साथमें भोजन करना चाहिए भाषण करना चाहिए याने सब व्यवहार करना चाहिए इसमें दोष नहीं है इसके विषय में और ग्रन्थ के प्रमाण तो को कहै कि स्वयं वेदही के प्रमाण हैं यथा॥ यश्चाण्डालोपि रामेतिवाचंवदेत् तेनसहसंवदेत् तेनसहसंवसेत् तेनसहसंभुञ्जीयात् ॥ इत्यथर्वणेश्रुतिः ॥ अर्थात् जौन चाण्डाल भी निश्चय करके राम इति वचन अर्थात् रामनाम कहता होय तिसके साथ बोलना चाहिए तिनके साथ बसना चाहिए तिनके साथमें भोजन करना चाहिए यह अथर्वण वेदकी श्रुति है ॥ इत्यादि कहाहै और शिव पार्वती तो सबप्रकार से योग्य हैं दूसरे सजातीय हैं तौ साथ में भोजन किया तो क्या भया इसमें सन्देह नहीं है ॥ ६ ॥ (मूल)

हरषेहेतुहेरिहरहीको। कियभूषणतियभूषणतीको ७

(अर्थ)--जब शिवजीके बचन को पार्वतीजीने सत्यमानिके और सहस्रनाम के पाठ छोड़िके श्रीरामनाम को विष्णुसहस्रनाम के समान जानिके जाप किया तब हर जो शिवजीहैं सो पार्वतीजी के ही को नाम हृदयको हेतु नाम कारण अर्थात् रामनामको विष्णुसहस्रनाम के समान जानिये विश्वास पूर्वक जपना इति हेतु पुनः ॥ हमारे वचनमें बिश्वास किया इति हेतु पुनः ॥ तीसरा सर्वोपरि श्रीरामनाममें अतिशयप्रीति इत्यादि हेतु हेरि नाम देखिके शिवजी कृपालु हर्षे नाम बहुत प्रसन्नभये और तिय जो है स्त्री अर्थात् पार्वतीजी तिनके जो भूषण शिवजी हैं सो ती को अर्थात् पार्वतीजी को अपना भूषण किये भाव तिय भूषण प्रथमसे आपरहे परंच जबसे पार्वतीजी ने सहस्रनाम के समान श्रीरामनामको जानिके जापकिया तबसे रामनामानन्य जानिके शिवजीनेहीं पार्वतीजी को अपना भूषण किया इससे यह देखाये कि रामानुरागियों को राम अनुरागी अतिशय प्रिय होतहैं अथवा तिय भूषण जो पतिव्रता स्त्री हैं तिनके भूषण ती को याने पार्वतीजी को शिवजी ने किया भाव पतिव्रता शिरोमणि किया इससे यह देखाये कि जो स्त्री मन बचन कर्मसे अपने पतिको सर्वस्व जानतीहै सो तो पतिव्रता है और जो स्त्री श्रीरामजी को भजती हैं सो सर्वोपरि

पतिब्रता के शिरोमणिहैं यहां पै ऐसा न जानना चाहिये कि पतिब्रता को अपने पतिको छोड़ि के दूसरे को न भजना चाहिये सो यह बात लौकिक पुरुषों के वास्ते है कुछ भगवत् के वास्ते नहीं है काहेसे कि भगवत् सबके पति हैं सो यह प्रसंग भागवतमें प्रसिद्ध है गोपियों के प्रकरण में देखलीजियेगा और पतिब्रता स्त्री को तो सर्वदा रामनाम जपना चाहिये यथा प्रमाण नृसिंहपुराणे श्रीनारदोवाच श्रीयाज्ञवल्क्यम्प्रति ॥

श्लोक। राममनामरतानारी सुतंसौभाग्यमीप्सितम्।
भर्त्तुःप्रियत्वंलभते नैवधत्र्यंकदाचन ॥ १ ॥
पतिब्रतानांसर्वासां रामनामानुकीर्त्तनम्।
ऐहिकामुष्मिकंसौख्यं दायकंसर्वशोमुने॥ २॥

(अर्थ)--इत्यादि बहुत प्रमाण हैं ताते इसमें सन्देह न करना चाहिये श्रीरामनाम सबको जपना चाहिये ॥ ७ ॥ मूल--

नाम प्रभाव जान शिवनीको।
कालकूट फल दीन्ह अमीको ॥ ८ ॥

(अर्थ)--श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि रामनामका प्रभाव याने महत्व शिवजी नीको नाम अच्छीप्रकार से जानतेहैं काहेसे कि नामहीके प्रतापसे कालकूट जो बिषहै कि जिसके पान करनेंसे तत्कालही मृत्युके वशहोजावे सो श्रीशिवजीकोअमीको नाम अमृतके फलदीन्हि नाम दिया भाव जबसे शिवजीने बिष पान किया तबसे अमर होगये इससे शिवजी नामप्रभाव अच्छीतरहसे जानते हैं यथा प्रमाण ॥

(नन्दीपुराणेनन्दीश्वरोवाचगणान्प्रति) ॥

श्लोक। शृणुध्वंभोगणास्सर्वे राम्मनामपरंबलम्।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमयींपिबेत ॥१॥
जानातिरामनाम्नस्तु परत्वंगिरिजापतिः ॥
ततोऽन्योनविजानाति सत्यंसत्यंवचोमम॥२॥

(अर्थ)--इत्यादि प्रमाण हैं इहां पै नीको कहने का यह भावहै कि जानते हैं सब कोई नाम प्रभाव परंच शिवजी नीकी तरहसे जानते हैं काहेसे कि ईश्वरहैं दूसरे शिव-जीसे बढ़के रामतत्त्व ज्ञातादूसरा नहीं हैं यथा॥ तब बोले बिधि गिरा सुहाई॥ जान महेश

राम प्रभुताई ॥ इत्यादि कहाहै पुनः ॥ अच्छी तरहसे नामप्रभाव न जानते तो सौकोटि रामायणसे सार रामनाम क्योंलेते और कोई क्यों न लिया पुनः ॥ अच्छी तरहसे नाम प्रभाव न जानते तो ॥ श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितंसर्वदा॥इत्यादि क्यों कहते इससे जानपड़ताहै कि शिवजी अच्छी तरह से जानतेहैं पुनः अच्छे ज्ञाता न होतेतो हाला-हल क्यों पान करलेते क्या उस समयमें ब्रह्मा विष्णु आदि तैंतीशकोटि देवता न रहे रामनाम के ज्ञाता जो शिवजीने विष पान करलिया औरही कोई क्यों न पान किये इससे जान पड़-ताहै कि रहे सबकोई ज्ञाता परंच शिवजीके समान दूसरे न रहे इससे नीके कहा पुनः॥ देखिये रामनाम को जपिके कोई एकही कृतार्थ भयेहैं और शिवजी कृपालु तो सहित स्त्री पुत्र के कृतार्थस्वरूप होरहे हैं और नामही के प्रतापसे पंचक्रोश पर्यन्त श्रीकाशीजी में मोक्ष को सदाब्रत देरहे हैं ऐसा कौन नाम जापक है यथा ॥ आकर चारि जीव जग अहहीं ॥ काशी मरत परमपद लहहीं ॥ सोपिराम महिमा मुनिराया ॥ शिव उपदेश करत करि दाया ॥ पुनः ॥ जासु नाम बल शंकर काशी ॥ देत सबहिं समगति अबिनाशी ॥ इत्यादि लिखाहै इससे नीके कहा और इसी कारणसे शिवजी वैष्णव शिरोमणि कहेजाते हैं और जहां कहीं नाममाहात्म्य वर्णन होताहै तहां प्रथम शिवजी लिखेजाते हैं काहेसे कि शिवजी सब प्रकारसे सर्वोपरिहैं इहां पर्यन्त गोस्वामीजी ने श्रीरामनाम को षडक्षर महामंत्र कहिके वर्णन किया और चार मुखिया नाम जापकोंके द्वारा नाममाहात्म्य कहा (शंका) इहांपै गोस्वामीजी ने चार नामजापक क्यों कहा इसका क्या आशय है (उत्तर) इसका आशय केवल इतनाही है कि यहां पै इन चारों जापकों के द्वारा गोस्वामीजी ने अद्भुत नाम माहात्म्य कहाहै जैसा कि शिवजीके द्वारा पञ्चक्रोश पर्यन्त काशीजीमें मोक्षहोना सब चराचर को सो यहभी आश्चर्य्य नाम माहात्म्यहै पुनः ॥ गणेशजी के द्वारा भूमण्डल में लिखा नाममाहात्म्य कहा ताते यहभी अतिशय नाममात्म्यहै और बालमीकिजी महर्षि के द्वारा उलटे नामका माहात्म्य कहा इससे यहभी विलक्षण नाममाहात्म्य है और पार्वती-जी के द्वारा विष्णुसहस्रनाम के समान रामनामको कहा ताते यहभी आश्चर्य नाममाहात्म्य है काहेसे कि कहां भगवत् के हजारनाम और कहां एक रामनाम इससे रामनाम सर्वो-परि है और सबके सारहै इससे परे सिद्धान्त कुछ नहींहै ईसीसे यहांपै चार नामजापक कहा आगे इसी प्रकार के अति आश्चर्य श्रीसीतानाम के माहात्म्य जानियेगा ॥ ८ ॥ मूल—

दोहा ॥

बरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी शालिसुदास।
रामनाम बर बरणयुग सावन भादौंमास ॥ १ ॥

(अर्थ)—अब श्रीगोस्वामीजी यहांसे दोहा पर्यन्त श्रीरामनामको युगाक्षर करके वर्णन करतेहैं और रकार मकारकी जो परस्पर अद्भुत प्रीतिहै स्वामी सेवक भावकी सो देखाते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि रघुपतिकी जो भक्तिहै सोई तो बर्षाऋतुहै ऋतु नाम समय अथवा काल इत्यादि एकही है यहांपै सब ऋतुवोंको छोड़िके वर्षा ऋतु क्यों कहा इसकाहेतु यहहै कि वर्षाऋतु जो है सो सब ऋतुवोंकी सुखदाई है और बृद्धिकारकहै इससे बर्षाऋतु कहा अथवा पंचोपासना जो है अर्थात् शैव्य १ शाक्त२ सौर्य्य३ गाणपत्य ४ वैष्णव ५ इति पंच उपासना सोई तो पंच ऋतुहैं और रामजीकी जो भक्तिहै सर्वोपरि सोई तो छठवां बर्षाऋतुहै भाव जैसे बर्षाऋतु करके सब ऋतु-ओं की शोभा और बृद्धिहोती है तैसेही श्रीरामजीकी भक्ति करके पांचो भक्तिकी शोभा व बृद्धि होतीहै इससे यह देखाये कि पांचो उपासनावालेको राम जीकी भक्ति करना चाहिये बिनारामजीकी भक्ति किये कल्याण नहींहै इससे बर्षाऋतु कहा अथवा शालिकी बृद्धि करने वाली केवल वर्षाही ऋतुहै दूसरी ऋतु नहीं काहेसे कि बर्षाऋतु में धानको बड़ा आनन्द होताहै इसीसे गोस्वामीजी नें सर्वत्र दासको शालिकी उपमा दियाहै यथा ॥ सेवक शालि पाल जल धरसे पुनः ॥ सो जल सुकृति शालि हितहोई । रामभक्त जग जीव न सोई ॥ इत्यादि कहाहै इससे इहांपै शालि सुदासके वास्ते रामजीकी भक्तिको बर्षा ऋतु कहा इससे यह देखाये किजैसेवर्षाकाल सब को सुखदाईहै परंच धानको बिशेष सुखदाईहै तैसेही श्रीरामजीकी भक्ति सबको सुखदाईहै परंतु दासको बिशेष सु-खदाईहै पुनः ॥ तुलसी शालि सुदास अर्थात् गोस्वामीजी कहतेहैं कि सुदास जोहै सोई तो शालि नाम धानहै अथवा यह अर्थ सो करो कि तुलसीदास जो सुदासहैं सोई शालि हैं तो यह अर्थ बिरुद्धहै काहेसे कि गोस्वामीजी अपने को सुदास नहीं कहसकतेहैं गो-स्वामीजी नें तो अपनेको सर्वत्र कुदास कहाहै यथा ॥ राम सुस्वामि कुसेवक मोसे ॥ पुनः ॥ आपुनि समुझि साधु शुचिकोभा॥ इत्यादि सर्वत्र कहाहै इससे गोस्वामीजी क-हतेहैं कि शालि सुदास है अर्थात् प्रथम शालि कहा तत्पश्चात्सुदास कहा इससे अपने को सुदास नहीं कहाहै इहांपै औरही सुदासनको कहाहै अब सुदास कहनेका भाव सुनिये इहांपे गोस्वामीजी नें शालि और दासके बीचमें सुपदादियाहै इससे सुशब्द दोनों में आनना चाहिये भाव सुशालि सुदासहै इति अबसुशालिके भाव सुनिये शालि दो प्रकार के होतहैं एकतो जोतने बोने से होतहैं सोतो सब धान समझना चाहिये यद्यपि करके बर्षाऋतु सब शालिकी हित कारीहै परंच समय २ में निरावना भी पड़-ताहै इससे एकहीवक्त सर्वदा जल न चाहिये काहेसे कि सर्वदा जल होनेसे बराबर बृद्धि नहीं होतीहै दूसरे यह सब धान होते हैं भी बहुत दिनमें इससे इन सबको शालि जा-

नना चाहिये और दूसरा सुशालि उसको कहतेहैं कि जिसको पूरब देशमें नामहीं जल धानहै उसीको कहीं २ अहोरा धान भी कहते हैं पुनः ॥ उसीको इस देशमें याने अवधमण्डलमें तीनीके चावल कहतेहैं यह धान जोहै सो बिना जोतेही बोवेही होताहै और इस धानको हमेशा जल चाहिये काहेसे कि इसको जितना जलहोय उतनाहीं फायदाहै और होता है भी दो मासमें दूसरे यह धान अन्नमें नहींहै हविष्यमें गिनाजाताहै ताते शुद्धमीहै इसी तीनी चावलकी इसदेशमें एक बड़ी भारी पर्व होतीहै वह पर्व भादौं बदी छठके दिन होतीहै जिसे कि हरछठ कहतेहैं इस पर्व में स्त्री लोग व्रत रहतीहैं और यही तीनी के चावल खातीहैं इससे इसको सुशालि जानना चाहिये अबसुदास कहनेका भाव सुनो भगवद्दास चार प्रकारके जो होतेहैं अर्थात् आर्त् १ जिज्ञासु २ अर्थार्थी ३ ज्ञानी ४ सोएतो सब दासहैं और पंचम प्रेमी भक्त जोहैं सर्वोपरि सो सुदासहैं इन पांचौ भक्तन को आगे वर्णन करेगें इससे गोस्वामीजी ने यह दिखाये कि जैसे बर्षा ऋतु सबको सुखदाई है परंतु शालिको बिशेष सुखदाई है तिसमें भी सुशालिको अतिशय सुखदाई है तैसेही श्रीरामजीकी जो भक्तिहै सो सबको सुखदाईहै परंच चारप्रकार के जो दासहैं तिनको विशेष सुखदाईहै और सुदासको अतिशय सुखदाई है अबगोस्वामीजी आगे बर्षाऋतुके जो दो महीना मुख्यहैं सो देखातेहैं कि रघुपतिकी जो भक्तिहै वर्षाऋतु तिसमें रामनाम जो वर नामश्रेष्ठ युगनाम दोऊ वर्णनाम अक्षर हैं अर्थात् रकार मकार सोईतो श्रावण और भादौं मास नाम महीनाहैं भाव जैसे बर्षाकाल में दो महीना जलके देने वालेहैं और दो महीना मिलके वर्षाऋतु होतीहै तैसेही श्रीरामजीकी भाक्तिरूप बर्षाऋतु में रामनामही दोऊ अक्षर सर्वानन्दरूप जलके वर्षानेवाले दो महीनाहैं यहांपै बर्षाऋतु केवल शोभामात्रहै किंतु मुख्य दो महीनाही हैं काहेसे कि श्रावणहीं भादौं दो महीना मिलके बर्षाऋतु होतीहै इसीप्रकारसे रामजीकी जो भक्तिहै सो रामनामहीं दोऊ अक्षर मिलके होतीहै और यहीदोऊ अक्षर मुख्यहैं इससे गोस्वामीजीने यह दिखाये कि जैसे बर्षाऋतुमें मुख्य दो महीना हैं शालि सुशालि को सुखदेनेवाले तैसेही श्रीरामजी की भक्तिमें मुख्य रामनामहीं दोऊ अक्षर दास सुदासको सुखप्रदहैं भाव रामनामहीं को जपना यही मुख्य भक्ति है ॥ १ ॥ मूल--

आखर मधुर मनोहर दोऊ।
बरण बिलोचन जनजियँ जोऊ ॥ १ ॥

(अर्थ)--पुनः ॥ वह रामनाम दोऊ आखर नाम अक्षरकैसाहै कि मधुर नाम मीठाहै अर्थात्बड़े स्वादिष्टहैं और मनोहरहैं मनोहर उसको कहते हैं कि जिसके देखने

से स्वाभाविकी चित्ताकर्षण होजावे यहां पै मधुर मनोहर के यथार्थ स्वरूप बिना नाम जपे न जानपड़ेगा काहेसे कि नवो प्राकृत मीठा है जो मधुर लगे और रकार मकार के प्रसिद्ध स्वरूप हैं जो देखिके मन हरण होजावे यहतो अनिर्वचनीय मधुरहै और आश्चर्य स्वरूपहै इससे बिना अच्छी प्रकारसे नामरटे न जानि पड़ेगी जब सर्व बासना को छोडिके कुछ दिन नाम जपै तब वाग्दोष नाश होनेसे मधुर जान पड़ेगी और अंतःकरण के शुद्ध होनेसे रकार मकार के स्वरूप देखिके मनहरण होगया इस प्राकृत जिह्वासे और नेत्रसे न जान पड़ेगी काहेसे कि यहां पै गोस्वामीजी ने निज दशा प्राप्तिके हाल लिखाहै भाव जब गोस्वामीजी को नाम जपनेसे मधुर मनोहर जान पड़ाहै तब ऐसा लिखे हैं इससे यहां पै दूसरा आशय नहीं है दूसरे मनोहर कहने से रकार मकार के स्वरूप जानपड़ताहै ताते रकार ब्रह्मस्वरूप रामजी हैं और मकार शुद्ध जीवस्वरूप लक्ष्मणजी हैं यह सिद्ध भया इससे मनोहर कहा और मधुर तो हई हैं यथा ॥ कूजंत रामरामेति मधुरम्मधुराक्षरम् ॥ इत्यादि कहा है और जो कदापि यह अर्थ करो कि नामोच्चारणमें जैसा मधुरनाम स्पष्ट रामनाम है तैसा दूसरा नामनहीं है ओर रामनाम दोऊ अक्षरकी पंक्ति जैसी मनोहर नाम सुन्दर है तैसी दूसरे नामकी मनोहर नहीं है तो यह अर्थ जमता नहीं है काहेसे कि मधुर नाम मीठही के हैं और मनोहर तो उसीको कहते हैं कि जिसके देखनेसे मन हरजावै तो जो कदापि मीठा और मनोहर सबको लगता तो सबका चित्ताशक्त होजाता काहेसे कि सब कोई रामनाम कहते हैं और सब कोई रामनाम दोऊ अक्षरकी पंक्ति देखते हैं फेर क्यों नहीं मीठा और मनोहर लगता है ताते पूर्वोक्तही अर्थ ठीक है केवल रामानुरागियों को मधुर मनोहर जान पड़ता है कि जो रामनामके समान दूसरी वस्तु जानते भी नहीं हैं और जबतक कि संसार के पदार्थ मधुर और मनोहर लगरहे हैं तबतक रामनाम मधुर और मनोहर होना दुर्लभ है यह सब महात्मन का सिद्धान्त है इससे यहां पै दशावाली बात ग्रन्थकार स्वामीनें लिखा है इसमें सन्देह न करना चाहिये पुनः वह रामनाम दोऊ आखर कैसा है कि वर्ण जो अक्षरहैं अर्थात् ॐकार तिनके बिलोचन नाम नेत्र हैं यहां पै सब अक्षर के नेत्र नहीं कहा है काहेसे किनीचे दोहामें गोस्वामीजी कहेंगे कि ॥ एक छत्र यक मुकुट मणि सब वर्णन पर जोउ ॥ ऐसा कहेंगे तो विरुद्ध होजायगी क्योंकि जब यहां नेत्रही सब अक्षरके कहा तो होचुका पुनः ॥ छत्र मुकुट कहने का कुछ प्रयोजन नहींरहा काहेसे कि एकही कहना होगा याती रामनामको सब अक्षर के बिलोचनहीं कहौ अथवा छत्र मकुटही कहौ दोमें एकही होगा इससे यहां पै वर्ण ओंकारहीको कहा है इसीसे यहां पै वरण एक बाचक गोस्वामीजी ने कहा है इससे एकाक्षर ओंकारहीको जानना चाहिये और दोहामें सब अक्षरको कहा है इसीसे

दोहामें बहुवाचक कहाहै और जो कदापि कहो कि ॐकार में भी तो तीन अक्षर हैं आप एकाक्षर कैसे कहते हैं तो हैं तीन अक्षर सहीकर परंतु कहा जाता है एकाक्षरही यथा (गीतायां) ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरनिति ॥ ऐसा कहा है इससे ॐकार अक्षर जो है ब्रह्मस्वरूप तिनके रकार मकार दोऊ अक्षर नेत्र हैं यहां पै सर्वाङ्ग छोड़िकै नेत्रही क्यों कहा इसका हेतु यह है कि नेत्र सबसे मुख्य हैं दूसरे नेत्र बिना व्यवहार होना असम्भव है और ॐकार जो है सो संसार की उत्पत्ति पालन संहार करनेवाले हैं ताते पूरा व्यवहारी है इससे नेत्र कहा काहे से कि बिना नेत्र के कार्य्य कैसे होगा इससे नेत्रेन्द्रिय प्रधान हैं यथा—मोरे राम भरत दुइ आंखी । सत्य कहौं करि शङ्कर साखी ॥ पुनः ॥ गारी सकल कैकइहि देहीं । नयनविहीन किए जग जेहीं ॥ पुनः ॥ हरषित हृदय मातु पहँ आए । मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाए ॥ पुनः ॥ जन्मरङ्क जनु पारस पावा । अन्धहि लोचनलाभ सुहावा ॥ इत्यादि सर्वत्र कहा है इससे नेत्र कहा इससे गोस्वामीजी ने यह दिखाया कि प्रणव से भी रामनाम श्रेष्ठ है । पुनः ॥ जोऊ रामनाम कैसा है कि जन जो दास हैं तिनके जिय नाम प्राण हैं अथवा जन जो विद्वान् लोग हैं सो अपने जिय नाम मनमें जोऊ नाम देखु कि रामनाम दोऊ आखर मधुर और मनोहर और ओंकार के नेत्र हैं कि नहीं दूसरे एक यह भी दिखाया कि यथार्थ मधुर और मनोहर एक रामनामही है दूसरे कहनेमात्र हैं ॥ १ ॥ (मूल)

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ।
लोक लाहु परलोक निबाहू ॥

अर्थ—पुनः वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसे हैं कि स्मर्णमात्रही में सब काहूको सुलभ हैं और सुखके देनेवाले हैं यहां पै सुलभ कहने का यह भाव है कि बिना स्मरण वाले को तो सब प्रकार से दुर्लभ हैं और सुमिरणवाले को तो तत्कालही सुलभ नाम प्राप्त हैं और सुखद हैं भाव कालान्तर में सुलभ सुखद नहीं होते हैं इससे सुलभ कहा अथवा पूर्वोक्त चौपाई की शङ्का समाधान करते हैं कि जो कदापि कोई कहै कि राम नाम दोऊ आखर की मधुरता और मनोहरता तो नहीं जान पड़ती है ताते मधुर मनोहर नहीं है क्योंकि जो मधुर मनोहर होता तो सबको जान पड़ता तिसपै गोस्वामी जी कहते हैं कि रामनाम दोऊ आखर मधुर मनोहर हैं सो मधुर और मनोहर सुमिरतही मात्रमें सब काहू को सुलभ नाम प्राप्तहै और सुख का देनेवाला है भाव बिना नाम जपे यह मधुरता और मनोहरता सब काहूको दुर्लभ है काहे से कि अनिर्वचनीय है ताते केवल नाम जपनेही से प्राप्ति होती है इससे पूर्व की चौपाई में जैसा अर्थ कहे

हैं सोई अर्थ ठीक है पुनः ॥ सब काहू कहने का यह भावहै कि और जितने यंत्रमंत्र हैं तिनमें प्रथम अधिकारी होना चाहिए। पुनः ॥ बिधिपूर्वक जपै तत्पश्चात् कालांतर पाके सुलभ सुखद होता है तिसमें भी सब काहू को नहीं केवल अधिकारी को और रामनाम तो ऐसा उदार है कि ऊंच नीच सब काहूको सुलभ सुखद है यथा (विनयपत्रिकायां) पद—राम रावरो नाम साधु सुरतरु है ॥ सुमिरे त्रिविधि धाम हरत पूरत काम सकल सुकृत सरसिजहू को सरु है ॥ लाभहू को लाभु सुखहू को सुख सर्वसु पतितपावन डरहूको डरु है ॥ नीचहूको ऊंचहूको रङ्कहूको रायहूको सुलभ सुखद आपनों सो घरुहै ॥ वेदहू पुराणहूँ पुरारिहूँ पुकारि कह्यौ राम नाम प्रेम चारि फलहू को फलहै॥ ऐसे रामनाम सों न प्रीति न प्रतीति मन मेरे जान जानिबो सो नर खरुहै॥ नामसो न मातु पितु मीत हित बंधु गुरु साहिब सभी सुशील सुधा करुहै ॥ नाम सो निबाहु नेहु दीन को दयाल देहु दास तुलसी को बलि बरु है ॥ १ ॥ इत्यादि उदारताके स्वरूप कहा है इससे रामनाम के समान उदार कोई नहीं है इससे गोस्वामीजी पूर्वहीमें कहि आयेहैं कि यहि महँ रघुपति नाम उदारा ॥ सो यही उदारता गुण है इससे सब काहू को कहा पुनः वह राम नाम अक्षर कैसाहै कि लोक में लाहु नाम लाभ कारक है भाव भोजन छादन निर्वाह मात्र अच्छी तरहसे राखते हैं और देहान्तके पीछे परलोकमें निबाहू नाम निवाहकारक है अर्थात् युगुल सरकार के सामिप्यतादि को प्राप्ति करनेवाला है यथा (विनय) रोटी लूंगानिके राखे आगहूके वेद भाखे भलो होइ है तेरो ताते आनन्द लहत हौं ॥ इत्यादि कहाहै इससे यह दिखाये कि बिना राम नाम परलोकमें बिर्वाह होना दुर्लभ है ताते राम नाम अवश्यमेव जपना चाहिये यही परलोक के वास्ते खर्चा है और यही राम नाम सर्वोपारे जो श्रीसाकेतनगर है तहांका पहुँचानेवाला है यथा पद्मपुराणे ॥

श्लोक। सर्वोपायबिनिर्मुक्ता नाममात्रैकजल्पकाः।
जानकीवल्लभस्यापिधाम्निगच्छन्तिसादरम् ॥ १ ॥
दुर्ल्लभंयोगिनांनित्यं स्थानंसाकेतसंज्ञकम्। सुख
पूर्व्वंलभेत्तत्तु नामसंराधनात्प्रिये ॥ २ ॥ (मूल)

कहत सुनत सुमिरत सुठिनीके।
राम लषण सम प्रिय तुलसीके ॥ ३ ॥

(अर्थ) पुनः ॥ वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसा है कि कहतम अर्थात् सत्संगमें परस्पर कहने में और सुनत नाम दूसरेके मुखसे कहा भया सुनने में और सुमिरत नाम

स्मरण करनेमें सुठि नाम अत्यन्त नीक है भाव जैसा राम नाम दोऊ अक्षर कहनेमें सुननेमें और स्मरण करनेमें सुन्दर नीक लगता है तैसा दूसरा पदार्थ कहनेमें सुननेमें और स्मरण करनेमें सुन्दर और नीक नहीं लगता है अथवा कहने से और सुनने से स्मरण करनाहीं सुन्दर ठीकहै काहेसे कि बिना स्मरणकिये ठीक नहीं है चाहै कुछकरै यहांपै गोस्वामीजी ने इस चौपाई में तीन बातकहीं प्रथम कहना तब सुनना इससे परस्पर सत्संग जनाये कि संतनकै सत्संगभी करना चाहिये काहेसे कि बिना सत्संग किये कुछ नहीं होता है तिसमें भी यह देखाये कि सत्संग में भी केवल रामनामहीं के यश कहना अथवा सुनना दूसरी बात न कहना न सुनना काहे से कि और सब वृथा है पुनः॥ तीसरा सुमिरत सुठि नीके कहा इससे यह देखाये कि कहने और सुनने से स्मर्ण करना अति नीकहै काहेसे कि कहा सुना और स्मर्ण न किया तो कौन कामहै जैसे नानाप्रकारके पदार्थ रात्रि दिन बखाने और भोजन न करे तो कौन कामके तैसही यहांपै कहना सुनना जो है सोई तो बखानना है और प्रेमपूर्वक स्मर्ण करना जोहै सो भोजन करना है ताते कहनेंसे और सुनेंनसे स्मरण करना सर्वोपरि है और यही सत्संग के मुख्य फलहैं नहींतो सत्संग करना वृथाहै इससे अंतमें सुमिरत सुठि नीके कहा पुनः॥ वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसा है कि राम लषण के समान तुलसी को प्रिय है यहांपै राम लक्ष्मण के समान कहनें से यह पाया गया कि रकार श्रीरामजी हैं और मकार श्रीलक्ष्मणजी हैं यहां पै पूर्वोक्त मनोहर बचन के अर्थ स्पष्ट होगये अब यहांसे ब्रह्म जीवकी उपमा देके रकार मकार को वर्णन करते हैं और रकार मकार की जो सेव्य सेवक भावकी प्रीतिहै सो दिखातेहैं ३ मूल—

बरणत बरण प्रीति बिलगाती॥
ब्रह्मजीवसम सहज सँघाती॥ ४

अर्थ—अब श्रीगोस्वामी जी रकार मकार दोऊ अक्षर की जो परस्पर प्रीति है स्वामी सेवकभाव की सो दिखाते हैं श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि बरणत नाम वर्णन करत मात्र में बरण जो अक्षर है अर्थात् रकार मकार तिनके जो स्वामी सेवक भाव की प्रीति है सो बिलगाती नाम न्यारी होती है भाव जबतक रकार के स्वरूप और मकार के स्वरूप भिन्न २ करके नहीं बर्णन करो तबतक यह नहीं जान परती है कि कौन ब्रह्मस्वरूप है और कौन जीवस्वरूप है और किनकी प्रीति कौन भावकी है यह बिना बर्णन किये नहीं बिलगाती है और जब भिन्न २ करके वर्णन करो तो बर्णतमात्र में स्वामी सेवकभाव की प्रीति बिलगाती है यहांपै केवल प्रीति जो है स्वामी सेवक भाव की दोऊ अक्षरकी सो वर्णन करने से बिलगाती हैं कुछ रकार मकार दोऊ अक्षर नहीं

बिलगाते हैं और न इनदानोंकी प्रीति भिन्नहोती है प्रीति तो सर्वदा संग बनी रहती है केवल प्रीति के जो भेद हैं स्वामी सेवकभाव की सो वर्णन करने से बिलगाती है यहां पै वर्णन करने से प्रीति बिलगाती है कुछ देखने सुनने से प्रीति नहीं बिलगाती है काहेसे कि देखने सुनने से तो सब प्रकार से बराबर है जो कहो कि बराबर कैसे हैं तो बराबर इस प्रकारसे हैं कि दोऊ अक्षर श्रावण भादौं मास हैं पुनः ॥ दोऊ आखर मधुर हैं और मनोहर हैं पुनः ॥ बरण बिलोचन दोऊ हैं जन जिय दोऊ हैं सुमिरत सुलभ सुखद दोऊ हैं लोक लाहु परलोक निबाहू दोऊ हैं पुनः ॥ कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके दोऊ हैं राम लषण सम तुलसी को दोऊ प्रियहैं पुनः ॥ ब्रह्म जीवके समान दोऊ सहज सँघाती हैं और नरनारायण के सरिस सुन्दर भ्राता दोऊ हैं जग पालक बिशेष जन त्राता दोऊ हैं भक्तिरूपी सुन्दर स्त्री के कर्णपूर दोऊहैं जगहित हेतु बिमल चन्द्रमा सूर्य दोऊ हैं सुगति रूप अमृत के स्वाद तोषसम दोऊ हैं पुनः ॥ कमठ शेष सम बसुधाधर दोऊ हैं जन मन कंजके दोऊ भ्रमर हैं पुनः ॥ जिह्वारूप यशोदाजी को कृष्ण बलदेव सम दोऊ प्रियहैं पुनः ॥ अंतमें एक छत्र एक मुकुटमणि होके सब अक्षर पै दोऊ बिराजमान हैं भाव अनिर्वचनीय दोऊ हैं इसी प्रकारसे तत्त्व महत्व अथवा रूप करके दोऊ बराबर हैं परंच परस्पर प्रीति जो है सो स्वामी सेवक भाव की है सो बिना बर्णन किये नहीं बिलगाती है जब बर्णन करो तब जान पड़ते हैं कि रकार ब्रह्मके स्वरूप हैं और मकार जीवके स्वरूप हैं और रकारकी प्रीति मकारसे सेवकभाव की है और मकार की प्रीति रकारसे स्वामीभाव की है यहस्वामी सेवकभाव की प्रीति बिना वर्णन किये नहीं बिलगाती है पुनः ॥ वह दोऊ अक्षर कैसेहैं कि ब्रह्म और जीवके समान सहज नाम स्वाभाविकीय सँघाती नाम साथी हैं भाव जैसे ब्रह्म और जीव सदा साथ रहते हैं कदापि कोई कालमें भिन्न नहीं होते हैं तैसेही रकार मकार सर्वदा साथ रहते हैं कोई कालमें बिलग नहीं होते हैं इससे रकार मकार की केवल प्रीतिही बिलगाती है कुछ रकार मकार नहीं बिलगाते हैं इसी वास्ते गोस्वामीजी ने ब्रह्म जीवकी उपमा दियाहै इससे यहां पै यह अर्थ जानना चाहिये कि जैसे ब्रह्म और जीव दोऊ देखने में समहैं और सहज सँघाती हैं परन्तु परस्पर प्रीति स्वामी सेवक भावकी है यथा ॥ सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥ इत्यादि कहाहै सो यह स्वामी सेवकभाव की प्रीति बिना बर्णन किये नहीं बिलगाती है जब दोनों को यथार्थ भिन्न करके बर्णन करो तब प्रीति बिलगातीहै पुनः ॥ राम लषण समं प्रिय तुलसीके इति यहां पै भी राम लक्ष्मण सब प्रकारसे समहैं और सहज सँघाती हैं परंच प्रीति परस्पर स्वामी सेवकभाव की है सो बर्णन करो तब बिलगाती है इसी प्रकार से रकार मकार की प्रीति जानो पुनः ॥ नर

नारायण सरिस सुभ्राता इति यहां पै भी सब प्रकारसे सरिस भ्राता हैं और सहज साथीहैं परंच परस्पर प्रीति स्वामी सेवकभावकी है सो वर्णन करने से बिलगाती है पुनः ॥ कमठ शेष सम धर बसुधाके इति यहां पै भी कच्छपजी और शेषजी सब प्रकारसे समहैं और सहज सँघाती हैं परंतु प्रीति परस्पर स्वामी सेवकभावकी है सो जो वर्णन करो तब बिलगाती हैं कि कच्छपजी ईश्वर हैं और शेषजी जीवहैं इनकी प्रीति स्वामी सेवकभाव की है पुनः ॥ जीह यशोमति हरि हल धरसे इति यहां पै भी कृष्ण और हलधरजी सब प्रकारसे समहैं और सहज साथीहैं परंच परस्पर प्रीति स्वामी सेवकभावकी है सो यह वर्णन करे तब बिलगाती है इसी प्रकारसे रकार मकार दोऊ सब तरहसे बराबर है और ब्रह्म जीव के समान सहज सँघाती हैं परंतु परस्पर प्रीति स्वामी सेवकभावकी है सो यह वर्णन करने से बिलगाती है नहींतो नहीं बिलगाती है ताते यही अर्थ ठीक है और इसी वास्ते गोस्वामीजी ने सर्वत्र ब्रह्म जीवको उपमा दियाहै सो केवल प्रीति और एक साथी दिखाने के वास्ते कहाहै दूसरा हेतु नहींहै दूसरे एक गुह्याभिप्राय यह भी देखाया कि रकार श्रीरामजी हैं और मकार श्रीलक्ष्मणजी हैं पुनः ॥ ब्रह्मजीव सम कहने से रकार ब्रह्महै मकार जीवहैं पुनः ॥ नर नारायण कहने से रकार नारायण हैं और मकार नर हैं पुनः ॥ कमठ शेषसम कहने से रकार ब्रह्म स्वरूप कच्छपजी हैं और मकार जीवस्वरूप शेषजी हैं पुनः ॥ हरि हलधरसे कहने से रकार ब्रह्मस्वरूप कृष्णजी हैं और मकार जीवस्वरूप हलधरजी हैं भाव जो है सो रामनामहीं है इससे यह दिखाये कि रामनामही से सर्वावतार होते हैं ताते रामनाम सर्वोपरि है और जो कदापि यह अर्थ करो कि जैसे ब्रह्म और जीव सहज सँघाती हैं परंच माया करके जीव ब्रह्म भिन्न होजाते हैं तैसेही रकार मकार दोऊ सहज सँघाती हैं परंतु वर्णनरूप उपाधि करके रकार मकार की प्रीति बिलगहोजाती है अर्थात् अक्षरांतर होजाती है तो यह अर्थ ठीक नहीं है काहेसे कि रकार मकार प्राकृत अक्षर तो है नहीं यहतो नित्य है और मायासे रहित है कभी कोई कालमें भिन्न नहीं होते हैं और जो रकार मकार भिन्न होगया तो राम शब्दही नहीं सिद्ध होगा काहेसे कि राम शब्द तो तब होगा कि जब रकार मकार दोऊ एकत्र होगा और राम शब्द जोहै सो अनादि है जबकि वेद भी नहीं रहा न अक्षरही रहा तबसे हैं इससे पवर्गी मकार और यवर्गी रकार रामनाम नहीं है रामनाम तो इन सब अक्षरन के कारण है इससे यह अक्षर वाला रकार मकार रामनाम को कहना बड़ा अयोग्य है और हँसीकी बात है हां इतनी बात अवश्य करके है कि उस नित्य रकार मकार को जानने वाला यह अक्षर वाला रकार मकार है याने इस रकार मकार से नित्य रकार मकार जो रामनाम है सो ग्रहण होती है और ब्रह्मजीव तो कदापि कोई

कालमें भिन्न नहीं होते हैं चाहै जहां जिस योनिमें जीव सर्वदा साथ रहते हैं काहेसे कि ब्रह्म और जीव दोनों परस्पर सखा है यथा ॥ (प्रमाण) द्वासुपर्णासयुजासखाया समान वृक्षंपरिषस्वजाते। तयोरेकः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नोऽभिचाकशीतीतिश्रुति ॥ १ ॥ अर्थ ॥ दो पक्षी संग संग रहने वाले परस्पर सखा एक समान वृक्ष पर रहते हैं उनमें से एक उस वृक्षके स्वाद फल खाते हैं दूसरा खाये बिना प्रकाशते हैं भाव ईश्वर और जीव परस्पर सखा हैं दोनों सदा संग रहते हैं सो एक सरीखे देहमें रहते हैं उनमेंसे जीव जोहै सो शरीर करके उत्पन्न शुभाशुभ कर्मरूप फलोंको भोगते हैं और ईश्वर जो है सो साक्षीमात्र प्रकाशक है इत्यादि वेदमे लिखा है इससे ईश्वर जीव सर्वदा संग रहते हैं कभी भिन्न नहीं होते हैं तैसेही रकार मकार कभी भिन्न नहीं होते हैं सदा संग रहते हैं इससे पूर्वोक्तही अर्थ ठीक है और कोई २ महात्मालोग यभही अर्थ करते हैं कि रकार मकार दोऊ अक्षर वर्णन करने में वर नाम श्रेष्ठ हैं और परस्पर जो प्रीति है सो न बिलगाती नाम नहीं बिलग होती है भाव सर्वदा संग बनी रहती है परंच अर्थ पूर्वोक्तही ठीक है काहेसे कि स्वामी सेवकभावकी प्रीति बिलग न होगी तो जान कैसे परेगी कि रकार ब्रह्म हैं और मकार जीव हैं यहां पै गोस्वामीजी का आश्चर्य्य कहना है ॥ ४ ॥ मूलः—

नर नारायण सरिस सुभ्राता। जगपालक बिशेषि जनत्राता ॥ ५ ॥

अर्थ—पुनः वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसे हैं कि नर और नारायण के सरिस नाम बराबर सुनाम सुष्टु भ्राता नाम भाई हैं अर्थात् जैसे धर्मकी पत्नी में नर और नारायण दोऊ मूर्त्ति ने अवतार लेके जग नाम सम्पूर्ण संसार का पालन किया और जन जो दास हैं तिनके विशेष करके त्राता नाम रक्षा किये तैसेही रकार मकार जो दोऊ अक्षर हैं सो सम्पूर्ण संसार का पालन करनेवाले हैं और जन जो दासहैं अर्थात् नामजापक तिनके विशेष करके रक्षक हैं (शङ्का) यहां पै गोस्वामीजी ने दो बातें कही एक तो सरिस सुभ्राता कहा दूसरा जनत्राता विशेष कहा तिसमें जनत्राता तो विशेष हुई हैं काहे से कि दास अतिशय प्रियहैं इससे विशेष कहा परन्तु सुभ्राता क्यों कहा काहे से कि नर नारायण तो धर्म्मके यहां जन्म लिया ताते सुभ्राता कहे गये और रकार मकार तो माता पिता से रहित हैं तो सुभ्राता कैसे भए काहे से कि विना माता पिता के सुभ्रातृत्व होना असम्भव है इसका क्या अभिप्राय है (उत्तर) इसका अभिप्राय यह है कि जब यहां पै ग्रन्थकार स्वामी ने सरिस सुभ्राता कहा है तो निश्चय करके रकार मकार माता पिता है काहे से कि माता पिता न होता तो सुभ्राता कभी

न कहते इससे ऐसा जानना चाहिए कि स्वयं रकार मकारही दशरथात्मज राम लक्ष्मण हैं और दशरथ कौशिल्यादी रकार मकार के माता पिता हैं और अनादिकाल से हैं इससे सुभ्राता कहा काहे से कि जैसा सुभ्रातृत्व रकार मकार में है तैसेही राम लक्ष्मण में है पुनः तैसेही भ्रातृत्व नरनारायण में है पुनः तैसेही भ्रातृत्व हरि हलधरमें है इससे यह दिखाया कि रकार मकारही राम लक्ष्मण भए हैं पुनः रकार मकारही नरनारायणावतार भए हैं और रकार मकारही कृष्ण बलदेव भए हैं भाव सर्बावतार राम नामहीं से होते हैं यह सिद्ध भया जैसे कि पूर्व में लिख आए हैं इससे रामनाम सर्वोपरि है और सबके आदिकारण है और जगपालक जनरक्षक रामनामहीं है भाव जब२ दासको दुःख होत दुष्टों करके तब २ रामनामही नानाप्रकार के स्वरूप धारण करके दासकी रक्षा करते हैं ताते सब छोड़िकै जनरक्षक रामनाम जपो ॥ ९ ॥ (मूल)

भक्ति सुतिय कलकरण बिभूषण ।
जगहित हेतु बिमल बिधु पूषण ॥ ६ ॥

अर्थ—पुनः वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसे हैं कि भक्ति रूप सुतिय नाम सुन्दर स्त्री के कलनाम सुन्दर करनविभूषण नाम कर्णपूर हैं अर्थात् ताटंक हैं यहां पै सब भूषण को छोड़िके ताटंक क्यों कहा इसका हेतु यह है कि कर्णपूर जो है सो स्त्री का अहिवात सूचक मुख्य भूषण है सो इसका प्रमाण युद्धकांण्ड में प्रसिद्ध है जिस समय में रामजी ने सुवेल पर्बत परसे रावण को बाण मारा है यथा ॥ छत्र मुकुट ताटंक सब हतेएकहीबान । यहां पै छत्र मुकुट नाश करके रामजी ने रावण को यह सूचित किया कि आजही तक तुम छत्र मुकुटधारी राजा रहे अब आगे नहीं काहे से कि राजाकी शोभा मुख्य छत्र मुकुटही है और मन्दोदरी को ताटंक हतिके यह व्यंचित किया कि तुम भी आजही तक अहिवाती रही अब आगे नहीं सो इस बात को मन्दोदरी ने जान भी लिया है यथा ॥ मन्दोदरी शोच उर बसेऊ । जबते श्रवणपूर महि खसेऊ ॥ इत्यादि कहा है इससे कर्णपूर स्त्री का अहिवात सूचक मुख्य भूषण है इससे कर्णभूषण कहा इससे गोस्वामीजी ने यह दिखाये कि भक्ति की भी शोभा रामनामही दोऊ अक्षर हैं भाव जिस भक्ति में रामनाम की जाप नहीं होती है वह भक्ति नहीं है और जो कदापि है भी तो बिधवा है अर्थात् उस भक्तिके पति श्रीराम जी नहीं हैं भाव रामनाम जपनाही भक्ति की शोभा है बिना रामनाम जप राम जी को प्राप्त होना दुर्लभ है पुनः वह रामनामदोऊ अक्षर कैसे हैं कि जग जो संसार है तिनके हितके हेतु नाम कारण बिमल नाम निर्मल बिधु नाम चन्द्रमा और पूषणनाम

सूर्य्य हैं यहां पै बिमल कहने का यह भाव है कि वह चन्द्रमा और सूर्य्य मायिक हैं इससे मलयुक्त हैं और यह रकार मकार जो है सो मायासे रहित है तासे बिमल कहा इससे यह दिखाये कि संसार के भी हितकर्ता एक रामनामही है दूसरा नहीं ताते राम नाम सर्वोपरि है और रकार सूर्य्य हैं मकार चन्द्रमा हैं ॥ ६ ॥ मूलः—

स्वाद तोषसम सुगति सुधाके।
कमठ शेषसम धर बसुधा के ॥ ७ ॥

अर्थ—पुनः वह रामनामदोऊ आखर कैसा है कि सुगतिनाम सुष्टगति अर्थात् मोक्ष-रूप सुधा नाम अमृत के स्वादु और तोषसमे हैं स्वाद उसको कहते हैं कि जिससे बिशेष स्वादिष्ट याने प्रिय दूसरा नहोय और तोषनाम सन्तोष उसको कहते हैं कि जिसके खानेसे फिरदूसरी बस्तु खानेकी इच्छा न होय इससे गोस्वामीजीने यह दिखाया कि जैसे अमृत में स्वाद और सन्तोष दो गुण मुख्य हैं बिना स्वाद तोषके अमृत फीका है भाव बृथा है तैसेही रामनाम दोऊ अक्षर मोक्षरूप अमृतके स्वादु और सन्तोष सम है बिना रामनामके मोक्ष फीका है याने बृथा है भाव जैसे अमृत में दो गुण प्रधान हैं और एकही दो गुणों को अमृत ने धारण किया है तैसेही मुक्ति में भी राम नामही दो गुण मुख्य हैं और यही रामनामको मुक्तिने धारण किया है भाव मुक्ति भी रामनामही जपती है यह सिद्ध भया इससे यह दिखाया कि भक्तिने भी रामनामहीं को कर्णपूर बनाके धारण किया है और मुक्ति ने भी रामनामही को धारण किया है अर्थात् भक्ति मुक्ति दोनों रामनामही जपती हैं इससे यह दिखाया कि जब भक्ति मुक्ति दोनों ने रामनामही को धारण कियाहै तो इनके जो साधन करनेवाले हैं याने भक्तिके जो साधन करनेवाले हैं भगवद्भक्त तिनको सब छोड़िके रामनाम जपना चाहिये और मोक्षके जो साधन करनेवाले हैं ज्ञानी लोग तिनको भी सब खटका छाड़िके एक राम नाम जपना चाहिये तब तो कल्याण है नहीं हो चौरासी तो बनी हैं पुनः वह राम-नाम दोऊ अक्षर कैसेहैं कि बसुधा जो पृथ्वी है तिनके धरनाम धारण करने में कमठ जो कच्छप जी हैं और शेषजो हैं तिनके समान हैं भाव रामनामही ने कमठ शेष होके पृथ्वीका धारण कियाहै अथवा नामहीं के बलसे दोऊ ने धारण किया है इससे यह दि-खाये कि पृथ्वी को भी रामनामही ने धारण किया है यहां पै पृथ्वी के धारण करने वाले दो क्यों कहा इसका हेतु यह है कि एक तो रामनाम दोऊ अक्षर के प्रकरण दिखाये दूसरा पृथ्वी के धारण करनेवाले मुख्य दोई हैं याने शेषजी के आधार कच्छप हैं और कच्छपजी निराधार हैं तैसेही मकार के अधार रकार है और रकार निराधार है भाव जो कुछ है सो नामही है और सब भ्रम है ॥ १ ॥ मूलः—

जन मन मंजु कंज मधुकरसे।
जीह यशोमति हरि हलधर से॥ ८

अर्थ—पुनः वह राम नाम दोऊ अक्षर कैसा है कि जन जो दास हैं तिनके मन जो हैं सोई तो मंजु नाम कोमल कंज नाम कमल हैं अथवा जनके जो मंजु नाम निर्मल मनहैं सोई तो कमलहै तिसके विहार करनेवाले मधुकर नाम भ्रमरहैं. यहां पै भौंराही अर्थ ठीक है काहेसे कि भँवर कमलका बड़ा स्नेही होता है इससे मधुकर इहां पै कोई २ महात्मालोग कहते हैं कि राम नाम तो दो अक्षर हैं पुनः दो भ्रमर होके एक कमल में कैसे वास करेंगे पुन कोई २ ज्ञाता लोग यह भी कहते हैं कि कमलके सम्पुटित होनेसे भँवरको खेद और संकोच होता है तैसेही राम नाम कोभी होगा इत्यादि बहुत सन्देह करते हैं सो यह सन्देह करना ठीक नहीं है काहेसे कि जन मन कंजके बासी श्रीरामजी को सर्वत्र कहा है इहां पै उदाहरण देनेसे ग्रन्थविस्तार होजावैगी ताते जान लीजिये और कमलकी अथवा भ्रमरकी तो केवल उपमामात्र है जैसे कि सुतीक्षणजी ने कहाहै कि अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बाण धर राम। मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा यह काम॥ इति देखिये इहां पै सुतीक्षणजी ने कहा कि आप लक्ष्मणजी और जानकीजी सहित तीनों मूर्ति हमारे हृदयरूप आकाशमें चन्द्रमा होके बास करिये अब जो इहां पै कहो कि चन्द्रमा तो आकाशमें एकही होताहै तीन चन्द्रमा कैसे बसेंगे तो यह कहना सर्वथा आयोग्य है तैसेही इहां पै जानना चाहिये इससे भी मुख्यार्थ भँवरही क है अब दूसरा अर्थ दोऊ अक्षरानुकूल सुनो श्री गोस्वामीजी कहते हैं कि जन जो दासहैं तिनके मन जो हैं सोई तो कोमल कमलहैं तिनके पालन पोषण करने के वास्ते रकार मकार दोऊ अक्षर कैसाहै कि मधुर नाम जल और कर सूर्य के किरणसे है इहां पै करनाम सूर्य क नहीं हैं किंतु महात्मालोगों ने कार्यसे कारणको ग्रहण कियाहै इस करके अर्थ सूर्य भी करते हैं काहेसे कि जल और दूवौ कमलके पालन पोषण करने वाले हैं जैसे कि जल होय और सूर्य न होयतो कमल प्रफुल्लित नहीं होसकते हैं और जो जल नहो तो सूर्य कमलको भस्म करदेवें यथा॥ भानु कमल कुल पोषणिहारा। बिनुजल जारि करै तेहि छारा॥ इत्यादि कहाहै ताते कमलका पोषण पालन दोनों करके होताहै इहां पै सूर्यके समान रकार जानना तिनके शांति यान शीतलकारक जलरूप मकारको जानना चाहिये जैसे पूर्व नामवन्दना में कृशानु भानुके ताप शांति अर्थ अन्तमें हिमकर मकारको कहा पुनः वह रामनाम दोऊ अक्षर कैसे हैं कि जीहयशोमति अर्थात् जिह्वारूप यशोमति को हरि श्रीकृष्णजी और हलधर श्रीबलदेवजी के समान प्रियहैं भाव जैसे बड़ी

यशस्विनी श्रीयशोदाजी को कृष्ण बलभद्र प्रियरहे तैसेही पूर्वोक्त जो जन हैं तिनकी जिह्वा को रामनाम दोऊ अक्षर प्रियहैं इहां पै सबकी जिह्वा को नहीं कहाहैं काहेसे कि सबके जिह्वाको रामनाम कहां प्रियहै इससे जिस जनगन मंजु कंजके बिहारी मधुकरसे रामनाम को कहा है उन्हीकी जिह्वाको यहभी कहाहै (शङ्का) प्रथम तो जन मंजु कंजके सोही भ्रमर रूप राम नाम को कहिबे किये तो पुनः जीह यशोमति को हरि हलधर से प्रिय क्यों कहा (उत्तर) पुनः कहनेका कारण यहहै कि प्रथम में जो जन मन कमलके सोही भँवर राम नाम को कहा इससे यह पायागया कि कमलके सोही भ्रमर हैं कुछ भँवर के सोही कमल नहीं हैं तो जैसे भ्रमर बिना बुलाये कमल के पास जाते हैं तैसेही रामनाम भी बिना बुलायेही अर्थात् बिना जप स्मर्ण किएही जनमन में आ बसेंगे इस भ्रम को मिटाने के वास्ते गोस्वामीजी ने और जिह्वाको प्रियत्व दिखाने के अर्थ जीह यशोमति को हरि हलधरसे कहा भाव जैसे श्रीयशोदाजी को कृष्ण बलदेव प्राण से प्रियरहे तैसाही जब रामनाम जिह्वा को अतिप्रिय होगी तब रामनाम जनमन मंजु कञ्जमें बसेंगे इससे जीह यशोमति कहा दूसरा एक यह भी दिखाया कि वह जिह्वा धन्यहै और बड़ा यशस्वी है जिसको श्रीरामनाम प्रियहै नहीं तो बड़ा अभागी है और यह तो प्रसिद्धही दिखाया कि जिह्वासे श्रीरामनाम जपना चाहिए ॥ ८ ॥ (मूल)

दो०। एकछत्र इक मुकुटमणि सब बरणनपर जोउ।
तुलसी रघुबर नामके बरन बिराजत दोउ. १

अर्थ—अभीतक तो रामनाम दोऊ अक्षर को बचनान्तर करके वर्णन किया अब श्री-गोस्वमीजी रामनाम के यथार्थ अनिर्वचनीय स्वरूप दिखाते हैं कि जिसको रामनाम कहते हैं इहां पै अनिर्वचनीयत्व इसवास्ते दिखाते हैं कि जिसमें ऐसा कोई न जानें कि रामनाम बचन करके कथितहै ताते मायामयी है इसभ्रमको मिटाने के वास्ते श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि एक छत्र अर्थात् रकारकी रेफ और मुकुट मणि याने मकार के अनुस्वार भावरेफ और बिन्दु याने र् ं इस प्रकार के होके सब वर्णन नाम सब अक्षरन के ऊपर जोउ नाम देखो अथवा जोउ रामनाम सो गोस्वामीजी कहते हैं कि सो रघुबरही के नाम अर्थात् दशरथात्मजही राम के नाम दोऊ वरण नाम अक्षर अर्थात् रकार मकार बिराजित नाम बिशेष करके राजित नाम शोभित होरहा है इहां पै गोस्वामीजी ने यथार्थ रकार मकार के स्वरूप दिखाये हैं काहे से कि शास्त्र के सिद्धांत से और महात्मन के सिद्धन्त से यथार्थ रामनाम के यही स्वरूप हैं और इसीको रामनाम भी कहते हैं यथा (कोशलखण्डे) रकारो ध्वजवत्प्रोक्तो मकारश्छत्रवत्तथा ॥ सर्ववर्ण

शिरस्थोहि राम इत्युच्यते बुधै ॥ १ ॥ पुनः ॥ (विष्णुपुराणे) निर्वर्णं रामनामेदं ब-र्णानां कारणं परमिति ॥ पुनः ॥ (महारामायणे शिवोवाच) निर्वर्णं रामनामेदं केवलं न स्वराधिपम् ॥ छत्रं मुकुटश्च सर्वेषां मकारोरेफ व्यंजनम् ॥ पुनः ॥ पुलस्त्य संहितायां) ॥ छत्ररूपोरकारोस्ति अनुस्वारः शिरोमणिः । राजराजाधिराजति तस्माद्राम शिरोमणिः ॥ इत्यादि बहुत प्रमाण हैं इससे छत्र मुकुट होके सर्वऽक्षर पै रामनामही बिराजमान होरहे हैं और रामजी के मुख्य नाम यही है इसीसे रामजी को राजाधिराज पदवी है दूसरे को राजा पदवी नहीं है और रघुबर कहने का यह भाव है कि रेफ और बिन्दु दोनौं पूर्णैश्वर्य हैं इससे रघुबर कहिके यह जानिये कि दशरथात्मजही रामका वह अनिर्वचनीय निर्गुण निराकार नाम है दूसरे रामको नहीं है इससे जैसे पूर्व नाम बन्दना में रघुबर कहाहै तैसेही आशय इहां पै भी इससे रघुबर कहा आगे इसी छत्र मुकुटको गोस्वामीजी नें रामनाम कलामणिकोषमंजूषामें सिद्धान्त किया सो देखिलीजियेगा और यह दोहा जो है सो रामायण भरेमें बिलक्षण है काहेसे कि और जेतने वेद पुराण शास्त्र हैं और यंत्र मंत्र हैं सो सब कथितहैं और अक्षर मय हैं और श्रीरामनाम जो है सो निर्वर्ण है अक्षरा-तीत है इससे रामनाम के समान दूसरा कुछ नहीं है काहेसे कि और जितनी बस्तु हैं सो सब अक्षरमयहैं ताते कालग्रसित हैं और रामनाम जोहै सो निर्वर्ण है इससे मायासे कालसे रहित है यह परम सिद्धांत है इसमें सन्देह न करना चाहिये और इस दोहा के पूर्ण अर्थ जिसको जानना हो सो गोस्वामीजी कृत रामनाम कलामणिकोष मंजूषा को लेके देखिये काहेसे कि यह दोहा आश्चर्य है इसके अर्थ बूझतेही बनता है और छत्र मुकुट कहिके यह दिखाये कि जैसे राजा की शोभा छत्र मुकुट करके है तैसेही सर्वा-क्षरकी शोभा रामनाम करके है भाव सब अक्षरके सार रामनाम है रामनाम रहित सब अक्षर बृथाहैं अब इहां पै रकार मकार दोऊ अक्षर को गोस्वामीजी नें अनिर्वचनीय कहिके समाप्त किया आगे इसी प्रकारके श्रीसीतानामको भी समझना चाहिये काहेसे कि युगु-लस्वरूप तत्व करके एकही हैं इससे शालिसुदास के बृद्धिकारक श्रीसीतानाम को भी श्रावण भादौं मास जानना चाहिये और आखर मधुर मनोहर दोऊ जानौं वरण बिलोचन दोऊ जानौ सुमिरत सुलभ और सुखद सब काहू को जानब लोक लाहु परलोक निबाहू दोऊ जानब आगे कहांतक लिखें इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये ॥ २ ॥ मूलः—

समुझत सरिस नाम अरु नामी।
प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥ १ ॥

अर्थ—इहांतक तो गोस्वामीजी ने श्रीरामनाम का तीन क्रमसे वर्णन किया याने प्रथम

तीन अक्षर करके कहा पीछे महामंत्र अर्थात् षडक्षर कहिके वर्णन किया तिसके पीछे दो अक्षर कहिके दोहा पर्यन्त वर्णन किया इसका हेतु यहहै कि कोई महात्माने रामनाम को तीन अक्षर कहिके वर्णन किया है कोई २ महात्माने षडक्षर कहाहै कोई २ दो अक्षर कहिके कथन किया है इससे गोस्वामीजी ने तीनहूँ प्रकारसे कहा तिसमें रामनाम दोऊ अक्षर को पीछे परस्पर स्वामी सेवक याने ब्रह्म जीवकी उपमा देके वर्णन किया और रकार मकार की जो सेव्य सेवक भावकी अद्भुत प्रीतिहै सो बिलग करके देखाया और केवल रामनामहीं को सब तरहसे सर्वोपरि कहा इससे यह पायागया कि जो कुछ है सो एक नामहीं है नामी कुछ नहीं है इस भ्रमको मिटाने के वास्ते अब नाम नामी को वर्णन करते हैं और नाम नामी की समता देखा के नाम नामी की जो परस्पर स्वामी सेवक भावकी प्रीति है सो वर्णन करते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि नाम जो रामनाम है और नामी जो श्रीदशरथात्मज राम हैं सो दोऊ तत्व करके समुझत में सरिस नाम बराबर हैं परंच नाम नामी की जो परस्पर प्रीति नाम स्नेह है सो प्रभु अनुगामी के हैं भाव जैसे प्रभु नाम स्वामीके और अनुनाम पीछे गामी नाम गमन करनेवालेके अर्थात आज्ञाकारी सेवक के परस्पर स्वामी सेवकभाव की प्रीति होती है तैसाही नाम नामी की परस्सर प्रीति है यहांपै ग्रन्थकार स्वामी ने नाम प्रथम कहा पीछे नामी कहा पुनः तिसके आगे प्रभु प्रथम कहा पीछे अनुगामी कहा इससे यह जान पड़ता है कि नाम० की नामी से स्वामीभाव की प्रीति है और नामी की नामसे सेवकभाव की प्रीति है यहां पै पूर्वोक्त चौपाई का अर्थ स्पष्ट होगया जैसा कि प्रथम कहा कि बरणत बरण प्रीति बिलगाती ॥ अर्थात् जैसे वहां रकार मकार सब प्रकारसे सरिस है परञ्च प्रीति परस्पर स्वामी सेवकभाव की है सो वर्णन करने से बिलगाती है तैसेही यहांपैभी नामनामी सब प्रकारसे तत्त्व महत्त्व करके समुझन में सरिस हैं परन्तु प्रीतिमात्र परस्पर स्वामी सेवकभाव की है भाव नामके आधीन नामी हैं सो गोस्वामीजी आपही आगे कहेंगे कि॥ सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे। आवत हृदय सनेह विशेषे ॥ इत्यादि कहेंगे और इसी से अनुगामी कहा है काहेसे कि नाम जपनेवाले के पीछे २ रूप याने रामजी को चलना पड़ता है इससे सौलभ्यता गुणसे नाम सर्वोपरि है ॥ १ ॥ (मूल)

नाम रूप दुइ ईश उपाधी।
अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥ २ ॥

अर्थ—पुनः वह पूर्वोक्त नाम और रूप अर्थात् नामी दोऊ समुझत में कैसे सरिस हैं सो दिखाते हैं कि नाम जो रामनाम है और रूप जो श्रीदशरथात्मज रामहैं यही दे

ईश नाम ईश्वर हैं अथवा समर्थ हैं यहांपै दो कहनेका यह भावहै कि तीसरा ईश्वर नहीं है दोई हैं पुनः यही नाम रूप दुइ उपाधी नाम धर्म्मचिन्तक हैं यहां पै उपाधी के अर्थ धर्मके विषय चिन्ता करना, यथा ॥ (उपाधिर्धर्मचिन्तायामितिविश्वकोषे अथवा मेदिनीयाम् ॥) इत्यादि प्रमाण हैं इससे उपाधीके अर्थ धर्मचिन्ताही ठीकहैं काहेसे कि नाम रूप दोनों धर्मरक्षक हैं और दोनों धर्मचिन्तक हैं जो कहो कि धर्म किसको कहते हैं।जिसके चिन्तक नाम रूप दोनों हैं तो सुनो धर्म इसको कहते हैं कि अपने२ वर्णाश्रम अनुकूल धर्म जैसाकि भगवत ने वेद में निर्माण किया है सो सब करना उस वदोक्तधर्म को नष्ट होने से और साधु ब्राह्मणको दुःख होनेसे इनके रक्षार्थ नाम रूप को धारण करना याने नानाप्रकार के अवतार लेना यथा प्रमाण (गीतायां) यदायदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानंसृजाम्यहम् ॥ १ ॥ परित्राणायसाधूनां बिनाशायचदुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामियुगेयुगे ॥ २ ॥ इत्यादि प्रमाण हैं इससे नाम रूप दोनों धर्मचिन्तक और धर्मरक्षक हैं अथवा ॥ रक्षिताजीव लोकस्य धर्मस्यपरिरक्षिता ॥ रक्षितास्वयधर्मस्य स्वजनस्यचरक्षिता ॥ इत्यादि श्रीमद्वाल्मीकि के प्रमाण से स्वकीय शरणागत रूप जो विशेष धर्म है तिनके रक्षक नाम रूप दोऊ हैं इससे धर्मचिन्तक हैं पुनः ॥ जबजब होहि धर्मकी हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥ करहिं अनीति जाय नहिं बरणी। सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी ॥ तबतब प्रभु धरि विविधि शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥ असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु। जग विस्तारहिं बिमल यश राम जन्मकर हेतु ॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे नाम रूप दोनों धर्मचिन्तक हैं जो कदापि कहो कि अवतार लेना उपाधी है काहेसे कि भगवत् तो अजन्मा है तो यह कहना ब्रह्ममूर्खता है काहेसे कि भगवत अवतार न लेंग तो धर्मकी कैसे रक्षा होगी ताते अवतार होना सदा प्रमाणहै यहां पै बहुतेरे मूर्खलोग कहते हैं कि अवतार वेदमें नहीं लिखा है सो मूर्ख इतना नहीं जानते हैं कि सब वेदोंका सार गीता और बाल्मीकीय रामायण है इसमें जब अवतार होना लिखाहै तो क्या वेदमें न लिखाहोगा ताते अवतार होना सर्वत्र प्रमाण है इसमें सन्देह न करना चाहिए भगवतके अवतार दिव्यहैं याने मायासे रहितहै यथा (गीतायां) जन्मकर्मचमेदिव्य मेवंयोवेतितत्त्वतः। त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्म नैतिमामेतिसोऽर्जुन ॥ इत्यादि प्रमाण है इससे भगवत्के अथवा भगवद्दासके जन्म कर्म दिव्य हैं इससे उपाधिके अर्थ यहां पै धर्मचिन्ताही के हैं काहेसे कि रामजी बड़े धर्मरक्षक हैं सो वाल्मीकादिने सर्वत्र कहाहै इसीसे गोस्वामीजी कहते हैं कि नाम और रूप दोनों धर्मरक्षक हैं अर्थात् धर्म की रक्षाके वास्ते चिन्तना किया करते हैं काहेसे कि बिना नामरूप धारण किए धर्मकी

रक्षा हो नहीं सक्ती है और जब रूप होगा तो नाम अवश्य होगा और नाम जबहोगा तो रूप अवश्यमेव होगा ताते नाम रूप दो ईश्वरहैं और उपाधी नाम धर्मचिन्ता करके युक्तहैं यहांपै मुख्यार्थ यही है अब दूसरा अर्थ सुनो श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि नाम और रूप यही दो ईश जो सर्वोपरि श्रीसाकेतबिहारी रामजी हैं तिनके उपनाम समीप अधिनाम प्राप्ति करनेवाला है भाव बिना रामनामके जपे और बिना रामरूपके अनन्य भए सान्तानिक लोकबासियों को प्राप्ति होना दुर्लभहै दो कहनेका यह भावहै कि तीसरा करके प्राप्ति नहीं होनेवाला है जब होगा तब रामनामहीं करके अथवा रामरूपही करके होगा अथवा गोस्वामीजी कहत हैं कि नाम और रूप यही दो ईश्वरके याने परब्रह्मके उपाधी नाम बिडम्बना हैं भाव जब किसी महात्मा ने नाम स्मर्ण किया तहां प्रभुको परधामसे आना पड़ता है जैसे कि मनु इत्यादिको परधामसे आके दर्शन दिया औरभी गजादिको धायके रक्षा किया इति बिडम्बना होना पुनः जब किसी महात्माने भगवत् रूपका ध्यान किया तहां भगवत्को आके प्रगटहोना इति नाम रूप दो उपाधीहैं भाव तीसरा उपाधी नहीं है काहेसे कि जब कोई स्मर्ण करेगा तो नामहीं रूपके करेगा इससे दो कहा इसीप्रकारके बहुत भावहैं परन्तु अर्थ पूर्वोक्तही ठीक है पुनः वह नाम रूप दोनों कैसे हैं कि अकथ नाम कथन करने योग्य नहीं है और अनादिहै भाव नामरूप दोनों बीचके कल्पित नहीं हैं जबसे रूपहै तबसे नामहै और जबसे नाम है तबसे रूप है इससे दोनों अनादि हैं जो कदापि कहो कि नाम रूप दोनों ईश्वर समर्थ हैं पुनः दोनों धर्मचिन्तक हैं अथवा पर प्रभुके पास दोनों पहुँचानेवाले हैं पुनः दोनों अकथहैं अर्थात् गुण महत्वादि दो में एक के भी नहीं कहबेयोग्य हैं पुनः दोनों अनादिहैं इसी प्रकारसे समुझतमें तो दोनों सरिसहैं परञ्च इन दोनोंमें से कौनको साधन करनाचाहिए सो कृपा करके कहिए तिसपै गोस्वामीजी कहते हैं कि सुसामुझि साधी अर्थात् सुनाम सुगम समुझिकै हमने साधी नाम साधना की है अब आप सबको जो सुगम जानि परै सो साधना करो यहां पै सु के अर्थ सुन्दर नहीं हैं काहेसे कि सुन्दर तो दोनो हैं ताते सु शब्दके सुगमतेही अर्थ जानना चाहिए काहेसे कि यहांपै सुगमताकाही प्रयोजनहै यथा ॥ उभय अगम युग सुगम नामते ॥ इत्यादि आगे कहेंगे ताते सु से सौलभ्यता जानना चाहिए ॥ २ ॥ (मूल)

को बड़ छोट कहत अपराधू ॥
सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू ॥ ३ ॥

अर्थ—और जो कहा कि आपही कृपा करके हमको भी दो में एक बड़ा छोटा बता-

दें हम उनको साधें तिसपै श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि को बड़ा है को छोटाहै यह को कहै अर्थात् नाम बड़ाहै रूप छोटाहै अथवा रूप बड़ाहै नाम छोटाहै यह को कहै काहेसे कि कहने में अपराध है भाव अपराध न होता तो कहदेते ताते अपराध के भय से नहीं कहसक्ते हैं काहेसे कि सेवक को उचित नहीं है कि स्वामीके नाम, रूपको न्यूनाधिककरे इससे हम सुलभ्यतागुण वर्णन करते हैं आपही गुणको सुनिकै साधू जो साधन करनेवाले हैं सो भेदको समुझिहहिं नाम समझ लेंगे यहांपै तत्त्व महत्त्व करके बड़ा छोटा कहने में अपराध है भाव नाम सर्वेश्वर हैं सर्वरक्षक हैं सर्वव्यापी हैं सर्वज्ञ हैं और रूप सर्वेश्वर सर्वरक्षक नहीं है सर्वव्यापी नहीं है सर्वज्ञ नहीं है इत्यादि बड़ा छोटा कहने मे अपराध है इससे सर्वेश्वर सर्वरक्षक सर्वव्यापी सर्वज्ञ नाम रूप दोनों हैं याने सम्यक् प्रकारसे नाम रूप दोनों समुझत में सरिस हैं परञ्च परस्पर प्रीतिमात्र प्रभु अनुगामीके हैं इतनेहीं सौलभ्यता गुण करके नाम नामीसे अधिक है जैसे पूर्व में जो कहआए हैं कि रकार मकार सब प्रकारसे बराबर हैं परन्तु प्रीतिमात्र स्वामी सेवकभाव की है तैसेही यहांपै भी एक सुलभता गुण करके नाम रूपसे विशेष है सो सुलभता गुण आगे दिखाते हैं ॥ ३ ॥ (मूल)

देखिय रूप नाम आधीना। रूपज्ञान नहिं नाम बिहीना ॥ ४ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी ने जो पूर्व में कहा कि सुनि गुण भेद समुझिहहिं साधू। सो कब समुझिहहिं कि जब रूपको नामके आधीन देखिहहिं तब काहेसे कि रूप के ज्ञान नाम बोध नामके बिहीन नामरहित नहीं होती है (शङ्का) यहां पै गोस्वामीजी ने देखिअहि ऐसा भविष्य क्यों कहा काहेसे कि रामनाम तो प्रसिद्ध है रामरूप तो प्रसिद्ध नहीं है पुनः देखना कैसे बनेगा यहां तो सुनिहहिं कहना रहा काहेसे कि भगवत् के नाम रूपादि शास्त्रके द्वारा अथवा महात्मनके वचनद्वारा सुनी जातीहै कुछ देखी नहीं जातीहै तो फिर देखिअहि क्यों कहा (उत्तर) इसका अभिप्राय यह है कि एकतो यह रामायण कलियुग में सबको उपदेशक होगा इससे भविष्य कहा दूसरा आशय यह है कि नामके आधीन रूप देखिहैं कैसे देखिहैं कि लोकके नाम रूपके द्वारा देखिहैं भाव जैसे कोई मनुष्य है उनका नाम तो जानते हैं परन्तु रूप नहीं देखाहै तो चाहै जहां कहीं हो नामके लेने से अवश्य करके मिलेगा और नाम न मालूमहो तो मिलना दुर्लभ है इससे नामके आधीन रूपहै तैसेही लोकके नामनामी के द्वारा रामजीको भी नामके आधीन जानलेंगे इससे देखिअहि कहा आगे इसी प्रकार की दो चौपाई तक और भी जानना चाहिए ॥ ४ ॥ (मूल)

रूप विशेष नाम बिनु जाने।
करतलगत न परहिं पहिंचाने ॥ ५ ॥

अर्थ—यद्यपि करके रूप विशेष है सहीकर परञ्च नामके बिना जानेसे करतलनाम बीच हाथमें भी पदार्थ गतनाम प्राप्तहो तो भी पहिंचान न परहिं कि क्या है भाव जैसे कोई बस्तु हाथमें धरी है और नाम उस बस्तुका नहीं मालूम है तो यह न जानपड़ेगा कि यह अमुक बस्तुहै यद्यपि करके विशेष रूप से है तैसेही श्रीरामजी विशेप रूप से भी जो प्राप्तहों तो बिना नाम जाने यह न मालूमहोगा कि रामजी यही हैं इससे यह दिखाया कि भगवत् की प्राप्ति और रूप के बोधार्थ के वास्ते नाम विशेष है यहांपै रूप विशेष कहने का यह भाव है कि रूप साक्षात् देख पड़ता है और नाम जो है सो देख नहीं पड़ता है काहेसे कि नाम तो केवल एक शब्दमात्र है इससे रूप विशेष कहा परन्तु रूपके बोधार्थ नाम विशेषहै ताते साधन करने में नामहीं सुलभहै ॥ ५ ॥ (मूल)

सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे।
आवत हृदय सनेह विशेषे ॥ ६ ॥

अर्थ—इससे विना रूप देखेही रामनामको सुमिरिए नाम स्मर्ण करिए आपही पूर्वोक्त विशेष रूप स्नेहके सहित हृदयमें आवते नाम आते हैं कैसे आते हैं कि जैसे कोई मनुष्य का नाम पुकारो तहां वह मनुष्य शीघ्र आके प्राप्त होताहै तैसेही रामनामको स्मर्ण करने से रामजी शीघ्र हृदय में आजाते हैं काहेसे कि नामके अनुगामी हैं और यहांपै स्नेह विशेष कहने का यह भावहै कि नाम और नामी की परस्पर प्रीति स्वामी सेवकभावकी है इससे स्नेहके सहित न आवें तो स्वामी सेवकभाव की प्रीति काहेको है इससे नाम विशेषहै देखिए यहांपै कैसा आश्चर्य्य कहना गोस्वामीजी का है कि एक बालक भी इसको समझ सक्ताहै इससे गोस्वामीजी को धन्य है कि जिन्होंने इस तरहसे खोलके गुह्यगति अस्मदादि दुष्टजीवों को समझायाहै तोभी रामनाम में रुचि नहीं होतीहै ताते धिक्है ॥ ६ ॥

नाम रूप गुण अकथ कहानी।
समुझत सुखद न परति बखानी ॥ ७ ॥

अर्थ—जो कदापि कोई कहै कि भला नाम रूपके कुछ तो गुण कृपा करके कहिए तिसपै गोस्वामीजी कहते हैं कि नाम और रूपके जो गुणहैं अर्थात् क्षमा दया वात्सल्य करुणादि जितने दिव्यगुणहैं तिनकी जो कहानी नाम कथाहै याने नामयश सो अकथ नाम कथन करिबे योग्य नहीं है भाव प्राकृतवाणी से अकथहै इससे नाम और रूप के

जो आश्चर्य्यगुण हैं तिनकी जो कहानी है सो समुझतही में सुखद नाम सुख को देने-वाली है किन्तु वह अपूर्व सुख भी बखाना नहीं जाता भाव रसना रुकजाती है अथवा गूँगेको शक्करसम होजाताहै ताते कौन बखानि सके यथा ॥ ध्रुव प्रहलाद विभी-षण माते माती शिवकी नारी । सगुणब्रह्म माते बृन्दावन अजहुँ न छुटी खुमारी ॥ सुर नर मुनि जेते पीर अवलिया जिनर पिया तिन जाना । कहै कबीर गूँगे को शक्कर क्योंकर करै बखाना ॥ इत्यादि कबीरजीने बीजकमें कहाहै ताते रामनाम ऐसाही अद्भुत है इसमें सन्देह न करना चाहिए सांई दशा प्राप्तिवाला हाल यहांपै ग्रन्थकार स्वामी ने लिखाहै इससे को कैसे कहै आगे यहां पर्य्यन्त गोस्वामीजी ने नाम और रूपका वर्णन किया और नाम नामीके स्वामी सेवकभावकी प्रीति दिखाके केवल एक सौलभ्यतागुण करके नामको नामीसे विशेष कहा इस सुलभता गुणको सुनके साधू याने साधनकरने वाले समुझिहहिं भाव नामनामी से सुलभता गुण करके अधिक है और सब गुणोकरके दोऊ सरिस हैं ताते नामका साधन करो और हमने भी यही सुलभता गुणको सुसामुझि साधी है यह साधन करनेवालेको उपदेश किया इसी प्रकारसे नाममें विशेषत्व दिखाके और जैसे पूर्व में रकार मकारको एक छत्र एक मुकुटमणि कहके वर्णन किया और अनिर्वचनीयत्व दिखाके समाप्त किया तैसेही यहांपै भी नामनामी के गुण अकथ कहके अर्थात् अनिर्वचनीय कहके समाप्त किया अब आगे सगुण निर्गुण के साक्षी नाम को दिखाते हैं ॥ ७ ॥ (मूल)

अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी ।
उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥ ८ ॥

अर्थ—अब निर्गुण सगुणके प्रबोधार्थ नामको विशेष दिखाते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि अगुण जो निर्गुण ब्रह्म हैं अर्थात् अन्तर्य्यामी और सगुणब्रह्म जो सर्वोपरि श्री रामजी हैं यहां पै सगुणब्रह्म अवतारादि को नहीं कहा है काहेसे कि अवतार तो केवल कार्य्यार्थ सगुण होते हैं कुछ नित्य सगुण नहीं है और जो कदापि विष्णुनारायण अथवा विराटादिको सगुण कहो तो यह भी अनादि सगुण नहीं है काहेसे कि यह सब संसार-ही के कार्य्यार्थ सगुण भए हैं दूसरे यह सब रामजीके अंशहैं यथा (प्रमाण) यस्यांशे नैवब्रह्मा विष्णुमहेश्वरा अपिजातामहाविष्णुर्यस्यादिव्यगुणाश्च । सएवकार्य्यकारणयोः परमपुरुषो रामोदाशरथिर्वभूवः ॥ इत्यथर्वणश्रुतिः ॥ इत्यादि बहुत प्रमाण हैं यहांपै प्रमाण देने से ग्रन्थविस्तार होजायगा ताते थोड़ेही में जानलें इससे नारायणादि भी नित्य सगुण नहीं हैं और यहांपै नित्य सगुण ब्रह्मको कथन करते हैं ताते नित्य सगुण ब्रह्म रामहीजी को जानना चाहिए और आगे इसी निर्गुण सगुण ब्रह्म को गोस्वामीजी

स्पष्ट खोलिके वर्णन करेंगे कि ॥ अगुण सगुण दुइ ब्रह्म स्वरूपा ॥ इत्यादि विस्तारपूर्वक कहेंगे तहांपै नाम खोलके कहेंगे सो देख लेना तातें यहांपै सगुणब्रह्म श्रीरामहींजीको जानव सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि निर्गुण और सगुणब्रह्मके बीचमें रामनाम सुसाखी है यहां पै सुसाखी कहने का यह भावहै कि एक साखी नाम गवाह इसतरहके होते हैं कि पक्षपात कहते हैं भाव एक तरफ कहते हैं एक तरफ नहीं तैसा रामनाम नहीं है कि निर्गुणको कहैं सगुणको नहीं अथवा सगुणको कहैं निर्गुणको नहीं यह तो औरही साधन के अथवा मतके काम हैं कि जिसको कहने लगें उसीको कहैं औरका पक्ष नाश करदेना तैसा कुसाखी रामनाम नहीं है रामनाम तो निर्गुणब्रह्म और सगुणब्रह्म दोनों को यथार्थ कहते हैं कि जिसमें भ्रम न होय इससे सुसाखी कहा भाव रामनामको छोड़िकै और जितने साधन हैं सो सब कुसाखी हैं काहेसे कि और सब साधन से निर्गुण सगुणका यथार्थ हाल मालूम होना दुर्लभ है और रामनाम में तो निर्गुण सगुण दोनों ब्रह्मस्थित हैं इससे नाम यथार्थ कहदेता है इससे यह दिखाया कि निर्गुण ब्रह्म के जो उपासक हैं ज्ञानीलोग और सगुणब्रह्मके जो उपासक हैं भक्तलोग तिन दोनोंको रामनाम जपना चाहिए विना नामके जपे निर्गुण सगुणकी यथार्थ व्यवस्था न मालूम होगी इससे सुसाखी कहा पुनः वही रामनाम उभय नाम पूर्वोक्त दोनों निर्गुण सगुण ब्रह्मके प्रबोधक अर्थात् प्रकर्ष करके बोधक नाम बोध करानेवाले चतुर दुभाषी हैं इति प्रथम में तो निर्गुण और सगुण ब्रह्मके स्वरूपमात्र यथार्थ कहनेवाले रामनामको सुन्दर साक्षी कहा और अब निर्गुण सगुण ब्रह्मकी जो सम्पूर्ण व्यवस्था है तिसके प्रकर्ष याने दृढ़बोध करानेवाले नामको चतुर दुभाषी कहा भाव केवल यथार्थ कहनेहींवाले नहींहैं किन्तु निर्गुण सगुणब्रह्मके दृढ़बोध भी करानेवाला रामनाम चतुर दुभाषी है यहां पै चतुर दुभाषी कहनका यह भावहै कि बिना चतुरदुभाषी के भए प्रकर्ष याने दृढ़बोध होना असम्भव है और विना दृढ़बोध भए ठीक न होगा काहेसे कि निर्गुण और सगुण देश बहुत कठिन है इससे नामको चतुरदुभाषी कहा भाव सामान्य दुभाषी से साधारणबोध होगा किन्तु प्रबोध याने दृढ़बोध न होगा कुछ सन्देह बना रहेगा और चतुरदुभाषी से साङ्गोपाङ्ग प्रबोध होजायगा भाव सन्देह न रहेगा इससे चतुरदुभाषी कहा भाव जैसे दक्षिण देशमें जब इस देशके मनुष्य जातेहैं तो दोनोंके एकत्र होनेपै इनकी बोली उनको नहीं जान पड़ती है उनकी बोली इस देशवालेको नहीं जान पड़ती है तहांपै दुभाषीलोगों ने दोनोंको दोऊ देशकी बोलीमें समझाके प्रबोध करादेते हैं तिसमें चतुर दुभाषी जो हैं अर्थात् जिनको दोनों देशकी सम्पूर्ण भाषा मालूम है तिनसे अच्छीतरह से प्रबोध होताहै किसी बातका सन्देह नहीं रहता है और सामान्य दुभाषी जो हैं

अर्थात् जिन्होंने प्रयोजनमात्र दोनों देशकी भाषा सीखलिया है तिनसे यथार्थ प्रबोध होना दुर्लभ है भ्रम बना रहेगा तैसाही निर्गुण सगुण देशके जो हैं वासी याने उपासी तिन दोनों के एकत्र होनेपै निर्गुण उपासनावालेको सगुण उपासनावाले अटपट जान पड़ते हैं अर्थात् विरोध मालूम होताहै और सगुण उपासनावालेको निर्गुण उपासनावाले विरोधी जान पड़ते हैं तहांपै रामनाम जो चतुर दुभाषी है याने निर्गुण सगुण देशके पूर्णज्ञाता सो दोनों उपासना वालेको अच्छो प्रकार से समझाके प्रबोध करादेते हैं इसका पुरुषार्थ यह है कि निर्गुण और सगुणवाले को सब साधनोंको छोड़िके केवल रामनाम जपना चाहिए काहेसे कि और जितनी साधना हैं अथवा मत मतान्त सो सब सामान्य दुभाषी हैं तिन सबसे यथार्थ प्रबोध होना दुर्लभही हैं और रामनाम के जपने से यथार्थ प्रबोध होजावेगा ताते जिस किसीको निर्गुण सगुणकी सम्पूर्ण व्यवस्था जानना होवे सो रामनाम चतुरदुभाषी से मिले अर्थात् रामनामको जपे तबतो ठीकहै नहीं तो रामनामके बिना निर्गुण सगुण देश न जान पड़ेगा केवल मत्थाही कूटके रहना होगा ताते सब छोड़के रामनामही जपना उचित है काहेसे कि रामनाम में निर्गुण सगुण ब्रह्म दोनों स्थितहैं इससे रामनाम जपने से दोनों के यथार्थ स्वरूप प्रकाशित होजाते हैं भाव निर्गुण सगुण दोनों ब्रह्म रामनाम के आधीन हैं इससे रामनाम सर्वोपरिहै ॥८

दो० । रामनाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेर जो चाहसि उजियार ॥३॥

अर्थ—अब वह पूर्वोक्त निर्गुण सगुण ब्रह्मके प्रबोध होनेके वास्ते गोस्वामीजी अपने द्वारा उपाय बताते हैं कि हे तुलसी जो तुम भीतर और बाहेर अर्थात् भीतर निर्गुण ब्रह्म यानें अन्तर्यामी और बाहेर सगुण ब्रह्म श्रीरामजी इन दोनों स्वरूपके उजियार नाम प्रकाश चाहसि नाम चाहना करता है तो रामनाम रूपमणि दीपको जिह्वारूप देहरी द्वारपै धरु भाव जैसे मकानमें द्वार होताहै उसद्वारपै देहरी होतीहै उस देहरी पै दीपक बारि देने से भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश होताहै तैसेही तुम भी शरीररूपी मकान में जो मुखरूप द्वारहै उस द्वार पै जो जिह्वारूप देहरी है तिसपै रामनाम रूप मणि दीप को धरु ज्यों भीतर बाहर अर्थात् निर्गुण सगुण ब्रह्मके देखने के वास्ते उजियार नाम प्रकाश चाहसि तो और निर्गुण सगुणके प्रकाश याने प्रबोध न चाहसि तो मति धरु यहांपै मणिदीप कहनेका यह भावहै कि दीप अशुद्ध है दूसरे हिंसा बाधा करके युक्तहोते हैं ताते नहीं कहा और मणिदीप जो है सो शुद्ध होते हैं और हिंसा बाधा से रहित होते हैं सदा एकरस रहते हैं और विषय बातसे अबाधित रहते हैं इससे मणिदीप कह

इसीसे जहां कहीं दीपकी उपमा आई है तहां पै मणि दीपही कहाहै यथा॥ रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर। बसै गरुड़ जाके उर अन्तर॥ परमप्रकाश रूप दिन राती। नहिं कछु चाहिय दिया घृत बाती॥ मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभवात नहिं ताहि बुझावा॥ प्रबल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सुलभ समुदाई॥ खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसै भक्ति जाके उरमाहीं॥ इत्यादि सर्वत्र कहा है इससे मणिदीप कहा काहेसे कि मणिदीप सब प्रकारसे उत्तम होते हैं और दीपक सब प्रकार से अयोग्य होतेहैं सो दीपक ज्ञानमें गोस्वामीजी ने कहाहै ताते दीपमें बड़ा दुर्दशा होता है इससे दीपको नहीं कहा मणिदीप कहा इससे यह दिखाये कि निर्गुण सगुण दोनो जीवके साथही है परंच अविद्यारूप रात्रि करके नहीं देख परते हैं जब रामनाम को जिह्वासे जपै तब मोहके निवृत्ति होनेसे देख परते हैं जैसे अंधेरी के नष्ट होनेसे मकान के भीतर बाहर दोनो देख परते हैं इहांपै भीतर बाहेर निर्गुणहीं सगुण को कहा है काहेसे कि भीतर बाहेर यही हैं यथा। एक दारुगत देखिय एकू॥ इत्यादि आगे कहेंगे ताते भीतर बाहर निर्गुणहीं सगुण हैं दूसरा अर्थ नहीं है काहेसे कि यहां निर्गुणहीं सगुणके प्रकरण हैं इससे गोस्वामीजीने यह उपदेश दिया कि जो कोई पुर्वोक्त निर्गुण सगुण ब्रह्म के प्रकाश याने प्रबोध चाहसि सो रामनाम को जिह्वा से जपो आपहि रामनाम दूनों स्वरूप को साक्षात्कार करके दिखावेंगे पुनः कोई बात की सन्देह न रहेगी भाव रामनाम निर्गुण सगुण को यथार्थ कह भी देते हैं और प्रबोध भी करादेते हैं और प्रकाश याने दर्शन भी करादेते हैं ऐसा समर्थ रामनाम हैं इसीसे ग्रन्थकारस्वामीने तीन बात कहा याने प्रथम अगुण सगुण के वीच में रामनाम को सुसाखी कहा भाव यथार्थ कहते हैं तब उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी कहा इससे यह देखाये कि सत्य कहते भी हैं और दृढ़ बोधभी करा देते हैं और मणिदीप से यह देखाये कि प्रकाश अर्थात् दर्शन भी करादेते हैं इससे रामनाम सर्वोपरि है ताते सबको छोड़ि के रामनाम जपना चाहिये तिसमें भी जिह्वा से जपना चाहिये आगे इसी प्रकार के निर्गुण सगुण के बीच में श्रीसीतानाम को भी सुसाक्षी जानना चाहिये और दूनौं को प्रबोध करानेवाले चतुर दुभाषी भी समझना और मणिदीप के समान दोऊ के प्रकाशक जानब काहेसे कि युगल स्वरूप एकही हैं॥ ३॥ (मूल)

नामजीह जपि जागहिं योगी।
बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥१॥

अर्थ—अभीतकतो निर्गुणसगुणके प्रबोधार्थ रामनाम को कहा और सौलभ्यता गुण करके रामनाम को विशेष कहा और अब यहांसे दोहा पर्य्यन्त पांचहु भक्तनके अधार श्रीरामनाम

ही देखाते हैं तिसमें प्रथम ज्ञानी भक्तको देखाते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि रामनामही को जिह्वासे जपिके योगी लोग जो हैं सो संसार रूप रात्रिमें जागहिं नाम जागते हैं और बिरति जो वैराग्य है तिनमें प्रवृत्त होके बिरंचि जो ब्रह्मा हैं तिनके जो प्रपंच हैं याने नाना प्रकार के द्वंद्व तिनसे बियोगी नाम बिछोह अर्थात् रहितहो जाते हैं यहां पै बिरंचि कहनेका यह भाव है कि जिन बिरंचिके बिचित्र रचना से वैराग्य होना सर्वथा दुर्लभ है सो योगी याने ज्ञानी लोग जिह्वासे रामनाम को जपिके तिन बिरंचि के बिचित्र रचनासे बिरक्त होजाते हैं ऐसा रामनाम का प्रताप और कृपा है इससे बिरंचि कहा और योगी यहां पै ज्ञानीको समझना चाहिये काहेसे कि योगी ज्ञानी एकही हैं यथा॥ मोह निशासबुसोवनिहारा। देखिय सपन अनेक प्रकारा॥ यहि जग यामिन जागहिं योगी। परमारथी प्रपंच बियोगी॥ जानिय तबहिं जीव जग जागा। जब सब बिषय बिलास बिरागा॥ होई बिबेक मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरण अनुरागा॥ पुनः जिमि कुयोगी पुरुष उरगारी। मोहबिटपु नहिं सकहिं उपारी॥ पुनः। (गतियां) या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्तिसंयमी॥ यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतोमुनेः॥ १॥ अर्थात् सर्व भूत जो हैं प्राणीमात्र जिस रात्रि में अर्थात् बिषय रूप रात्रि में सोते हैं तिसमें इन्द्रिय संयमी जागते हैं याने आत्मस्वरूप देखते हैं और जौनी बिषय रूप रात्रि में सर्व प्राणी जागते हैं सो मुनि जो ज्ञानी जन हैं तिनकी रात्रि है॥ इत्यादि प्रमाण हैं इससे मुनि ज्ञानी योगी एकही हैं तिससे यहां पै योगी ज्ञानीही को जानना चाहिये और जिह्वा से कहने का यह भाव है कि पूर्व दोहा में जो कहिआये हैं कि राम नाम मणिदीपक को जिह्वा रूप देहरी पै धरु जो भीतर बाहेर प्रकाश चाहसि सोई यहां दिखाते हैं कि भीतर जो निर्गुण ब्रह्म है उसी को ज्ञानी लोग जिह्वा से रामनाम को जपिके अनुभवते हैं सो आगे कहैंगे इससे जिह्वा कहा दूसरे नाम के जपने की विधि भी महात्मा लोगोंने बहुत प्रकार से कहा है जैसे कि कोई २ ने श्वांस गति याने एक बिंशसहस्रछः सौ श्वांस दिन भरमें चलती है उतनेहीं रामनाम जपना एक श्वांसा वृथा न जावे इसको अजपा जाप कहते हैं इस जाप का वेद में बड़ा महात्म्य कहा है यह जाप अवधूतों के वास्ते कहा है याने जिनको सिद्धावस्था प्राप्त है दूसरे से यह जाप होना दुर्लभ है पुनः कोई २ के मतसे सुरति जाप याने केवल मनसेहीं जपना यह भी सर्वोपरि जाप है और कोई २ ने कण्ठ से जपना कहा है कोई २ ने केवल रकारही जपने को कहा है कोई २ ने सानुनासिक याने ऊँचे स्वर से जपने को कहा है इसी प्रकार से जापके बिधान बहुत कहा है परन्तु गोस्वामीजीके मत से जिह्वा से जपना यही जानपरती है काहेसे कि गोस्वामीजीने सर्वत्र जीहही से कहा है

यथा ॥ जीह यशोमति हरि हलधरसे ॥ पुनः जीह देहरी द्वार ॥ पुनः नाम जीह जपि जागहिं योगी ॥ पुनः नाम जीह जपि जानहुँ तेऊ ॥ पुनः नाम जीह जपि लोचन नीरू ॥ इत्यादि सर्वत्र कहा है इससे जिह्वा से कहा काहेसे कि जिह्वा का जाप सबको सुलभ है ॥ १ ॥ (मूल)

ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं अनूपा।
अकथ अनामय नाम न रूपा ॥ २ ॥

अर्थ–पूर्वोक्त जो योगी हैं सो बिरंचि के प्रपंच से रहित होके और अनूप जो ब्रह्म के सुख हैं कि जिसके समान दूसरा सुख कोई नहीं है सो सुखहीतिनिश्चयेण अनुभवहिं नाम अनुभव करते हैं यहां पै अनुभव कहने का यह भाव है कि अन्तर्य्यामी ब्रह्म के स्वरूप तो हैं नहीं वह तो सर्व व्यापी हैं इससे मनहीं मन अनुभव किया करते हैं काहेसे कि प्रगट सुखतो तब होवे कि जब स्वरूप देखि परे इससे अनुभव कहा पुनः वह ब्रह्म सुख कैसा है कि अकथ है याने कथन करवे योग्य नहीं है और अनामय है अर्थात् अनामय जो रोग है षट्विकार तिनसे रहित है और जिनके नामरूप नहीं हैं यहां पै नामरूप से रहित निर्गुण ब्रह्म को कहा है काहेसे कि निर्गुण ब्रह्म अनादि काल से नामरूप से रहित हैं और सगुण ब्रह्म जो श्रीरामजी हैं सो अनादि कालसे नामरूप युक्त हैं इससे जिसको निर्गुण सगुण का पूर्ण बिचार नहीं है सो मूर्ख निर्गुणहीं के साथ सगुण को भी खण्डन करदेते हैं कि ब्रह्म तो नाम रूप से रहित हैं निराकार हैं ज्योतिस्वरूप हैं इत्यादि बकाकरते हैं इससे यहां पै नामरूप से रहित अन्तर्य्यामी ब्रह्म को जानना चाहिये और भी जहां कहीं नामरूप से रहित कहाहो तहां निर्गुणहीं ब्रह्म के अर्थ जानना दूसरा प्राकृत नामरूप से रहित यह भी अर्थ होते हैं ताते जहां जैसा प्रकरण हो तहां तैसा अर्थ करना चाहिये ऐसाही प्रसंग वेद में भी सर्वत्र कहा है इससे यहां निर्गुण का प्रसंग है ताते निर्गुण ब्रह्मका सर्वव्यापी यही नाम है यही रूप है इससे गोस्वामीजी यह देखाते हैं कि ज्ञानी भक्तके भी राम-नामहीं अधार है ताते राम नाम सर्वोपरि है २ ॥ (मूल)

जानाचहहिंगूढ़गतिजेऊ।
नामजीहजपिजानहुँतेऊ ३ ॥

अर्थ–अब गोस्वामीजी जिज्ञासुभक्तको कहते हैं जिज्ञासुभक्त उसको कहते हैं कि जिसको परमार्थ के स्वरूप जानने की इच्छाहै सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि जेऊ कोई गूढ़गति

अर्थात् पूर्वोक्त जो निर्गुण सगुण ब्रह्म है तिनकी जो गतिनाम व्यवस्था है सो जाना चहैं तेऊ जिह्वासे रामनामको जपिके जानहु यहां पै जानहु कहनेका यह भाव है कि दूसरे से गूढ़गतिका हाल क्या बूझना है काहेसे कि दूसरा कोई गूढ़गति याने निर्गुण सगुण का यथार्थ हाल नहीं जानते हैं और रामनाम तो यथार्थ हाल जानते हैं काहेसे कि निर्गुण सगुणके बीचमें यथार्थ कहनेवाला सुसाक्षी है और रामनामहीं दोनों के प्रबोध करानेवाला चतुरदुभाषी है पुनः रामनामहीं दोऊके प्रकाशक मणिदीपहैं इससे सब छोड़ के केवल रामनामहीं को जिह्वासे जपिके जानहु भाव रामनामके जपने से यथार्थ निर्गुण सगुणके स्वरूप जानपड़ेगा इससे जानहु कहा अथवा जिज्ञासुभक्त को स्वयं ग्रन्थकार स्वामी उपदेश देते हैं कि रामनामको जीहसे जपिके जानहु भाव देर मत करिए इससे जानहु कहा और गूढ़गतिके अर्थ यहां पै निर्गुणही सगुण के हैं दूसरा नहीं काहेसे कि निर्गुण सगुण ब्रह्मसे गूढ़ दूसरा क्या है ताते यही अर्थ ठीकहै ॥ ३ ॥ (मूल)

साधक नाम जपहिं लय लाए।
होंहिं सिद्ध अणिमादिक पाए ॥ ४ ॥

अर्थ—अब अर्थार्थी भक्तको कहते हैं अर्थार्थी उनको कहते हैं कि जिनको अर्थ याने धन इत्यादि की चाहना है सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि साधक जो हैं अर्थके साधन करनेवाले सो भी रामनामको जिह्वासे लयलाये नाम एकतार लव लगायके जपहिं नाम जपते हैं और अणिमा महिमा गरिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य इशिता वशिता इति अणिमादिक अष्टसिद्धिको पाके सिद्ध होहिं नाम सिद्ध होजाते हैं यहां पै साधक नाम जपहु क्यों नहीं कहके उपदेश किया इसका अभिप्राय यह है कि गोस्वामीजी ने यह जाना कि क्या तुच्छसिद्धिके वास्ते रामनामको उपदेश करें इससे नहीं कहा और अणिमादिक अष्टसिद्धि कहनेका यह भावहै कि यह अष्टसिद्धि भगवताश्रित हैं इससे कहा और पन्द्रह सिद्धि जो हैं सो महातुच्छ सिद्धि हैं सो भागवतमें प्रसिद्ध हैं इससे उनको नहीं कहा इससे यह दिखाया कि सिद्धिको भी प्राप्ति करनेवाला रामनामहीं है ताते रामनाम सर्वोपरि है ॥ ४ ॥ (मूल)

जपहिं नाम जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥ ५ ॥

अर्थ—अब आर्तभक्तको कहते हैं आर्तभक्त उसको कहते हैं कि जो दुःख करके युक्त हैं सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि जन जो दास हैं सो आरत भारी नाम बड़े भारी दुःखमें रामनामको जिह्वासे जपते हैं और सम्पूर्ण जो कुत्सित सङ्कट नाम दुःख हैं सो

मिटहिं नाम मिट जाते हैं और सुखी होजाते हैं भाव रामनामके प्रतापसे सब दुःख नष्ट होजाते हैं और सुखी होजाते हैं जैसाकि गजादिक भए हैं इससे यह दिखाया कि दुःख का भी नाश करनेवाला रामनामही है दूसरा सब दुःखदायी है ताते सबको छोड़के रामनाम जपो यही एक सबका सारहै ॥ ५ ॥ (मूल)

रामभक्त जग चारि प्रकारा ॥
सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥ ६ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि इसीतरह के श्रीरामजीके भक्त जग नाम संसारमें चारि प्रकारके हैं और चारिउ भक्त सुकृती हैं सुकृति नाम सुन्दर कृतिनाम यशकरके युक्त हैं और चारिउ अनघ नाम पापसे रहित हैं और चारिउ भक्त उदार नाम श्रेष्ठ हैं अथवा उदार नाम बड़े हैं इससे यह दिखाया कि श्रीरामजीके जो भक्तहैं सोई सुकृती हैं और सोई पापसे रहित हैं सोई सबसे श्रेष्ठहैं यथा ॥ सोइ सर्वज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता। सोइ महिमाण्डित पण्डित दाता ॥ धर्मपरायण सोइ कुलत्राता। रामचरण जाकर मन राता ॥ नीतिनिपुण सोइ परम सयाना। श्रुतिसिद्धान्त नीक त्यहि जाना ॥ सोइ कवि कोविद सोइ रणधीरा। जो छल छांड़ि भजै रघुबीरा ॥ इत्यादि कहाहै इससे रामभक्त सब प्रकारसे सर्वोपरि हैं ॥ ६ ॥ (मूल)

चहूँ चतुर कहुँ नामअधारा।
ज्ञानी प्रभुहिं विशेषि पियारा ॥ ७ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि पूर्वोक्त चहूँ चतुर रामभक्तको रामनामहीं अधार नाम अवलम्ब है भाव और कुछ आधार नहीं है केवल एक रामनामहीं अधारहै काहे से कि रामनाम सबका सार है इसीसे चतुर कहा क्योंकि चतुर का यही काम है कि सबका सार लेलेना चाही, गोस्वामीजी कहते हैं कि पूर्वोक्त जो चार प्रकारके भक्त हैं तिनमें से तीन भक्त जो हैं सो प्रभुके सामान्य प्रियहैं काहेसे कि कामना करके युक्तहैं और चौथा भक्त जो ज्ञानी है सो प्रभुको हीति निश्चय करके विशेष प्रियहै काहेसे कि कामना से रहित हैं इससे विशेष प्रिय कहा आगे इसप्रकार के चार भक्त गीतामें भी भगवत ने कहाहै सोई सब प्रसङ्गके सहित गोस्वामीजी ने यहां पै कहा है यथा प्रमाण (गीतायां) ॥

श्लोक। चतुर्विधाभजन्तेमां जनाःसुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानीचभरतर्षभः ॥ १

अर्थ–भगवत बोले कि हे अर्जुन! आरत जो दुःखी हैं जिज्ञासु जो जानने की इच्छा वाला है और तीसरा जो अर्थ के अर्थी याने धनका चाहनेवाला है और चौथा जो ज्ञानी है अर्थात् स्वस्वरूप का जाननेवाला ऐसे चार प्रकारके सुकृतिजन मेरेको भजते हैं॥ १

श्लो०। तेषांज्ञानीनित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियोहिज्ञानिनोऽत्यर्थ महंचसचमेप्रियाः॥
उदाराःसर्वएवैतेज्ञानी त्वात्मैवमेमतम्॥२॥

अर्थ–हे भरतर्षभ तिनमें ज्ञानी नित्य योग युक्त एक मेरी मुख्य भक्ति वाला श्रेष्ठ है कारण कि ज्ञानिन को मैं अतिशय प्रियहौं और सो ज्ञानी हमको प्रिय है॥ २॥ ते सब उदार हैं तोभी ज्ञानी मेरे को प्रियहैं ऐसा मेरामत है॥ २ इत्यादि गीतामें कहा है और जो २ बात गीतामें कहा है सोई गोस्वामीजी ने यहांपै लिखा है (शंका) गीतामें तो चार प्रकार के भक्त कहा है सहीकर परंच चारिउ भक्तको रामनाम तो अधार नहीं लिखा है और यहां गोस्वामीजी चहूँ चतुर को नामहीं अधार लिखतेहैं सो कहांसे यह हमको बड़ा सन्देह है काहे से कि रामनाम का माहात्म्य तो केवल कलियुगमें कहाहै और सब युगमें नहीं और सबयुगमें तो औरही उपाय कहा है यथा प्रमाण (विष्णुपुराणे)॥

श्लो०। ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञै स्त्रेतायांद्वापरेचयन्।
यदाप्नोतिदत्ताप्नोति कलौ श्रीनामकीर्त्तनम्१॥

अर्थात् सत्ययुग में ध्यान रहा त्रेतामें यज्ञ रहा द्वापर में भगवत का पूजन रहा और कलियुग जब आताहै तब रामनाम के कीर्तन होते हैं॥ ऐसेही गोस्वामीजीने भी कहा है यथा॥ कृतयुग सब योगी बिज्ञानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी॥ त्रेता बिविध यज्ञ नर करहीं। प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं॥ द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाय न दूजा॥ कलियुग केवल हरि गुण गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा॥ कलियुग योग न यज्ञ न ज्ञाना। एक अधार राम गुणगाना॥ सोइ भवतर कुछ संशय नाहीं। नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं॥ पुनः॥ नहिं कलिकरम न भक्ति बिवेकू। रामनाम अवलम्ब न एकू॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे रामनाम का माहात्म्य केवल कलियुगही में है और युग में नहीं और गीतामें तो सर्वथा नाम माहात्म्य नहीं कहा है और इहांपै गोस्वामीजीने चारिउ भक्तको नामहीं अधार कहा है सो कहांपै कहाहै सो कहिये (उत्तर) इनसब बातोंका उत्तर गोस्वामीजी स्वयंआप देते हैं॥ ७॥

चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ।

कलि विशेषि नहिं आन उपाऊ ॥ ८ ॥

अर्थ—अब पूर्वोक्त सब शंकाओंका उत्तरदेतहैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि आपने जो कहा कि रामनामका माहात्म्य केवल कलियुगमें है और युगमें नहीं सो यह कहना आपका सर्वथा अयोग्य है काहे से कि रामनामका माहात्म्यतो चारों युगोंमें है और दूसरा जो आपने कहा कि चार प्रकारके तो भक्त गीता में कहाहै परंतु नाम माहात्म्य नहीं कहा है सो यहभी आपका कहना ठीक नहीं है काहेसे कि एक गीतामें नहीं कहा तो क्या अप्रमाण है रामनाम का माहात्म्य तो चारिहू वेदमें प्रसिद्ध है और आपने जो यह कहा कि नामका माहात्म्य केवल कलियुगहीमें है और युगमें नहीं है और युगोंमें तो दूसरेही उपाय कहेहैं याने सत्ययुगमें ध्यान रहा त्रेतामें यज्ञ रहा द्वापर में पूजन रहा कलियुग में केवल नामही है ऐसा आप कहा तिसपर गोस्वामीजी कहते हैं कि कलि विशेषि नहिं आन उपाऊ अर्थात् नाम माहात्म्यतो चहुँ युगमें है परंतु कलियुगमें विशेष करके नाम माहात्म्य है और आन नाम दूसरा उपाय कलियुगमें नहींहै भाव और युगोंमें उपाय भी रहा अर्थात् सत्ययुगमें प्रधान रामनाम रहा उपाय ध्यान रहा और त्रेतामें भी मुख्य नामही रहा उपाय यज्ञ रहा और द्वापर में भी प्रधान नाम रहा उपाय पूजन रहा और कलियुगमें तो केवल एक नामहीं नाम है दूसरा कुछ उपाय नहीं है ताते हे कलियुगी प्रजा लोगों आप सब उपायको छोड़िके रामनामजपो यही एकसार है और सर्वोपाय वृथा है केवल मत्था कूटना है इसमें सन्देह न करना चाहिए ॥ ८ ॥ (मूल)

दो० । सकल कामना हीनजे रामभक्तिरस लीन ।
नामप्रेम पीयूष हृद तिन्हहुँ किएमनमीन॥९॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी सर्वोपरि जो पंचम प्रेमी भक्त हैं तिनको वर्णन करते हैं कि सकल नाम सम्पूर्ण कामना नाम बासना करके हीन नाम रहितजे जनहैं यहांपै सकल कामना हीन कहनेका यह भावहै कि पूर्वोक्त जो चार प्रकारके भक्त हैं सो कामना करके युक्त हैं जैसे कि आर्त भक्तको दुःखनाश होनेकी चाहना है और जिज्ञासु भक्तको गूढ़-गति जानने की चाहना है और अर्थी भक्तको सिद्ध होने की चाहना है और ज्ञानी भक्तको मोक्षहोनेकी चाहनाहै इत्यादि सबको कामनाहै और पंचमप्रेमी भक्तजो हैं सो सकल कामनासे रहित हैं यथा॥ जाहि न चाहिय कबहुँ कछु तुम्हसनसहज सनेहु । बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निजगेहु ॥ इत्यादि प्रेमी भक्तके लक्षण कहाहै सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि सकल कामनासे जे हीन हैं और रामजी के जो भक्तहैं रसरूपा तेहिमें लीन नाम निमग्न होरहे हैं यहांपै रसनाम आनन्दकाहै यथा॥ रसोवैसः रसंह्येवायं लब्ध्वानदीभव

तीतिश्रुतिः॥ अथवा रामजीका जो पंचधा सम्बन्ध है अर्थात् शांतिरस सख्यरस दास्यरस वात्सल्यरस शृंगाररस इतिपंचरस जो रामभक्त हैं तेहिमें जे जन लीन रहते हैं तिन्होंने नाम प्रेम अर्थात् रामनाम में जो अतिशय प्रेमहै सोईतो पीयूष नाम अमृत के ह्रद नाम कुंड हैं तेहिमें अपने मनको मीन नाम मछरी किये हैं तिनहुँ कहनें का यह भाव है कि औरकी को कहै कि जो सर्वदा रामजी की पंचरस भाक्ति मे लीन रहते हैं सोभी राम नाम में मग्न हैं इससे यह देखाया कि चाहै शांतिरसवालेहों चाहै सख्यरसवालेहों चाहै दास्यिरसवालेहों चाहै वात्सल्यरसवाले हों चाहै शृंगाररस के भावनावाले हों परंतु विना राम नाम जपे ठीक कोई को नहीं हैं चाहै कुछ करे इससे रामनाम को जपना चाहिये काहेसे कि रामनाम सबका सारहै यहांपै कुंड कहनेका यह भावहै कि कुंडमें मीन बड़े सुखी रहतेहैं काहेसे कि कुंडमें अगाध जल रहताहै यथा॥सुखी मीनजहँनीर अगाधा। जिमि हरिशरणन एकौबाधा पुनः॥सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जलमाहिं। यथाधर्मशीलन्हके दिन सुख संयुत जाहिं॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे कुण्ड कहा काहेसे कि कुण्ड में किसी प्रकार की बाधा नहीं होतीहै इससे यह दिखाया कि भगवद्भक्त रामभक्ति में सदा सुखी रहते हैं ताते रामभक्ति सर्वोपरि है और अमृतका कुण्ड कहा जलका कुण्ड क्यों न कहा इसका हेतु यह है कि जलका कुण्ड तो केवल मीनके सुखार्थ उपमा कही गई है परञ्च मीन का कभी न कभी नाश होजाता है इससे जलका कुण्ड नहीं कहा और भगवद्दास सदा अमर हैं इससे अमृतका कुण्ड कहा इससे यहां पै गोस्वामीजी ने यह दिखाया कि पूर्वोक्त चारो भक्तोंसे पञ्चरस सम्बन्धवाले जो पञ्चम प्रेमी भक्तहैं सो सर्वोपरि हैं और रामनामके ऐसे प्रेमी हैं कि अपने मनको मीन बनाके बूड़े रहते हैं भाव किञ्चित्मात्र भी रामनामको नहीं छोड़ते हैं सदा सर्वकाल जपते रहते हैं याने अपना जीवनआधार-ही रामनामको बनाए हैं इससे मुख्य सिद्धान्त यह पायागया कि चाहे कोई भक्त हो बिना रामनामके जपे कल्याण नहीं है और सब छोड़के रामनाम जपना यही मुख्य भक्तिहै और रामनामका स्मरण करनेवाला वही यथार्थ भक्तहै नहीं तो सब कहनेही-मात्र भक्तहैं (शङ्का) गीतामें तो चारिही प्रकार के भक्त कहा है और यहां गोस्वामीजी पञ्चप्रकारके कहते हैं सो कहांसे कहते हैं (समाधान) इसका अभिप्राय यह है कि चार प्रकारके जो भक्त गीतामे कहाहै सो तो प्रसिद्ध हैं और पञ्चम जो प्रेमी भक्तहैं सोभी उसी श्लोकमें कहाहै सो गुप्तहैं यथा॥ आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानीचेति॥ यहां पै अन्तमें चकार कहने का क्या प्रयोजन है इससे यह जाना जाताहै कि चकार से अर्थात् पञ्चम प्रेमीभक्त भी जानना चाहिए इसीसे अन्तमें चकार कहाहै नहीं तो कहनेका क्या प्रयोजन रहा और देखिए जैसे यहां पै इस श्लोकमें पञ्चम प्रेमीभक्तको भगवत् ने गुप्त

कहाहै तैसेहीं गोस्वामीजी ने भी चारों भक्तों को क्रमसे कहके अन्तमें चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥ इत्यादि गुप्त करके तत्पश्चात प्रेमी भक्तको कहा नहीं तो बीचमें चहुँ युग चहुँ श्रुति कहनेका क्या प्रयोजन रहा इससे जैसा चमत्कार प्रभुने गीतामें कहाहै तैसेही चमत्कार यहां गोस्वामीजी ने कहाहै इसमें सन्देह न करना चाहिए काहेसे कि भगवत् और भगवद्दास के रहस्य एकही हैं इससे पञ्चम प्रेमी भक्तको भी गीताही से कहा है इससे गोस्वामीजी ने यह दिखाया कि पञ्चम प्रकारके जो भगवद्भक्त हैं तिनका भी रामनामहीं आधार है इससे रामनाम सर्वोपरि है और सबका सारहै आगे इसीप्रकारके पांचों भक्तोंके आधार श्रीसीतानामको भी जानना चाहिए ॥ ४ ॥ (मूल)

अगुण सगुण दुइ ब्रह्म स्वरूपा।
अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥ १ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी ने प्रथम में जो कहिआये हैं कि अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी ॥ इत्यादि उसी निर्गुण सगुण ब्रह्मको यहां पै विस्तार पूर्वक वर्णनकरते हैं और निर्गुण सगुण ब्रह्म के नाम रूपादि को स्पष्ट करके देखाते हैं जो कदापि कहो कि प्रथम में तो कही आये हैं अब कहने का क्या काम है तो सुनो प्रथम में जो कहा है सो तो केवल निर्गुण सगुण ब्रह्मके पहिचान और प्रबोध के वास्ते रामनाम को सुसाखी और चतुर दुभाषी कहा कुछ रामनाम को बड़ा नहीं कहा और न निर्गुण सगुण के स्वरूपही कहा और अब निर्गुण सगुण के यथार्थ स्वरूप को दिखाके सौलभ्यता गुण करके रामनाम को बड़ा कहैंगे इससे पुनः ॥ वर्णन करते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि अगुण जो निर्गुण हैं और सगुण जो रामजी हैं यही दो ब्रह्मके स्वरूप हैं भाव तीसरा ब्रह्मका स्वरूप नहीं है दो हैं जो कहो कि विष्णु नारायणादि क्या ब्रह्मके स्वरूप नहीं हैं तो हैं ब्रह्मही के स्वरूप परन्तु संसार के कार्य्यार्थ स्वरूप भए हैं कुछ अनादिस्वरूप नहीं हैं और यहां पै गोस्वामीजी अनादि ब्रह्मके स्वरूप कहते हैं इससे दुहूँ कहा पुनः वह निर्गुण सगुण दोनो ब्रह्म कैसे हैं कि अकथ नाम कथन करिबे योग्य नहीं हैं और अगाध नाम अथाह हैं और अनादि हैं भाव बीचमें संसार के कार्य्यार्थ कल्पित नहीं भये हैं जैसे कि विष्णु नारायणादिक अथवा अवतारादिक कार्य्यार्थ होते हैं यथा उपासकानां कार्य्यार्थं ब्रह्मणोरूपकल्पना ॥ इत्यादि अथर्वण वेद में कहाहै तैसा निर्गुणब्रह्म और सगुणब्रह्म श्रीरामजी नहीं हैं इससे अनादि कहा और इसीसे दो ब्रह्मस्वरूप कहा तीसरा नहीं कहा काहेसे कि और सब स्वरूप कार्य्यार्थ प्रगट होते हैं इससे अनादि

नहीं हैं और यह दोनों स्वरूप अनादि हैं पुनः कैसे हैं कि अनूप हैं अर्थात् भगवत्क असंख्य रूपहैं परञ्च इन दोनोंके समान दूसरा कोई नहीं है इससे अनूप कहा अथवा अनूप नाम दोनों आश्चर्य्य स्वरूप हैं भाव अपने समान आपही हैं इससे अनूप कहा यहां पै निर्गुण और सगुणब्रह्म में गोस्वामीजीने चार विशेषण दियाहै यथा अकथ १ अगाध २ अनादि ३ अनूपा ४ इति इससे यह दिखाया कि निर्गुण सगुणब्रह्मके बहुत गुण हैं सो सबको कहसक्ते हैं और कहां तक वर्णन करें ताते अतिशय अद्भुत चार गुण कहा कि जिसके अन्तर्गत सब गुण हैं और इन चारोंसे विशेष ब्रह्मत्व गुण नहीं है इससे मुख्य चार गुण कहा भाव निर्गुण सगुण दोनों महान् हैं ॥ १ ॥ (मूल)

मोरे मत बड़नाम दुहूँते। किय जेहियुग निजबश निजबूते॥२॥

अर्थ—पुर्वोक्त जो निर्गुण सगुण ब्रह्म हैं सर्वोपरि सो गोस्वामीजी कहते हैं कि मोरे नाम हमारे मत से रामनाम दूनोंते बड़ा है काहे से कि जेहि रामनाम ने युगनाम दूनों निर्गुण सगुण ब्रह्म को निजनाम अपनी बूत नाम पराक्रम से निजनाम अपने बश किये हैं बूत पूर्व देश में बलको कहते हैं यहां पै निज बूत कहने का यह भाव है कि कोई दूसरे के बल सहारा से नहीं बश किये हैं स्वयं अपने पराक्रम से बश किये हैं तिसमें भी एकको नहीं दोनों को बश किये हैं ऐसे रामनाम बली हैं इससे मोरे मत बड़नाम दुहूँते काहे से कि बशकरना बड़ेही के काम हैं कुछ छोटे के काम नहीं हैं इससे निज बूत कहा (शंका) प्रथम में तो गोस्वामीजीने कहा कि कोबड़छोट कहत अपराधू॥ और अब स्वयं आपही कहते हैं कि मोरे मत बड़नाम दुहूँते सो क्यों कहा इसका क्या अभिप्राय है (उत्तर) इसका अभिप्रायतो हम प्रथमही कहिआये हैं कि तत्त्व महत्त्व करके बड़ा छोटा कहनेमें अपराध है कुछ सौलभ्यता गुणकरके बड़ा छोटा कहनेमें अपराध नहीं हैं ताते इहां पै सुलभता गुण से बड़ा कहा है कुछ तत्व महत्व करके बड़ा नहीं कहा है इससे इसमें शंका करने का कुछ प्रयोजन नहीं है इससे गोस्वामीजीने यह दिखाया कि पूर्वोक्त जो निर्गुण सगुण दोनों ब्रह्म हैं कि जिनके गुण महत्व सब प्रकार से अकथ हैं और अगाध हैं और अनादि हैं और अनूप हैं भाव सब प्रकार से अगम हैं तिनको भी रामनामने अपने बलसे बशकिये हैं तो और को क्या कहना है इससे रामनाम सर्वोपरि है और मोरे मत से कहने का हेतु आगे कहते हैं ॥ २ ॥ (मूल)

प्रौढ़ि सुजन जन जानहिं जनकी।
कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मनकी॥ ३॥

अर्थ–श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि मैंने जो कहा है कि मोरे मत बड़नाम दुहूँते सो इसबात को सुजन जन यानें तत्त्वज्ञाता जे जन हैं सो जन जो मैं हूं तिनकी प्रौढ़ि नाम स्यानपना जनि नाम जानहिं कि आपने तो अपनी चातुर्य्यता से पक्षपात कहाहै जैसे कि प्रौढ़ोक्ति अलङ्कार में कविलोगों ने झूंठ सांच अपनी मत्यानुसार कह दिया है तैसेही आपने भी कहा है सो यह बात दासकी मति जानहिं जो कहो कि आपने कैसे जाना कि रामनाम दुहूँते बड़ा है तिसपै गोस्वामीजी कहते हैं कि वेद पुराण में रामनाम का माहात्म्य सुनिकै मेरे मनमें प्रतीति भई त्यहि प्रतीतिके कारणसे प्रीति भई इसीसे मैंने अपनी प्रतीति और प्रीति और रुचिनाम इच्छा मनकी कहा नाम कहता हूँ कि रामनाम दुहूँते बड़ाहै यहांपै गोस्वामीजी ने तीन बातें कहीं एकतो प्रतीतिकही दूसरी प्रीति कही तीसरी इच्छा कही इसका अभिप्राय यह है कि रामजीकी प्राप्ति के वास्ते यह तीनहीं वस्तुएँ प्रधान हैं काहेसे कि जब जाननेकी रुचि होगी तब वेद पुराण अथवा महात्मों के वचनद्वारा जानेगा और जब जानेगा तब प्रतीति होगी और जब प्रतीति होगी तब प्रीति होगी और जब प्रीति होगी तब भक्ति होगी और जब भक्ति होगी तब प्रभुकी प्रीति होगी यथा॥ जाने बिनु न होय परतीती। बिनु परतीति होय नहिं प्रीती॥ प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई। जिमि खगपति जलकी चिकनाई॥ इत्यादि कहाहै इससे भगवत्की प्राप्तिवास्ते प्रतीती नाम विश्वास और प्रीति यही मुख्यहै काहे से कि विना विश्वास और प्रीतिके कोई कार्य्य न होगा यथा॥ कौनिउँ सिद्धि कि बिनु विश्वासा॥ इत्यादि कहाहै पुनः॥ उमा योग जप दान तप नानामख व्रत नेम। राम कृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे रामजीकी प्राप्ति के वास्ते प्रेम प्रधान है और रामजी सदा प्रेमके वशमें हैं यथा॥ धर्मसेतु पालक तुम ताता। प्रेमविवश सेवक सुखदाता॥ इति प्रेमविवश पुनः॥ जिनके चरण सरोरुह लागी। करत विविधि जप योग बिरागी॥ ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते॥ पुन॥ सुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं॥ भयो तुम्हार तनय सोइ स्वामी। राम पुनीत प्रेम अनुगामी॥ इति पुनीत प्रेम के आज्ञाकारी॥ पुनः॥ रामहिं केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जे जाननहारा॥ पुनः॥ हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना॥ पुनः॥ प्रेमते प्रभु प्रगटे जिमि आगी॥ पुनः व्यापक ब्रह्म निरञ्जन निर्गुण विगत बिनोद। सो अज प्रेम भक्तिवश कौशिल्या की

गोद ॥ पुनः ॥ सुखसन्दोह गोहपर ज्ञान गिरा गोतीत । दम्पति परम प्रेमवश करि शिशु चरित पुनीत ॥ पुनः मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा ॥ इत्यादि सर्वत्र कहाहै इससे प्रेमही करके भगवत् मिलते हैं और प्रेमही करके प्रभु प्रकट होते हैं ताते प्रेम सर्वोपरि है और विश्वास भी सर्वोपरि है इससे गोस्वामीजीने यह दिखाया कि जिनको यह जानना हो कि रामनाम निर्गुण सगुणसे बड़ाहै कि नहीं सो रामनाम में प्रेम और विश्वास करके देखलें यही प्रमाण है ॥ ३ ॥ (मूल)

एक दारुगत देखिय एकू ।
पावकसम युग ब्रह्म बिवेकू ॥ ४ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी निर्गुण सगुणका स्वरूप दिखाके रामनाम को बड़ा कहते हैं कि एक अग्नि तो दारुनाम काष्ठ में गतनाम प्राप्त है और एक अग्नि देखिए नाम देख पड़ते हैं इसीप्रकार से युग नाम दोऊ ब्रह्म याने निर्गुण सगुणके बिवेक नाम विचार है अर्थात् जैसे एक अग्नि लकड़ी के भीतरमें प्राप्ति होरही है लेकिन सबको नहीं देख पड़ती है और दूसरी अग्नि जो प्रसिद्ध है सो सबको देख पड़ती है तैसेही दो अग्निके सम नाम बराबर अर्थात् निर्गुणब्रह्म जो है सो अन्तर्य्यामी होके सब चराचर में व्यापि रहा है सो सबको नहीं देख पड़ता है और सगुणब्रह्म जो श्रीरामजी हैं सो जब दासन की रक्षार्थ और धर्मके संस्थापनार्थ प्रगट होते हैं तो सबको देख पड़ते हैं भाव निर्गुण ब्रह्म रूपरहित है और सगुणब्रह्म रूपयुक्त है ॥ ४ ॥ (मूल)

उभय अगम युग सुगम नामते ।
कहेउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥ ५ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि पूर्वोक्त जो निर्गुण और सगुण उभय नाम दोऊ हैं सो सब प्रकार से अगम हैं भाव किसी प्रकारसे प्राप्त होने योग्य नहीं हैं सो रामनाम ते युग नाम दोनों सुगम होजाते हैं भाव नाम के जपने से निर्गुण सगुण दोनों प्राप्त होजाते हैं इसीसे मैंने ब्रह्म जो निर्गुण है तिनते और सगुणब्रह्म रामते नामको बड़ा कह्यों नाम कहा भाव रामनामके न जपने से दोनों अगम हैं और रामनामके जपने से दोनों सुगम नाम सुलभ होजाते हैं यही सौलभ्यता गुण करके रामनाम दोनों ते बड़ा कहा कि मोरे मत बड़ नाम दुहूंते इससे रामनाम ने दोनोंको अपने वश किएहैं आगे यहां पै पूर्वोक्त सगुणब्रह्मका नाम स्पष्ट होगया ताते पूर्वोक्त सगुण रामहींजी को जानना चाहिए दूसरा नहीं ॥ ५ ॥ (मूल)

व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी।
सतचेतन घन आनँदराशी ॥ ६ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी निर्गुणब्रह्म की अगमता वर्णन करते हैं और निर्गुणब्रह्म के स्वरूप भी दिखाते हैं कि जिसको निर्गुणब्रह्म कहते हैं श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि वह पूर्वोक्त निर्गुणब्रह्म कैसाहै कि व्यापक है अर्थात् चराचरमें अन्तर्य्यामी होके एकरस से व्याप रहाहै पुनः कैसाहै कि एकहै भाव है एकही और व्याप रहाहै सबमें ऐसा अद्-भुत है और अविनाशी नाम नाशसे रहितहै यहां पै अविनाशी कहनेका यह भावहै कि ऐसा कोई न जाने कि जब सबमें व्यापरहा है तो सबका नाश होनेपर उसका भी नाश होगा इससे अविनाशी कहा पुनः कैसाहै कि सत् है सत् उसको कहते हैं कि जिसमें असत्यका लेश नहीं है पुनः कैसाहै कि चेतन है अर्थात् चिद्रूप है चिद् उसको कहते हैं कि जिसमें जड़ता का लेश नहीं है पुनः वह निर्गुण ब्रह्म कैसाहै कि घननाम समूह आनन्दकी राशि नाम स्थान है अर्थात् आनन्दस्वरूप है आनन्द उसको कहते हैं कि जिसमें दुःख नहीं है भाव वह निर्गुणब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप है यहां पै निर्गुणब्रह्म में छः विशेषण दिया है इससे यह दिखाया कि वह निर्गुणब्रह्म षड्गुण युक्तहै याने भग वान हैं इससे छः विशेषण दिया ॥ ६ ॥ (मूल)

अस प्रभु हृदय अछत अविकारी।
सकल जीव जग दीन दुखारी ॥ ७ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि अस नाम ऐसा पूर्वोक्त षड्गुण युक्त प्रभु नाम समर्थ और अविकारी नाम षड्विकार से रहित भाव षड्गुण युक्त और षड्विकार से रहित तिनके हृदयमें अछत नाम अछैते भाव रहते हुए सकल नाम सम्पूर्ण चराचर जीव जग नाम संसार में दीन नाम मलीन अथवा गरीब और दुखारी नाम दुःखी हो रहे हैं भाव बड़ा आश्चर्य है कि सब कोई दुःखी हो रहे हैं सो कोहसे दीन दुःखी हो रहे हैं कि जाने बिना जो कदापि जानते तो दीन और दुःखी अपने को नहीं मानते भाव ज्ञान दशा में प्राप्त होके सदा ब्रह्मानन्द में मग्न रहते इससे यह देखाया कि निर्गुण ब्रह्म सबके साथही हैं परंतु अगम हैं ॥ ७ ॥ (मूल)

नाम निरूपण नाम यतनतें।
सोउ प्रगटत जिमि मोल रतनतें ॥ ८ ॥

अर्थ—अब वह पूर्वोक्त अगम को सुगम देखाते हैं श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि जो

निर्गुण ब्रह्मके हृदय में रहते हुए सकल जीव दीन और दुःखी होरहे हैं बिना जाने सो भी निर्गुण ब्रह्म राम नाम के निरूपण नाम अर्थ के सहित प्रतिपादन करने से और नामके यतन नाम युक्ति अथवा उपाय दोनो एकहीं हैं सो भी प्रगटत नाम प्रगट होजाते हैं कैसे प्रगट होते हैं कि जैसे निरूपण और यतन करने से रतन सों मोल नाम कीमत प्रगट होजाता है यहां पै नाम निरूपण यह है कि राम नाम का क्या अर्थ है और कौन२ की स्थिति राम नाम में है यह अर्थ करने से निर्गुण सगुण ब्रह्म के अर्थ निकल आते हैं काहेसे कि निर्गुण सगुण ब्रह्मकी स्थिति राम नामहीं में है सो गोस्वामीजी कहते हैं कि यह नामार्थ निरूपण केवल रामनामहीं के यतन नाम उपाय से होगा भाव ज्ञान और बैराग्यादि साधन से नामार्थ निरूपण न होगा जब होगा तब रामनामहीं के यत्न से होगा दूसरेसे नहीं काहेसे कि और सब जितनी साधन हैं सो सब कुसाखी हैं और यथार्थ दुभाषी नहीहैं और राम नाम जोहै सो निर्गुण सगुण के बीच में यथार्थ वक्ता सुसाखीहै और उभय प्रबोधक चतुर दुभाषीहै इससे नामार्थ निरूपण रामनामहीं के यत्न से अर्थात् रामनामहीं के जपनेसे बिचारने से होगा दूसरे यत्नसे नामार्थ निर्गुण सगुण के स्वरूप निरूपण न होगा चाहैं कुछ करें जैसे रत्नका निरूपण याने मोल रत्नहींके यत्न नाम उपायसे होताहै भाव जब कुछ दिन रत्न का खरीद बिक्रयादि करे तब आपही रत्न का निरूपण याने मोल जान पड़ता है कि यह रत्न इतनी कीमत का है काहेसे कि रत्नके मूल रत्नहीं में हैं उसीसे प्रगट होते हैं तैसेही नामका निरूपण नामहीं के यत्नसे होगा भाव जब कुछ दिन रामनामको बिचार पूर्वक जपेगा तब आपही नाम निरूपण अर्थात् नामका अर्थ जो निर्गुण ब्रह्महै सो प्रगटत काहेसे कि निर्गुण ब्रह्म नामहीं में है उसीसे प्रगट होतहै भाव वहां रत्नके पारखी से रत्नकी प्रथम पहिचान करके व्यापार करना इहांपै संतगुरु के द्वारा राम नाम की प्रथम पहिचान होना याने जानना तिसके पीछे उपाय करना याने जपना वहांपै रत्नके व्यापार करते२ कुछ दिनमें रत्नकी पहिचान होनेका बोध होना इहांपै नाम जपते२ कुछ दिन में नामार्थ का बोधहोना वहांपै रत्नके बोधहोने से कीमत करना उस कीमतसे द्रव्यप्रगट होना इहांपै नामार्थ का बोधहोनेसे निर्गुण ब्रह्म जो मोलके समान रामनाम में स्थितहै सोऊ हृदय में प्रगट होजातेहैं भाव बिना रामनाम के जपे न नामार्थही निरूपण होगा न निर्गुणही ब्रह्म प्रगट होगा तातें रामनाम जपना यही सर्वोपरि है और निर्गुण ब्रह्म जो अगमहै सोभी सुगम होजाताहै रामनाम की कृपासे इससे रामनाम सर्वोपरि है ॥ ८ ॥ (मूल)

दो०। निर्गुणते यहि भांति बड़ नाम प्रभाउ अपार॥
कहउँ नाम बड़ रामते निज बिचार अनुसार॥९॥

अर्थ–श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्मते रामनाम यही भांति नाम इसी प्रकारसे बड़ाहै भाव और भांति नहीं बड़ाहै केवल प्रगट करादेना यही एक सौलभ्यता गुण करके नाम बड़ाहै इससे यही भांति कहा काहेसे कि जो निर्गुण ब्रह्म सब प्रकार से अगमहै सोभी रामनाम को निरूपण और रत करनेसे प्रगट होजाते हैं इससे जान पड़ता है कि निर्गुण को रामनाम ने निज बश करलिया है काहेसे कि रामनाम का प्रभाउ नाम प्रताप अपारहै अपार नाम जिसका किनारा नहींहै भाव उस प्रभाउ को कोकहि सकताहै श्रीगोस्वामीजी कहतेहैं कि निज नाम अपने विचार के अनुसार नाम रीति से सगुण ब्रह्म जो श्रीरामजीहैं तिनते रामनामको बड़ा कहउँ नाम कहताहूँ अब इहां से दो दोहा पर्य्यन्त गोस्वामीजी सगुण ब्रह्म श्रीरामजी से रामनामको बड़ा कहते हैं आगे इसी प्रकारके श्रीसीता नाम के प्रभाव अपार जानना चाहिये काहेसे कि युगल स्वरूप तत्त्व करके एकहीहैं इसमें संदेह न करना चाहिये ॥ ९ ॥ (मूल)

रामभक्त हित नर तनु धारी ॥
सहि संकट किय साधु सुखारी ॥ १ ॥

(अर्थ) श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि सगुण ब्रह्मजो सर्वोपरि साकेत बिहारी श्री रामजी हैं सो तो भक्तन के हित याने रक्षार्थ नर नाम मनुष्य को तनु नाम शरीर-धारी नाम धारणकिये और नाना प्रकारके दण्डकादि बनमें सं नाम सम्यक प्रकारसे कट नाम कष्ट याने दुःख को सहिके तबसाधुनको सुखारी नाम सुखी किये इति इहां पै भक्तन हित नर तनु धारी कहनेका यह भाव है कि अवतारतो सबके हितार्थ भया है परंच भक्तके वास्ते मनुष्य भया है इससे भक्तको प्रधान कहा काहेसे कि नाम रूप दोनों उपाधि याने धर्मचिन्तक हैं औ रामजीके मुख्य धर्म शरणागतकी रक्षाकरना यही है ताते रामजी केवल भक्तहीके रक्षार्थ अवतार लेते हैं यह सर्वत्र प्रमाण है यथा उपासकानांकार्य्यार्थे ब्रह्मणोरूपकल्पना ॥ इतिश्रुतिः ॥ अर्थात् उपासक जो भक्तहैं तिनके कार्य्यार्थ याने रक्षार्थ दर्शनार्थ भगवतने अपने रूपको कल्पना याने धारण करते हैं यह अथर्वण वेद रामतापनीयोपनिषदकी श्रुति है पुनः ॥ परित्राणायसाधूनां विनाशायच दुष्कृता मितिगीतायां इतिसाधुनकेरक्षार्थे पुनः ॥ एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा ॥ व्यापक विश्वरूप भगवाना । तेहि धरिदेह चरित कृतनाना ॥ सो केवल भक्तन हित लागी । परम कृपालु प्रणत हितलागी ॥ इति केवलभक्तन हितलागी पुनः ॥ अगुण अरूप अलख अज जोई । भक्त प्रेम बश सगुण सो होई ॥ इति पुनः ॥ जबजब होइ धरम कै हानी । बाढ़हिं असुर महा अभिमानी ॥ करहिं अनीति जाइ नहिंबरणी । सीदहिं बिप्र

धेनु सुर धरणी ॥ तबतब प्रभुधरि बिबिधि शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥ असुरमारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुतिसेतु। जग बिस्तारहिं बिशद यश रामजन्म करहेतु ॥ सोइ यश गाइ भक्त भवतरहीं। कृपासिंधु जनहित तनु धरहीं। इति जनहित तनु धरहीं॥ पुनः अगुण अलेप अमान एकरस। राम सगुण भए भक्त प्रेम वश॥ इति भक्त प्रेमवश सगुणभए पुनः॥ सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा॥ नरहरि प्रगटकिए प्रहलादा॥ इति नृसिंहजी प्रह्लादकरके प्रगटभए पुनः॥ मुनि धीर योगी सिद्ध संतत बिमल मनपर ध्यावहीं। कहिनेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं॥ सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी। अवतरेउ अपने भक्तहित निजतंत्र नित रघुकुलमनी॥ इति अपने भक्तहित अवतरेउ पुनः॥ तुम्ह सारिखे संत प्रियमोरे। धरौंदेह नहिं आन निहोरे॥ इति पुनः भक्तहेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनभूप। इत्यादि बहुत कहा है इससे राम भक्त हित नरतनु धारी कहा नरतनु कहनेका भाव यह है कि मनुष्यदेह अति उत्तम है इससे प्रभुको नरदेह अतिशय प्रिय है यथा आत्मानंमानुषंमन्ये रामं दशरथात्मजम्॥ इत्यादि बाल्मिीकिमें प्रसिद्ध है इससे नरतनु कहा और संकष्ट यथा॥ अजिरबसन फल असन महि शयन डासि कुशपात। बसि तरुतर नित सहत दुख हिम तप बरषा वात॥ इत्यादि दुःखको सहिके तब साधुनको सुखीकिये भाव आप प्रथम दुःखी भए तब साधुनको सुखीकिये इससे यह देखाया कि जब रामजीने मनुष्य शरीर धारण करके दुःख पाया तो और की क्या कथा इससे संसारमें शरीर धारणकरनेवालेको सुखनहीं है और न होगा न भया है ताते उत्तम मनुष्य शरीर पाके भगवतका भजनहीं करना सर्वोपरि है और इस दुःखदाई संसारमें वही जन सुखी भी हैं कि जो प्रभुके भजन करते हैं अब यहां से लैके दोनों दोहा पर्यंत रामजीको संकष्ट सहिके जानियेगा काहेसे कि रामजीनें जो२ कार्य्य किया है सो सब दुःखही सहिके किया है सो सब आगे जहां तहां कहते जायँगे॥ १॥ मूल

नाम सप्रेम जपत अनयासा।
भक्तहोहिं मुदमंगल बासा॥ २॥

(अर्थ) और राम नामको सप्रेम अर्थात् प्रेमके सहित जपत नाम जपतेही मात्र म अनायास नाम बिना परिश्रमहीं भाव राम नामको कुछभी क्लेश नहीं होते हैं और भक्त जो दास हैं सो दुःखसे रहित होके मुदनाम आनन्द मंगलके बासा नाम निवास स्थान होहिं नाम होजाते हैं भाव जितने आनन्द मंगल हैं ज्ञान वैराग्यादिक सो सब तिनके हृदयमें आके बसते हैं इससे यह देखाया कि रामजीनें तो सकल मुनिन्हके आश्रमान्हि

जाइजाइ सुख दीन्ह ॥ इत्यादि पूर्वोक्त संकष्ट सहिके साधुनको सुखी किये और राम नाममें तौ बिना परिश्रमहीं जपतमात्र में भक्तनको आनन्दमंगलके स्थान करदेते हैं इससे राम नाम रामजीसे बड़ा है अब यहांसे लेके दोनों दोहा पर्य्यंत नामको भी बिना परिश्रमहीं जानियेगा काहेसे कि राम नामने बिना परिश्रमहीं सबको सुखी किया है इससे पूर्वमें एक २ चौपाईमें गोस्वामीजी ने नाम और नामी की व्यवस्था कहिके अब आगे यह दिखाते हैं कि रामजीने संकष्ट सहिके किनको २ सुखारी किये हैं और राम नाममें अनायास याने बिना परिश्रम कितनेको सुखी किये हैं सो एक २ चौपाई करके देखाते हैं और नामको नामीसे बड़ा कहते हैं ॥ (मूल)

रामएक तापस तिय तारी ॥
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥ ३ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि रामजीने तो गिनती की एक तापस तिय अर्थात् महातपस्वी राजगौतम ऋषिकी तिय नाम स्त्री जो अहिल्याजी रहीं तिनको तारी याने पापरूप समुद्रसे तारी नाम पार करदिया और रामनाम ने तो कोटि नाम बहुतसे खल नाम दुष्टकी कुमति नाम कुत्सित् याने खराब मतिनाम बुद्धि को सुधारी नाम सुधार दिया भाव कुमतिको लौटाके सुमति करदिया यहां पै कोटि अथवा सहस्र शत इत्यादि वहुवाचक जानना चाहिए (शङ्का) यहां पै गोस्वामीजी ने प्रथमही अहिल्या को क्यों कहा प्रथम तो ॥ ऋषि हित राम सुकेत सुताकी। सहित सेन सुत कीन्ह बिवाकी ॥ यह कहना रहा पीछे अहिल्याको कहना रहा काहेसे कि अहिल्या का उद्धार पीछे भया है इसका क्या अभिप्राय है (उत्तर) इसका अभिप्राय प्रथम तो यह है कि कहने में उलटा पलटी होजाती है ऐसा वाल्मीकादि में कई एक जगह कहाहै इससे इसमें सन्देह नहीं है दूसरा प्रथम इससे कहा कि एकतो महातपस्वी गौतम ऋषि की स्त्री हैं दूसरे ब्रह्मा की पुत्री हैं इससे शुभ जानिकै प्रथम कहा अथवा श्रीरामजीमें असंख्य गुण हैं परञ्च दो गुण सबसे विलक्षण हैं एकतो दीनबन्धुत्व दूसरा बिना कारणही दयालु होजाना यह दो गुण सर्वोपरि सूचित करने के वास्ते प्रथम कहा काहेसे कि यह दोनों गुण अहिल्या के उद्धार में प्रसिद्ध हैं यथा ॥ अस प्रभु दीनबन्धु हरि कारणरहित दयाल । तुलसिदास शठ ताहि भजु छांड़ि कपट जञ्जाल ॥ इत्यादि कहाहै इसीसे अहिल्या के उद्धार में गोस्वामीजीने अपनेको मूर्ख कहके ताड़ना कियाहै इससे जान पड़ता है कि अहिल्या का उद्धार गोस्वामीजीको बहुत प्रिय लगा इससे प्रथम कहा काहेसे कि जैसा उद्धार रामजी ने अहिल्या का कियाहै तैसा दूसरेका नहीं कियाहै काहेसे कि औरका तो स्मरण

में आनेसे और प्रार्थना करनेसे उद्धार किया है दूसरें सब देहधारी रहे और अहिल्या तो सब प्रकारसे हीन पाषाण रही न शरणमें आई न कुछ प्रार्थनाही किया तिनको प्रभु ने अपनी तरफसे कृपा करके उद्धार किया ऐसे दीनबन्धु दयालु हैं इससे प्रथम कहा अथवा रामजीके सुकृत गुणको जनाया यथा ॥ मुनि तिय तरी लगत पगधूरी । कीरति रही भुवन भरिपूरी ॥ अथवा रामजीका प्रताप गुण जो सर्वोपरि है तिसको जनाने के वास्ते प्रथम कहा काहेसे कि अहिल्याकाही उद्धार सुनके जनकपुरवासी स्त्रियों का सन्देह दूर भयाहै यथा ॥ सब असमञ्जस अहै सयानी । यह सुनि अपर कहै मृदुबानी॥ सखि इनकहँ कोउकोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं । परसि जासुपद पङ्कज धूरी । तरी अहिल्या कृत अघ भूरी ॥ सोकि रहहिं बिनु शिवधनु तोरे । यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥ ज्यहि विरञ्चि रचि सीय सँवारी । त्यहि श्यामल बरु रचेउ विचारी ॥ तासु वचन सुनि सब हरषानी । ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी ॥ इत्यादि प्रतापको जनाने के वास्ते प्रथम कहा अथवा रामजीका ब्रह्मत्व जनाया काहेसे कि ताड़ुकादि के बधमें यथार्थ ब्रह्मत्व नहीं दर्शा है क्योंकि उसमें बल और बाणविद्याका प्रयोजन है और अहिल्याके उद्धारमें तो साक्षात् ऐश्वर्य्य प्रगट होगया है काहेसे कि पाषाण में चरणधूरी लगने से स्त्री होजाना यह अद्‌भुत काम है इससे प्रथम कहा इससे यह दिखाया कि रामजी ने तो गिनती की एक तापस तियको तारा तापसतिय कहने का यह भाव है कि वह तो तपस्वी की स्त्री रही इससे तरबेही योग्य रही और रामनाम ने तो कोटिन दुष्टनकी कुमतिको सुमति करदिया भाव साधु करदिया तिसमें भी बिना परिश्रमही से और जो कहो कि रामजीको क्या परिश्रम भया तो परिश्रम यह भया कि एक तो महाघोर बनमें पगसे चलके उद्धार किया दूसरे ब्राह्मणी को चरण छुवाए इस बातका महाराजको बड़ा पश्चात्ताप भया यथा विनय ॥ शिला शाप सन्ताप विगत भइ परसत पावन पांव । दई सुगति सो न हेरि हरष हिय चरण छुएको पछिताव ॥ इत्यादि कहाहै इससे रामजीसे नाम बड़ाहै ॥ ३ ॥ (मूल)

ऋषिहित राम सुकेतु सुताकी ।
सहित सेन सुत कीन्ह बिवाकी ॥ ४ ॥

अर्थ—पुनः श्रीरामजीने तो ऋषि जो विश्वामित्रजी हैं तिनके हित अर्थात् यज्ञरक्षार्थ सुकेतु राक्षसकी सुता नाम पुत्री जो ताड़ुका रही तिनको सहित सेन याने फौजन के सहित सुत जो मारीच सुबाहु रहा तिनको बिवाकी नाम बाकीसे रहित कीन्ह नाम करदीन्ह जो कहो कि मारीच तो रहिबै किया पुनः बिवाकी कैसे भया बो मारीच को

रामजीने न मारा तो क्या भया विश्वामित्रजी के आश्रम में तो न राखा वहां से तो बिवाकी किए इति यहां पै ऋषिहित कहनेका यह भावहै कि स्त्री का मारना वीरों का काम नहीं है दूसरे स्त्री का मारना शास्त्रमें दोष भी लिखाहै इससे गोस्वामीजी कहते हैं कि ऋषिहित मारा है कुछ अपने हित नहीं माराहै भाव जब विश्वामित्रजी ने आज्ञादी तब परोपकारार्थ रामजी ने मारा इससे ऋषिहित गोस्वामीजी ने कहा ॥ ४ ॥ (मूल)

सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रवि निशि नासा ॥५॥

अर्थ—वहां पै सुकेतु राक्षस की पुत्री ताड़का रही यहां पै मन करके उत्पन्न दुरासा नाम दुर्वासना वहां पै ताड़का के पुत्र मारीच सुबाहु यहां पै दुर्वासना करके दोष दुःख वहां पै सेनाके सहित यहां पै नाना मनोर्थ के सहित वहां पै विश्वामित्रजी के हितार्थ रामजी ने बिवाकी किए यहां पै दासनके हितार्थ रामनाम ने दलै नाम नाश करदेते हैं कैसे नाश करदेते हैं कि जिमि नाम जैसे रवि नाम सूर्य्य भगवान ने दोष दुःख के सहित निशि जो रात्रिहै तिसको नाश करदेते हैं अथवा दोष जो त्रैताप है और दुःख जो काम क्रोध लोभादिक हैं यहां पै दोष त्रैतापही को जानना चाहिए यथा ॥ त्रिविधि दोष दुख दारिद दावा ॥ इत्यादि कहाहै इससे दैहिक दैविक भौतिक इति दोष और दुःख कामही क्रोधादिको जानना काहेसे कि जिन करके नानामनोर्थ होनां और न प्राप्ति होने से दुःख होना इति दोष दुःख और दुरासा जो दुर्वासना है याने बुरी वस्तु की चाह करना इति दोष दुःख और दुरासाके सहित दासहो परञ्च रामनाम सबको नाश करदेते हैं कैसे जैसे सूर्य्य दोष दुःखके सहित रात्रिको नाश करदेते हैं यथा ॥ उघरहिं विमल विलोचन हीके। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥ इत्यादि कहाहै अथवा वहां पै रात्रि है यहां पै दुर्वासना सोई रात्रिहै वहां पै रात्रिके दोष अर्थात् मल मूत्रादि भ्रष्ट वस्तुका स्पर्श होना इति दोष और यहां पै त्रिताप यही दोषहै वहां पै रात्रिका दुःख याने सर्प वृश्चिकादि तथा चौर कण्टक ऊँच नीच इत्यादि कि जिन करके दुःख होना यही रात्रिके दुःख हैं यहां पै काम क्रोध लोभादिक जो षड्विकार हैं सोई तो दुःख हैं वहां पै सूर्य्य लोक के हितार्थ रात्रिको दोष दुःखके सहित नाश करते हैं यहां पै रामनाम ने दासोंके हितार्थ दुर्वासना रूप रात्रिको दोष दुःख के सहित नाश करदेते हैं इससे यह दिखाया कि रामजीने तो परिश्रम से रणभूमि में सबको मारकर तब सिद्धाश्रमवासी ऋषियों को सुखी किये और रामनाम तो बिना श्रमहीं सबको नाश करके दासको सुखी करदेते हैं इससे रामनाम रामजीसे बड़ा है ॥ ९ ॥ (मूल)

भंजेउ राम आपु भवचापू।
भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥ ६ ॥

अर्थ-पुनः श्रीरामजी ने तो स्वयं आप भव जो श्रीशिवजी हैं तिनका जो चापनाम धनुष है सो भंज्यो नाम तोड़े हैं यहां पै आप कहनेका यह भाव है कि कोई उपाय से नहीं तोड़े हैं स्वयं आप अपने हस्त कमलसे तोड़े हैं और भव जो संसार है तिनके जो भय हैं याने जन्म मरण सो केवल नामके प्रतापसे भञ्जन नाम टूटजाते हैं यहां पै परिश्रम यह है कि अयोध्याजी से विश्वामित्रजी के साथ पैदल चलना और कन्द मूलादि भोजन करना तब जनकपुर जाके अपने हाथसे महाकठिन जो पिनाक है तिसको तोड़ना और मुनियों के साथ पृथ्वी आदिपै सोना परिश्रमही तो है और रामनाम तो केवल अपने प्रतापही से तोड़ डालते हैं इससे नाम बड़ा है ॥ ६ ॥ (मूल)

दण्डकबन प्रभु कीन्ह सुहावन।
जन मन अमित नाम किय पावन ॥ ७ ॥

अर्थ-पुनः श्रीरामजीने तो गिनती के एक दण्डक बनको सुहावन नाम पवित्र किये काहे से कि प्रभु नाम समर्थ हैं यहां पै सुहावन नाम पवित्रही का अर्थ जानना चाहिये काहेसे कि यहां पै पवित्रही का प्रयोजन है सो आगे इसी चौपाई में कहाहै कि ॥ जन मन अमित नाम किय पावन ॥ इससे सुहावन के अर्थ पावनही के हैं और भी रामायण में सर्वत्र कहाहै यथा ॥ दण्डकबन पुनीत प्रभु करहू। उग्रशाप मुनिवर कर हरहू ॥ पुनः ॥ जे पद परसि तरी ऋषिनारी। दण्डक कानन पावनकारी ॥ इति पुनः ॥ तुरत विमान तहां चलि आवा। दण्डकबन जहँ परम सुहावा ॥ इति यहां पै भी पवित्रही जानब पुनः ॥ कहि दण्डकबन पावनताई ॥ इत्यादि बहुत कहाहै इससे पवित्रही जानना चाहिए और रामनाम तो अमित नाम जिसकी इति नहीं है अर्थात् बहुत से जन जो दासहैं तिनका जो मन है सो पावन नाम पवित्र किया भाव रामजीनें तो स्वयं दण्डकबनमें जाके और नानाप्रकार के सङ्कष्ट सहिके तब एक दण्डकबनको पवित्र किया और रामनामने तो बिना परिश्रमही बहुतसे दासनके मनको पवित्र कियाहै यहां पै मन कहने का यह भावहै कि मनका विस्तार बड़ा भारी बनरूप है और मनहीं सबका कारण है इससे मनको पवित्र कहा पवित्र नाम बासना से रहित होना काहेसे कि जबतक मन बासना से रहित न होगा तबतक संसारसे छूटना कठिन है यथा ॥ नहिं मुक्ति आकाश नहिं मुक्ति पाताल। जब मनकी मनसा मिटै तबहीं मुक्ति विशाल ॥ इत्यादि कबीरजीने कहाहै औरभी गीतादिक में बहुत कहाहै इससे मनहीं सबका कारण है ताते मन

[library stamp]

को पावन कहा (शङ्का) यहां पै गोस्वामीजी ने अयोध्याकाण्ड को छोड़के आरण्यकांड क्यों कहा इसका क्या हेतु है (उत्तर) इसका मुख्य हेतु यह है कि गोस्वामीजी मुख्य२ रामजीके चरित्र कहते हैं कि जिसमें रामजीका प्रताप और ऐश्वर्य दर्शाहो और दासनकी रक्षा अथवा उद्धार भी भयाहो जैसा कि अहिल्या का उद्धार किया पुनः विश्वामित्र की यज्ञरक्षार्थ राक्षसन को मारा पुनः शिवजीका धनुष तोड़के सबको सुखी किये पुनः दण्डकबन शुक्राचार्यजीके शाप करके नष्ट भ्रष्ट होगया रहा तिसको प्रभुने पावन किया देखिये जैसा कि इन सब कार्य में रामजीके ब्रह्मत्व ऐश्वर्य्य और प्रताप प्रगट भया है तैसा अयोध्याकाण्ड में नहीं प्रगट भया है और न किसी का उद्धारही भया है और सबको शोकही भया है इससे अयोध्याकाण्ड को नहीं कहा मुख्य तो यह अभिप्राय है जो कदापि कहोकि निषाद राजको तो कहना रहा काहेसे कि रामजीने गुहकू को अपनाया है क्योंकि आगे शवरी को गृद्ध्रराज को सुग्रीवको बिभीषण को कहा है इससे निषादराज को भी अवश्य कहना उचित रहा तो इसका उत्तर यह है कि शवरी को और गृद्ध्रराज को तो उसी समय में गति दिया है इससे उनको कहा और निषादराजको तो सामान्य रीति से अपनाया है कुछ दुःखी जानिके नहीं अपनाया है जैसा कि सुग्रीव और बिभीषण को दुःखी जान अपनाया है इससे नहीं कहा अथवा अयोध्याकाण्ड में मुख्य श्रीभरतजीके चरित हैं रामजीके सामान्य चरित हैं यथा ॥ पुरनर भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥ इत्यादि कहा है और रामजीके चरित्र आरण्यकाण्ड में हैं यथा ॥ अब प्रभुचरित सुनहु अतिपावन । करत जे बन सुरनर मुनि भावन ॥ इत्यादि कहा है इससे अयोध्याकाण्ड नहीं कहा आरण्यकाण्ड कहा आगे जो हो ॥ ७ ॥ (मूल)

निशिचर निकर दले रघुनन्दन ।
नाम सकल कलिकलुष निकन्दन ॥ ८ ॥

अर्थ–पुनः श्रीरघुनन्दन रामजीने तो जनस्थानके वासी निशिचर निकर नाम समूह अर्थात् खरदूषणादि लैके चौदह सहस्र राक्षसों को दले नाम नाश करदिया काहेसे कि बड़े धर्मात्मा रघुराजाके आनन्द देनेवाले हैं याने जैसे धर्मात्मा रघुराजा रहे तैसेही रामजी भए इससे धर्मार्थ दुष्टों को मारा और रामनाम तो सकल नाम सम्पूर्ण कलि नाम कलह और कलुष नाम पाप अथवा कलियुग का जो कलुष नाम पाप है तिसको निकन्दन नाम निर्मूल करदिया भाव रामजी ने तो संग्राम में परिश्रमसे लड़िकै सबको मारा और सब ऋषियों को सुखी किया और रामनाम तो बिना परिश्रमही

सब पापों को निर्मूल करके दासको सुखी करदेते हैं इससे नाम रामजीसे बड़ाहै ॥८

दो०। शिवरी गीध सुसेवकन्ह सुगति दीन्हरघुनाथ
नाम उधारे अमितबल वेदविदितगुणगाथ ६

अर्थ–पुनः श्रीराम रघुनाथजी ने तो शिवरी और गृद्ध्रराजको सुगति नाम सुन्दर गति याने परमपद दीन्ह नाम दिहिनि काहेसे कि सुसेवकन्ह अर्थात् सुन्दर सेवकिन्हि रहै इससे सुन्दर गति देवेयोग्य रहै यथा ॥ तनु तजि तात जाहु मम धामा ॥ पुनः गीध अधम खग आमिष भोगी । गति दीन्हीं जो यांचत योगी ॥ इति ॥ पुनः शिवरी को गति दिय यथा ॥ तजि योग पावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥ इति पुनः ॥ जातिहीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्ह अस नारि ॥ इत्याद सुगति दिए और रामनामने तो अमित नाम जिसकी इति नहीं है अर्थात् बहुतसे खल नाम दुष्टों को उधार नाम उद्धार किये हैं सो यह नाम गुणका जो गाथ नाम कथाहै सो वेद में वि-दित नामाविख्यात है (शङ्का) यहां पै प्रथम शिवरीको कहा पीछे गृद्ध्रराजको सो क्यों कहा काहेसे कि प्रथम गीधको सुगति दियाहै पीछे शिवरी को इससे प्रथम जटायू को कहना रहा (उत्तर) इसका अभिप्राय यह है कि शिवरी रामजी को अतिशय प्रियहै काहेसे कि नवधाभक्ति करके युक्त है यथा ॥ सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे ॥ इत्यादि कहाहै और इस दोहा में भी सुसेवकिन्हि शब्द करके शिवरीही सिद्ध होती है काहेसे कि सुसेवकिन्हि स्त्रीवाचक है इससे अति प्रिय जानिकै प्रथम कहा और दूसरा आशय नहीं है इससे यह दिखाया कि रामजी ने तो बनमें नाना सङ्कष्ट सहिकै तब इनदोनों को सुगति दिया और रामनाम ने तो बिना परिश्रमहीं बहुतसे खलों को उद्धार किया है इससे रामनाम रामजी से बड़ाहै और सबके सारहैं ॥ ६ ॥ (मूल)

राम सुकण्ठ बिभीषण दोऊ ।
राखे शरण जान सबकोऊ ॥ १ ॥

अर्थ–पुनः श्रीरामजीने तो सुकण्ठ जो सुग्रीवजी हैं और विभीषणजी इन दोउन को शरण में राखे सो यह बात सब कोऊ जानते हैं कि श्रीरामजी बड़े कृपालु और दीनबन्धु हैं देखो जिन सुग्रीव को बालि के भय के मारे कहीं ठेकाना न रहा यथा ॥ ताके भय रघुबीर कृपाला । सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥ इत्यादि स्वयं आपही कहा है सो सुग्रीव को श्रीरामजीनें अपने शरण में राखे और अखण्डराज्य दिये यथा ॥ बालित्रास ब्याकुल दिनराती । तन बहु ब्रन चिन्ता जर छाती ॥ सोइ सुग्रीव

कीन्ह कपिराऊ। अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ॥ इत्यादि शरण में राखे सो सबकोऊ जानते हैं पुनः विभीषण को यथा॥ रावण क्रोध अनल निज श्वास समीर प्रचण्ड। जरत विभीषण राखेउ दीन्हों राज अखण्ड॥ जो सम्पति शिव रावणहिं दीन्ह दिए दशमाथ। सोइ सम्पदा विभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ॥ इत्यादि शरण में राखे सो सब कोऊ जानते हैं भाव छिपा नहीं है॥ १॥ (मूल)

नाम गरीब अनेक निवाजे।
लोकबेद बर बिरद बिराजे॥ २॥

अर्थ–और रामनामने तो अनेकन गरीबन को निवाजे नाम रक्षा करके शरण में राखे हैं सो यह बात लोक में और बेदमें बर नाम श्रेष्ठ बिरद नाम बाना बिराजे नाम विशेष करके राजे नाम शोभा देरहा है भाव रामनाम बड़े गरीब निवाज हैं यह गरीब निवाजत्व जो बाना है सो प्रसिद्ध होरहाहै इहांपै लोक बेद कहने का यह भाव है कि लोक और बेद दूनौं परस्पर हैं भाव लोकसे बेद सिद्ध होते हैं बेदसे लोक सिद्ध होतेहैं इससे दूनौं परस्परहैं और अनादि हैं यथा॥ सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला॥ इत्यादि कहाहै इससे लोक बेद दोऊ कहे इससे यह दिखाया कि रामजीने तो परिश्रम पूर्वक चालिके तब इन दूनौं को शरणमें राखे और रामनामने तो बिना श्रमहिं अनेक गरीबन को रक्षा किये हैं इससे नाम नामीसे बड़ाहै॥ २॥ (मूल)

राम भालु कपि कटक बटोरा।
सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥ ३॥

अर्थ–पुनः श्रीरामजीने तो भालु और कपि नाम बानरके कटक नाम सेनाबटोरा नाम एकत्र किया और सौ योजनके समुद्र में सेतु नाम पुल बांधन के हेतु नाम कारण थोरा श्रम न किया भाव बहुत परिश्रम किया तब पांच रोजमें सौ योजन बिस्तीर्ण और दश योजन चौड़ा सेतु बांधे तब सब कटक पार भया॥ ३॥ (मूल)

नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं॥
करहु बिचार सुजन मनमाहीं॥ ४॥

अर्थ–और रामनाम को तो लेतहि मात्र में भवसिंधु अर्थात् संसार रूप समुद्र सुखाहीं नाम सूख जातेहैं सो इस बात को सुजन जन याने तत्त्ववेत्ता जोजन हैं सो अपने मनमें बिचार करहु कि रामनाम को लेनेसे जन्म मरण छूटताहै कि नहीं सुजन कहने का यह भाव है कि दुष्टजन नामके माहात्म्य क्या जानें वह तो दुर्मदांध होरहे हैं और

सुजन जो संत महात्माहैं सो पूर्ण नामके ज्ञाता होते हैं इससे सुजन को कहा इससे यह दिखाया कि रामजीने तो बहुत परिश्रम किया तब शत योजन के समुद्र में सेतु बांधे कुछ सुखाये नहीं और रामनाम को तो लेतहि मात्रमें महा दुस्तर जो संसार रूप समुद्र है कि जिसके चौरासी लक्ष योनी में वर्ष प्रमाण से भ्रमण करना यही अगाधता है सो सूख जातेहैं विना श्रमहीं भाव जन्म मरण से रहित होना यही सूखनाहै इससे रामजीसे नाम बड़ाहै ॥ ४ ॥ (मूल)

राम सकुल रण रावण मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥ ५ ॥

अर्थ--श्रीरामजी ने तो कुलके साहित रणमें रावण को मारा रणमें कहने का यह भावहै कि बड़ी परेशानी से कई एक दिनमें युद्ध करते२ तब मारे कुछ सहजहीं न मारे और सीय जो श्रीजानकीजी हैं तिनके साहित निज नाम अपना पुर जो श्रीअयोध्याजी है तहां पगु धारानाम पधारे इहांपै सीय सहित कहनेका यह भाव है कि जानकीहीजी के वास्ते रामजी ने कुलके सहित रावणको मारा दूसरे के वास्ते नहीं न जानकीजी हरी जातीं न रावण मारा जाता इससे सीय सहित कहा ॥ ५ ॥ (मूल)

राजा राम अवध रजधानी। गावत गुण सुर मुनिवर बानी ॥ ६ ॥

अर्थ--और अवध राजधानी में रामजी राजा भए अथवा सबके राजा श्रीरामजी अवध राजधानी के राजा भए यहांपै अवध राजधानी कहने का यह भाव है कि कुछ रामजीके सामने से राजधानी नहीं भई है यह तो अनादिकालसे राजधानी चली आती है और जहांपै एकसे एक धर्मात्मा राजा भए हैं तहांपै रामजी राजा भए और श्री जानकी जी रानी भईं इससे अवधराजधानी कहा अथवा यह दिखाया कि ऐसे सर्वोपरि श्रीराम राजा कि जिनके एक२ रोम में कोटि२ ब्रह्माण्ड स्थित हैं सो प्रभु सर्वेश्वर सामान्य अयोध्या राजधानी के राजा भए और सप्तद्वीप नवखण्डके स्वामी कहाए ऐसी रामजीकी अद्भुत लीलाहै यथा ॥ भूमि सप्तसागर मेखला। एक भूप रघुपति कोशला॥ भुवन अनेक रामप्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥ सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरणत हीनता घनेरी॥ इत्यादि कहाहै इससे अवधराजधानी कहा भाव सामान्य प्राकृतराजाकी राजधानी में राजा भए और आज पर्य्यन्त जिनके दिव्य गुणों को सुर जो देवता हैं और मुनि जो हैं मननशीलवाले याने जिनका मन स्वबश में है तिन्होंने वर नाम श्रेष्ठबाणी में अर्थात् देवबाणी में गावत नाम गाते हैं भाव जब देवता

मुनि गाते हैं तो सबको रामयश गाना चाहिए जो न गावैं तिनको धिक् है ॥६॥ (मूल)

सेवक सुमिरत नाम सप्रीती।
बिनु श्रम प्रबल मोहदल जीती ॥ ७ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहत हैं कि सेवक जो दासहैं सो रामनामको सप्रीती अर्थात् प्रीतिके सहित सुमिरत नाम जपतमात्र में बिनु श्रम याने बिना परिश्रमहीं प्रबल अर्थात् प्रकर्ष करके बली जो मोहदल है तिनको जीती नाम जीतिकै (यहां पै मोह को प्रधान याने मुख्य कहा इसका हेतु यह है कि मोह जो है सो सर्व व्याधिका मूलहै और अज्ञानता का भी मुख्य कारण मोहही है यथा ॥ मोह सकल व्याधिन कर मूला ॥ इति पुनः ॥ मोहमूल बहु शूलप्रद त्यागहु तम अभिमान ॥ इति पुनः ॥ मोहनिशा सब सोवनहार। देखिय स्वप्न अनेक प्रकारा ॥ इति पुनः ॥ पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी। मोहविटप नहिं सकहिं उपारी ॥ इति पुनः ॥ सुनु मुनि मोह होय मन ताके। ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके ॥ इत्यादि बहुत कहा है इससे मोहको प्रधान कहा अथवा विनय में गोस्वामीजी ने मोहको रावण करके वर्णन किया है यथा ॥ देवमोह दशमौलि तद्भ्रात अहङ्कार पाकारिजित काम विश्रामहारी ॥ इत्यादि विस्तारपूर्वक मोहको रावण करिके वर्णन कियाहै और मोहरूप रावणका दल भी वर्णन कियाहै इससे मोहको दल सहित कहा क्योंकि मोह बड़ा प्रबल है कि जिसने सब चराचरको ग्रस लिया है इससे यह दिखाया कि रामजी ने तो दश मस्तकवाले रावणको कुलके सहित रणस्थलमें बड़ा परिश्रम करके मारा और श्रीजानकी जी आदि लेके सबको सुखी करके अयोध्या जी पधारे और यहां पै सेवक ने रामनामको प्रेमपूर्वक स्मर्णकरके बिना श्रमहीं मोहरूप रावण जो महाप्रबल है कि जिसके दशों इन्द्रिय यही दश मस्तक हैं तिसको संसाररूप रणस्थल में जीतिकै ॥ ७ ॥ (मूल)

फिरत सनेह मगन सुख अपने।
नाम प्रसाद शोच नहिं सपने ॥ ८ ॥

अर्थ—और अपने नाम स्नेहके सुखमें मगन नाम बूड़िकै फिरत नाम घूमते हैं और जिनको रामनामका प्रसाद नाम कृपानुग्रह से प्रसिद्ध तो को कहै कि स्वप्नमें भी कोई बातका शोच नाम चिन्ता नहीं है भाव रामस्वामी ने तो सम्पूर्ण दुष्ट राक्षसोंको मारके और पृथ्वीका भार उतारकर अवध राजधानी में बैठकर निष्कण्टक राज्य किया और सब प्रजा व महात्मनको सुखी देख आप सुखी भए और दासने तो रामनाम की प्रीति

पूर्वक जपिकै बिनु श्रमहीं मोहरूप रावणको सदल जीतिकै और निर्द्वन्द्व होके दशो दिशा घूमते हैं यही राजधानी है इति ॥ यहां पै फिरत कहिकै यह दिखाया कि नाम-जापकों को विचरनाही चाहिए एक ठौर न रहना चाहिए काहेसे कि एक स्थलमें रहने से अवश्य करके बन्धन होगा अथवा उपाधि होगी ताते भगवद्दासको विचरनाही परम कल्याण है यह वेद पुराण शास्त्रका सिद्धान्त है और यही परमाचार्य्य श्रीगोस्वामीजीका भी सब ग्रन्थोंमें सिद्धान्तहै यथा ॥ सम मानि निरादर आदरही । सब सन्त सुखी विचरन्त मही ॥ इत्यादि कहाहै इससे फिरत कहा यहां पै विशेषत्व यह है कि रामजी ने तो रणभूमि में श्रमपूर्वक रावण को मारके सबको सुखी किया और दासने तो रामनाम की कृपासे बिना श्रमहीं मोहदलको जीतिकै निर्द्वन्द्व होके सर्वत्र घूमते हैं इससे रामजी से नाम बड़ाहै ॥ ८ ॥ (मूल)

दो० । ब्रह्म रामते नामबड़ वरदायक बरदानि । रामचरित शतकोटिमहँ लियमहेश जियजानि ॥ ७

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि इसीप्रकार से ब्रह्मरामते नाम बड़ा है अथवा ब्रह्म जो निर्गुण है और सगुण जो रामजी हैं तिन दोउन ते रामनाम बड़ाहै और वरदायक जो है अर्थात् औरनको जो वर प्रदान करनेवाले जितने हैं तिनको भी रामनाम वरदानि नाम वरके देनेवाले हैं इति यहां पै गोस्वामीजी ने वरदायक पद बहुत विचारिकै रक्खा है काहेसे कि जो वरदायकों के नाम खोलिके कहते तो बहुतेरे कुविचारी लोग विरुद्ध मानते इससे परमचतुर गोस्वामीजी ने केवल वरदायक पद रक्खाहै कि ज्ञाता लोग आपही जानलेंगे इससे यहां पै वरदायक शब्दसे ब्रह्मा विष्णु शिव नारायण विराट महाविष्णु महाशिव महाब्रह्मा महामाया आदिनारायण ज्योतिस्वरूप नारायण वासुदेव परवासुदेव विभुप्रभुभूमा पुरुष अष्टभुजी क्षीरसमुद्रवासी गोलोकवासी जितने प्रभु हैं साकेतवासी जो कोई हैं सो सब और छोटे बड़े जितने अवतार हैं और जितनी देवि दुर्गादि शक्ति हैं सो सब और भी जो दूसरे को वरदान देने में समर्थ हैं तिन सबको श्रीरामनाम वरदान देनेवाले हैं भाव सबकोई रामनामहीं को जपिकै वरदान पाया है इससे रामनाम सर्वोपरि है और सबके सारहैं यथा (पुलस्त्यसंहितायां) सावित्रीब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेनच । शम्भुनारामरामेति पार्वतीजपतीस्फुटम् ॥ अर्थ ॥ ब्रह्मा सावित्री के सहित और नारायण लक्ष्मी के सहित और शिवजी पार्वती के सहित स्पष्ट रामराम इति जपते हैं ॥ इत्यादि बहुत प्रमाण हैं सो प्रथमही लिखि आएहैं इससे यहां पै गोस्वामीजीने सब ईश्वरनको नामजापक कहाहै काहेसे कि रामनाम ऐसाही है यहां

पै दूसरा अर्थ नहीं है इससे यह जान पड़ता है कि चाहे कोई मूर्ख पक्षपात समझे अथवा विरुद्ध माने परन्तु रामनाम सबका सार सिद्धान्त है इससे परे सिद्धान्त कुछ नहीं है और निर्पक्ष है इससे जो कोई अपना कल्याण चाहो सो पक्षपात बुद्धिको छोड़ के निर्वाणदायक रामनामको भजो हे भाइयो ! इस घोर दुःखदाई संसारमें एक रामनाम ही अभयदायक है और सब केवल कथनमात्र है अन्तमें सब कालग्राह्य होजायगा इसमें सन्देह न करना चाहिए पुनः ज्यदि रामनामको रामजीके शतनाम सौ कोटि रामायण मेंसे महेश जो श्रीशिवजी हैं याने महाईश्वर तत्त्वज्ञाता सो जियनाम जीव याने प्राण जानके लिये यहां पै प्राण कहनेका यह भावहै कि रामायण जो है सो वेदहै इससे जैसे वेदके प्राण रामनामको कहाहै यथा ॥ विधि हरिहरमय वेद प्राणसो ॥ पुनः ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवमिति ॥ पुनः ॥ अति पावन पुराण श्रुतिसारा ॥ इत्यादि कहा है इससे रामायणको भी प्राण कहा भाव सौ कोटि रामायणमें भी एक रामनामही सारहै देखिए यहां पै गोस्वामीजी ने क्या सिद्धान्त वचन कहाहै यह अपूर्व वचन विचार करबेयोग्य है काहेसे कि कहां सौ कोटि रामायण और कहां एक रामनाम तिसमें भी प्राण जानना चाहिए इससे रामनाम सर्वोपरि है इसीसे गोस्वामीजी ने रामायण के अन्त में कहा है कि ॥ सतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ॥ सो यही रामनामकी बन्दनाहीवाली नवौं दोहाकी चौपाई हैं दूसरी नहीं यह निश्चयकरके जानिएगा इसमें सन्देह करना अथवा दूसरा अर्थ करना भूलहै काहेसे कि जब सौ कोटि रामचरित्र के प्राण रामनाम हैं तो दूसरी कौन चौपाई सतपञ्च हैं इससे यही अर्थ सिद्धान्त है और अर्थ कहना व सुनना केवल चिमत्कारी है यहांपै शतकोटि महँ कहनेका यह भाव है कि गोस्वामीजी ने विचारा कि अब कहांतक सौ कोटि रामचरित को एक तरफ़ से वर्णन करके रामनामको बड़ा कहैं इससे एकही वक्तमें कहदेना चाहिए इसी सेरामचरित शतकोटि महँ लिय महेश जिय जानि कहा भाव सौ कोटि रामचरित से रामनाम बड़ा है यह दिखाया आगे यहां पर्य्यन्त सगुणब्रह्म श्रीरामजीसे नाम बड़ा कहके समासकिया अब यहांसे दो दोहापर्य्यन्त चतुर्युगके मुख्य २ नामजापकों के द्वारा नाममाहात्म्य कहते हैं और जिस प्रकारसे रामनाम को निर्गुण सगुणसे बड़ा कहा और वरदायक बरदानि कहा और सौ कोटि रामायणका प्राण कहा तैसेही श्रीसीतानामको भी जानना चाहिए काहेसे कि युगुलस्वरूप तत्त्व करके एकही हैं ॥ ७ ॥ (मूल)

नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी।
साज अमङ्गल मङ्गलराशी ॥ १ ॥

अर्थ–अब श्रीगोस्वामीजी पुनः प्रथम जापक श्रीशिवजी को वर्णन करते हैं कि जिन्होंने सौ कोटि रामायण को त्रिलोक में बांटिकै आप सबके सार जानिकै रामनाम को लेलिया और काशीजी में एकासनसे स्थित होके सहस्र मन्वन्तर तक जाप किया तत्पश्चात् रामजी ने प्रकट होके दर्शन दिया और शिवकी प्रार्थना करनेपर अपनी महा मंत्रराज षडक्षर काशीजी में मोक्ष होने के वास्ते दिया और अविनाशी पद भी दिया सोई गोस्वामीजी कहते हैं कि रामनामहीं के प्रसाद नाम कृपानुग्रह से शम्भु जो शिव जी हैं सो अविनाशी भए हैं और साज अमङ्गल अर्थात् सर्प बृश्चिक मुण्डमाल स्मशान का भस्म जटा इत्यादि अमङ्गल याने अशुभ साजको सजे नाम धारण किएहैं और हैं कैसे कि मङ्गलकी राशि नाम पुञ्ज अर्थात् सम्पूर्ण मङ्गल जो ज्ञान वैराग्यादिक हैं सो जिनमें स्थितहैं इससे यह दिखाया कि नामजापक जन शिवजीके समान अविनाशी भी होसकते हैं और कैसा भी अमङ्गल हो तो भी मङ्गलहीं हैं भाव यथार्थ मङ्गल वहीहै कि जिसमें सर्वोपरि श्रीरामनाम है और नामसे रहित कैसा भी मङ्गल हो तो भी अमङ्गलही है इससे रामनाम सर्वोपरि है यहां पै भी प्रथम शिवहीजी को कहा ॥ १ ॥ (मूल)

शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी।
नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी ॥ २ ॥

अर्थ–पुनः शुक जो श्रीशुकदेवस्वामी हैं परमहंसराज और सनकादिक चारों भाई जो हैं परमहंसराज और बड़े २ सिद्ध लोग जो हैं और मुनिलोग जो हैं मनन शील वाले सो सब रामनामहीं के प्रसाद नाम कृपानुग्रह से ब्रह्मानन्द का जो सुख है सो भोगी नाम भोगते हैं इति यहां पै पूर्वोक्त योगियों और सिद्धों को खोलदिया यथा॥ नाम जीह जपि जागहिं योगी। विरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥ ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा॥ इत्यादि कहि आये हैं सो इन्हीं सबको जानना चाहिये और यह जो कहि आये हैं कि होहिंसिद्ध अणिमादिक पाये तिनको भी यहां कहा इससे यह दिखाये कि शुकदेवजीसे और सनकादिक चारों भाइयों से बढ़के कौन परमहंस है और ब्रह्मज्ञानी सो भी रामनामहीं को जपते हैं और नामहीं के प्रताप से ज्ञानियों में शिरोमणि कहे जाते हैं तो दूसरे को क्या कहना है इससे रामनाम सर्वोपरि है (शंका) यहां पै गोस्वामीजीने शिवजीके पीछे शुकदेव स्वामी को क्यों कहा और सनकादिकों को प्रथम क्यों नहीं कहा प्रथम तो सनकादिक चारों भाइयों को कहना रहा काहे से कि सनकादिक सबके पूर्वज हैं और शुकदेव स्वामी अपूर्वज हैं इसका क्या अभिप्राय है (उत्तर) यहां पै शिवजी के पीछे शुक-

चार्य्यस्वामी को कहा इसके दो अभिप्राय हैं तिसमें प्रथम अभिप्राय तो यह है कि शिवजी शुकदेवस्वामी के आचार्य्य हैं काहे से कि शिवहीजीके मुखसे पूर्वजन्म में राम नाम पाये हैं जब कि शिवजीने अमर कथा पार्वतीजीको कहते रहे सो कथा शुकपुराण में बिस्तार संहित प्रसिद्ध और शुकदेवसंहिता में भी प्रसिद्धहै यथा ॥ शुकोवाच ॥ यन्नाम वैभवं श्रुत्वा शंकराच्छुकजन्मना। साक्षादीश्वरतांप्राप्तः पूजितोऽहंमुनीश्वरैः १ ॥ नातःपरतरंवस्तु श्रुतिसिद्धान्तगोचरम् । दृष्टंश्रुतंमयाक्वापि सत्यंसत्यंवचोमम् ॥ २ ॥ अर्थ ॥ श्रीशुकदेवस्वामीजीने सब ऋषियों प्रति कहा है कि जौन रामनामको माहात्म्य शिवजीके मुखसे हमने शुकपक्षी के जन्ममें सुनिके साक्षात् ईश्वरत्व को प्राप्त भये और सब मुनीश्वर करके हम पूजितभये ॥ १ ॥ इस रामनाम से परे वस्तु वेदसिद्धांतके बिषय में न तो कहीं हमने देखा न सुना यह हमारा बचन सत्य है ॥ २ ॥ इत्यादि कहा है इससे शिवजीको कृपापात्र जानके शिव के पीछे शुकदेवस्वामीको कहा काहेसे कि गुरु के पीछे शिष्य को कहना उचित है दूसरा अभिप्राय यह है कि शुकदेवस्वामी शिवजीके अंश हैं इससे आत्मा जानके कहा यथा ॥ आत्मावैजायतेपुत्रः ॥ इतिवेदानुशासनम् ॥ जैसा कि प्रथम में शिवजीके पीछे गणेशजीको कहा है सोई अभिप्राय यहां है इससे शिवजीके पीछे शुकदेवस्वामीको कहा जो कहोकि शिवजीके अंशसे शुकदेवजी भये हैं ऐसा कहां प्रमाणहै तो यह प्रमाण (ब्रह्मवैवर्त्तपुराण) के दशवें अध्याय में प्रसिद्धहै यथा (श्लोक) वशिष्ठस्यसुतःशक्तिःशक्तेःपुत्रःपराशरः। पराशरसुतः श्रीमान् कृष्णाद्वैपायनोहरिः ॥ व्यासपुत्र शिवांशश्च शुकश्चज्ञानिनांवरः ॥ इत्यादि कहा है इससे शिवजीके अंश निश्चय हैं और सनकादिकसे प्रथम कहा इसका हेतु यह है कि शुकाचार्य्यस्वामी ज्ञान करके सबसे बड़े हैं सो भागवतादि में प्रसिद्धहै और वेदमें भी लिखा है कि ॥ शुकोमुक्तोवामदेवोवाइतिश्रुतिः ॥ अर्थात् शुकदेवजी मुक्त हैं अथवा वामदेवजी मुक्त हैं इससे यह जानपड़ता है कि इन दोनों के समान रामनाम का ज्ञाता दूसरा नहीं है तबतो मुक्त हैं इससे ज्ञानावस्था करके सबसे बड़े हैं ताते शुकदेवजीको सनकादिकसे प्रथम कहा है काहेसे कि मनुस्मृति में भी लिखा है कि ज्ञानमान् सबसे बड़ा है अवस्था वाले बड़े नहीं हैं आगे जो हो ॥ २ ॥ (मूल)

नारद जानेउ नाम प्रतापू।
जगप्रिय हरिहरिहर प्रियआपू ॥ ३ ॥

अर्थ–पुनः श्रीनारदजी महाराज जो साक्षाद्देवर्षिहैं सोभी रामनामको प्रताप जानेउ है काहे से कि नामहीं के प्रताप से जगत्प्रिय जो हरि याने विष्णु भगवान् हैं और

हरे जो शिवजी हैं तिन हरिहर को आप प्रिय हैं भाव संसार को विष्णु शिव क्यों प्रिय हैं तो हरिहर हैं याने सबके क्लेशों को हरनेवाले हैं इससे जगप्रिय हैं तिनको नारदजी प्रिय हैं काहे से कि नामानन्य हैं भाव विष्णु भगवान भी रामनाम के परम जापक हैं और शिवजीभी रामनामके परम जापक हैं और नारदजीभी रामनामके परम जापक हैं इससे यह दिखाया कि नामानुरागियोंको नामानुरागी अति प्रिय होते हैं इससे हरिहर प्रिय आपू कहा भाव रामनाम के जपनेवाले प्राणी जब जगत्पूज्य विष्णु भगवान और शिवजीको प्रिय हैं तो संसार में ऐसा कौन दुष्टात्मा है कि जिनको प्रिय नहीं है भाव संसार में नाम जापकजन विष्णु शिव से भी अधिक प्रिय होते हैं इससे रामनामके जपनेवाले जीव धन्य हैं ॥ ३ ॥ (मूल)

नाम जपत प्रभुकीन्ह प्रसादू।
भगत शिरोमणि भे प्रहलादू ॥ ४ ॥

अर्थ—पुनः श्रीरामनाम को जपत नाम जपते में वा जपतमात्रमें प्रभु श्रीरामजीने प्रसादूनाम कृपानुग्रह कीन्ह जो प्रल्हादजी सब भक्तनके शिरोमणिभे नाम भये भाव सब भक्तन करके नमस्कृत भये यहां पै प्रभु कहने का यह भाव है कि हिरण्यकशिप बड़ा बली रहा तिनको मारिके प्रल्हादजीकी रक्षा किया और सब भक्तनके शिरोमणिकिये ऐसा प्रभु नाम समर्थ है इससे प्रभुकहा इससे यह देखाया कि रामनाम के जापकजन नवधाभक्ति वाले भक्तके शिरोमणि होजाते हैं नामकी कृपानुग्रहसे यहां पै प्रल्हादजी प्रेमी भक्त हैं इससे पूर्वोक्त जो चार प्रकारके भक्तहैं याने अति जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी तिनके शिरोमणि भये भाव प्रल्हादजीके समान निर्वासना होके जोई नाम प्रेम पूर्वक जपै सोई भक्त शिरोमणि होजाते हैं इससे प्रेमीनाम जापकजन धन्य हैं ॥ ४ ॥ (मूल)

ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ।
पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥ ५ ॥

अर्थ—पुनःध्रुवजी महाराजने विमाता सुरुचिके निरादर करनेसे और अपनी माता सुनीतिके कहेसे राज्यके वास्ते सगलानि नाम गलानिके सहित श्रीनारदजीके उपदेश से मथुरा में जायके हरिनाऊँ याने सब दुःखके हरनेवाले प्रभुका रामनाम जपेउ नाम जपते भये और नामहीं की कृपानुग्रहसे जिस राज्यके वास्ते विमाताने निरादर बचन कहारहा सोउ राज्य तीस सहस्र वर्ष भोगिके पीछे अनूपम ठाऊँ अर्थात् जिनकी उपमा के वास्ते त्रैलोक्यमें भी कोई दूसरा स्थल नहीं है और अचल नाम जिनके कल्पांतमें

भी चलायमान् याने नाश नहीं होती है सो अविचल ठाऊँ नाम मुकाम पायउ भाव राज्यही के वास्ते गलानि पूर्वक नाम जपेउ सो अक्षय राज्य पाये तो सामान्यराज्यकी अथवा अर्थकी प्राप्ति होना कौन दुर्लभ है यहां पै ध्रुवजीको अर्थार्थी भक्त जानना चाहिये और को आगे कहेंगे ॥ ५ ॥ (मूल)

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बशकरि राखे रामू ॥ ६ ॥

अर्थ–पुनः पवनात्मज जो श्रीहनुमानजी हैं सो भी पावन नाम जो श्रीरामनाम है तिसको सुमिर नाम स्मर्ण करके श्रीरामजी को अपने वश करि राखेहैं यहां पैं पावन नाम कहनेका यह भाव है कि और कोई तो रामनाम भी जपते रहे और भी नारायणादिक नाम जपते रहे और हनुमानजी तो केवल एक रामनामके अनन्य हैं दूसरा नाम लेते भी नहीं हैं इससे ग्रन्थकार स्वामी पावन नाम कहके केवल रामनाम जनाया काहेसे कि रामनामको पावन गोस्वामीजी पूर्वेही कहआए हैं कि ॥ यहिमहँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुराण श्रुतिसारा ॥ पुनः ॥ तीरथ अमित कोटिसम पावन। नाम अखिल अघ पूग नसावन ॥ इत्यादि कहाहै इससे रामनामको पावन कहके श्रीहनुमानजी की अनन्यता सूचित किया काहेसे कि हनुमानजी के समान दूसरा रामभक्त कोई नहीं है यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है इससे पावन नाम कहा और वश करि राखे कहने का यह भावहै कि रामजी घरभर हनुमानजी के ऋणियां होरहे हैं यही वश होनाहै इससे यह दिखाया कि नामजापक के रामजी घरभर वशी होजाते हैं परञ्च नामजापक हनुमान जीके समान परमानन्यहो तो यहां पै हनुमानजीको भी प्रेमीहीभक्त जानना चाहिए ॥ ६

अपर अजामिल गजगनिकाऊ ॥
भए मुकत हरिनाम प्रभाऊ ॥ ७ ॥

अर्थ–श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि अपरनाम और भी अजामिल गजराज तथा गणिकाऊ भाव बड़ा आश्चर्य है कि महानीचाचरण करनेवाली वेश्या भी हरिनामके प्रभावते मुकतनाम मोक्षभई भाव अजामिल गजेन्द्र मुक्तभये तोभए वैश्याभी मुक्त होगई ऐसा भगवत नाम का माहात्म्य है यहां पै आके गोस्वामीजीने पूर्वोक्त पांचहु भक्त को खोलदिया जैसाकि शुक सनकादिक तो ज्ञानी भक्त हैं और नारदजी प्रल्हादजी हनुमानजी प्रेमी भक्त हैं और ध्रुवजी अर्थार्थी भक्त हैं और अजामिल गजेन्द्र आर्त भक्त हैं काहेसे कि दुःखमें नाम लिया है और जिज्ञासु भक्त उसको कहते हैं कि

जो गूढ़गति याने निर्गुण सगुण ब्रह्मको जानना चाहे सो भी इन्हीं सबको जानना काहेसे कि नामको जपिके गूढ़गति प्रथम सबकोई जाने हैं और जिज्ञासु प्रथम सब को होना पड़ता है इससे जिज्ञासु को यहां पूर्वापर दोनों समझना चाहिये आगे जो हो और गणिका तो एकहु भक्त में नहीं हैं केवल स्वाभाविक सूग्गाको पढ़ाने में तरी है इसीसे गोस्वामीजीने गणिकाऊ कहा इससे यहां पै अजामिल और गजेन्द्र के द्वारा उपदेशार्थ यह दिखाया कि दुःखमें भी जो कोई रामनामको जपते हैं सो दुःखसे रहित होके सुखी होजाते हैं ताते कैसा भी दुःख होतो हाय २ न करना चाहिये रामनामको जपना चाहिये और गणिका के द्वारा यह दिखाया कि सुग्गा मैना को भी रामनाम पढ़ाने वाले धन्य हैं और अजामिलके द्वारा एक यह भी दिखाया कि जो कोई अपने पुत्र के नातीके भाई के तथा कुटुम्ब परिवार कोई के रामकृष्ण नारायण हरि विष्णु गोविन्द माधव मधुसूदन जनार्दन भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न बासुदेव केशव नरसिंह बलदेव हयग्रीव बामन रघुनाथ रघुवर रघुनन्दन दाशरथी जगन्नाथ भगवान इत्यादि नाम धरते हैं सो भी धन्य हैं काहेसे कि अजामिलने नारदजी. कहने से अपने पुत्र को नारायणनाम रक्खा तिससे गति भई दूसरे शास्त्र में भी लिखा है कि पुत्रादिक को भगवत संबन्धी नाम रखना चाहिये यहां पै अजामिल और गणिकाके द्वारा बिना जाने भगवतनामका माहात्म्य कहा है इससे भगवन्नामके आश्चर्य्य माहात्म्य हैं ॥ ७ ॥ (मूल)

कहौं कहांलग नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नामगुणगाई ॥ ८ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कृपालु कहते हैं कि रामनामकी बड़ाई नाम प्रशन्सा हम कहां लगि नाम कहांतक कहौं कि इतना है श्रीरामनामका जो दिव्यगुण है सो स्वयं श्रीराम जी भी नहीं गाय सक्तेहैं तो दूसरेको क्या कहना है यहां पै रामजी को कहने का यह भाव है कि और जितने शेष शारदादिक बक्ता हैं सो सब रामजीकी कृपा से हैं और श्रीरामजी जो हैं सो स्वयं बक्ता हैं इससे गोस्वामीजी ने विचारा कि और कौनको कहैं काहेसे कि और सब तो साधारण वक्ताहैं और नाममाहात्म्य बड़ा भारी है ताते सर्वोपरि जो बक्ता शिरोमणि रामजी हैं उन्हींको कहना चाहिए इससे सबको छोड़कर राम ही जीको कहा भाव मुख्यार्थ इतनाही है कि रामनाम का माहात्म्य बड़ा भारी है को कहसक्ता है आगे यहां पै गोस्वामीजी ने न जाने क्या कहा है सो ज्ञातालोग जानें हम अल्पबुद्धिवालोंको नहीं जान पड़ता है कि क्या कहा है इससे जो कुछहै सो एक नामहीं है ॥ ८ ॥ (मूल)

दो०। नामरामकोकल्पतरु कलिकल्याण निवास।
जोसुमिरतभयोभांगतेतुलसीतुलसीदास ॥८

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि नाम जो श्रीरामजीका है सोई तो कल्पतरु नाम वृक्ष है भाव जो चाहे सोई मिले और कलियुगमें सम्पूर्ण कल्याण जो ज्ञान वैराग्य शान्ति क्षमा दयादिक हैं तिनके निवास नाम स्थान हैं भाव जितने कल्याणकारी साधन हैं ज्ञान वैराग्यादिक सो सब कलियुगके भय करके रामनाम के आश्रित निवास किएहैं इससे जो कोई अपना कल्याण चाहै सो सब साधना को छोड़कर श्रीरामनाम के आश्रित होजाइये तबतो कल्याण है नहीं तो होना दुर्लभ है चाहे जो करो काहेसे कि जो रामनाम कल्पतरुको सुमिरतमात्रमें महानिषिद्ध भांगते नामभांगसे मैं तुलसीदास महापवित्र तुलसी भयों भाव तुलसीके समान रामजीको प्रिय भयों इति यहां पै गोस्वामीजीने दो वस्तु दिखाये एकतो यह दिखाया कि तुलसीवृक्षके समान पवित्र दूसरा कोई वृक्ष नहीं है और दूसरा यह दिखाया कि भंग के समान महा निषिद्ध दूसरा कोई वृक्षनहीं है इससे भंग न पीना चाहिये यह गोस्वामीजीका सिद्धांत जान पड़ता है इससे सज्जन पुरुषों को अवश्यमेव उचित है कि भंग नहीं पीना चाहिये काहे से कि भंग महानिषिद्ध वस्तु है और जो कदापि शिवजीकी उपमा करो अथवा वहुतेरे महात्मा लोग शिवजीकी उपमा देते भी हैं सो भूल है काहेसे कि शिवजी ईश्वर हैं इससे ईश्वरकी उपमा जीवको देना अथवा उनकी बराबरी करना अयोग्यता है यथा ॥ जो बिवाह शंकर सन होई। दोषौ गुण सम कह सब कोई ॥ जो अहिसेज शयन हरि करहीं। बुध कछु तिन्हकर दोष न धरहीं ॥ भानु कृशानु सर्बरस खाहीं। तिन्हकहँ मन्द कहत कोउनाहीं ॥ शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं। सुरसरि कोउ अपुनीत न कहहीं ॥ समरथ को नहिं दोष गुसाईं। रबिपावक सुरसरि की नाईं ॥ दोहा ॥ जो असि हिसिखा करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान। परहिं कल्प भरिनरक महँ जीवकि ईश समान ॥ इत्यादि गोस्वामीजीने कहा है इससे शिवजीकी बराबरी करना मूर्खता है काहेसे कि शिवजी समर्थ हैं दूसरे शिवजीने तमोगुणी स्वरूप में भंग इत्यादिको धारण किया है कुछ बैष्णवी स्वरूप में नहीं ऐसा बिचारिके ज्ञाता लोगों को उचित है कि भंगको पीना अवश्यमेव छोड़ देना चाहिये एक भंगही क्या सब अमलको त्यागदेना चाहिये काहेसे कि शास्त्र में दोष लिखाहै (यथा प्रमाण स्कन्द पुराण) तमाकू भंग मद्यानि ये पिवन्तिनराधमाः। तेषांहिनरकेवासो यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ १ ॥ अर्थ ॥ तमाकू भाँग और मद्यसे जितने अमलहैं नशा करनेवाले सो सब

जो पीतेहैं और खातेहैं सो मनुष्यनमें अधम नाम पापीहैं तिनको निश्चय करके नर्क वास होगा कबतक कि जबतक चौदह इन्द्र व्यतीत होंगे अर्थात् एक कल्प पर्य्यन्त नर्क में बास होगा ॥ १ ॥ इत्यादि शास्त्र के बचन बिचारिके सब अमलों को छोड़ देना चाहिये आगे मेरा अपराध क्षमा करियेगा काहे से कि मैं कुछ कल्पित करके नहीं कहा है एकतो सर्वोपरि श्रीगोस्वामीजीका प्रमाण है दूसरा ऋषियों का प्रमाण है इससे मैंने कहा आगे गुण अवगुण जानत सबकोई । जो जेहि भाव नीकतेहि सोई ॥ आगे यहां पै आके गोस्वामीजीने पूर्वोक्त चहुँयुगको नामजापक खोलदिया जैसाकि सनकादिक चारों भाई और नारदजी प्रल्हादजी ध्रुवजी अजामिल गजेन्द्र गणिका इत्यादि तो सत्ययुग के जापक हैं और त्रेता के सर्वोपरि जापक शिरोमणि श्रीहनुमान जी हैं और द्वापर युगके सर्वोपरि परमहंसराज श्रीशुकदेवस्वामीजी हैं और कलियुगके तो जापक स्वयं ग्रन्थकार स्वामीजीने लिखबै किये हैं कि जो सुमिरत भयो भांगते तुलसी तुलसीदास इत्यादि ॥ चहुँयुग चहुँश्रुति नामप्रभाऊ । जानना चाहिये यहां पै केवल जनानेके वास्ते गोस्वामीजीने चहुँयुगके मुख्य २ दोचार नामजापक लिखदिये हैं परंच इसके सिवाय और भी बहुत नामजापक हैं और यहतो प्रसिद्धही दिखाया कि भंग के समान निषिद्ध दूसरा कोई बृक्ष नहीं और तुलसीके समान पवित्र दूसरा कोई बृक्ष नहीं है ताते तुलसी के पूजन और धारण करनेवाले धन्यहैं ॥ ८ ॥ (मूल)

चहुँयुग तीनकाल तिहुँ लोका ।
भए नाम जपि जीव बिशोका ॥ १ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी विशेष करके एक रामनामहीं मोक्षके हेतु दिखाते हैं कि चहुँयुग अर्थात् सत्ययुग त्रेता द्वापर कलियुग इति चहुँयुग और तीनकाल याने भूत भविष्य वर्तमान इति तीनिकाल और स्वर्गलोक मृत्युलोक शेषलोक इति तिहुँलोकमें केवल एक रामनामहीं को जपिके जीव बिशोक नाम शोकसे रहित याने जन्म मरण-रूप शोक से रहित भये हैं भाव सत्ययुगमें जिनका मोक्ष भया है तिनका रामनामही से भया है दूसरेसे नहीं और त्रेतायुगमें भी जिनकी गति भई है तिनकी रामनामही से भई है दूसरे से नहीं और द्वापर में जिनकी गति भई है तिनकी रामनामहींसे भई है दूसरे से नहीं और कलियुग में भी जिनका मोक्ष भया है तिनका रामनामही से भया है दूसरे से नहीं इति चहुँयुग पुनः भूतकाल अर्थात् जो होगये हैं और भविष्य जो होनेवाला भाव जिनको प्रथम मोक्ष होगया है और जिनका आगे मोक्ष होगा और वर्तमान काल में जिनका मोक्ष होरहा है सो रामनामहींसे दूसरेसे नहीं जो कदापि

कहोकि भाविष्यमें और वर्त्तमानकालमें भए नामजपिजीवबिशोका कैसे बनैगा काहेसे कि भयेतो भूतकालको कहते हैं और बर्तमानकालमें होते हैं और भाविष्यकालमें होगा ऐसा कहना रहा तो यहां पे चहुंयुगमें जो त्रिकाल व्यतीत भया है उसको समझना चाहिये अथवा त्रिकालसे प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल समझना चाहिये भाव प्रातःकाल में जिनका मोक्ष भया है तिनका रामनामही से भया है दूसरे से नहीं और मध्याह्न-काल में जिनकी गति भई है तिनकी रामनामहीं से भई है दूसरे से नहीं और सन्ध्या-काल में जिनका मोक्ष भया है तिनका रामनामही से भया है दूसरे से नहीं इति और स्वर्गलोक में जिनकी गति भई है तिनकी रामनामहीं से भई है दूसरे से नहीं और मृत्युलोक में जिनकी गति भई है तिनकी रामनामही से भई है दूसरे से नहीं और शेषलोक याने पाताल में भी जिनका मोक्षभया है तिनका रामनामहीं से भया है दूसरे से नहीं भाव मोक्षदायक यथार्थ एक रामनामही है दूसरा सब कथनी है देखिये यहां पै इस चौपाई में गोस्वामीजीने एक भी नहीं बाकी राखे हैं इससे यह जानपड़ता है कि जोकुछ है सो एकनामहींनाम है दूसरा सब बृथा है इससे हे भाइयो सुनो जो कोई अपना कल्याण चाहो तो सबको छोड़ि के एक निर्वाणदायक श्रीरामनामको भजो काहेसे कि गतिदायक एकनामहीं है और जितने साधन हैं पूजापाठ तीर्थ ब्रत सन्ध्या तर्पण गायत्री प्राणायाम योग ज्ञान बैराग्य जप तप यज्ञ अनुष्ठान वेदाध्ययन मंत्र यंत्र तथा नवधाभक्ति आदिक जोहैं सो सब नामरहित बृथा हैं ३ और सब रामनामके आधीन हैं यथा (विनय) भक्ति बैराग्य विज्ञान समदान दम नाम आधीन साधन अनेक ॥ इत्यादि कहे हैं इससे एक नाम है दूसरा सब बृथा है इसमें सन्देह करना अथवा तर्क करना महामूर्खता है देखिये इस चौपाई में गोस्वामीजीने क्या कहा है इस अद्भुत चौपाई को थोरा सावधान होके तो बिचारिये यही सब चौपाइयों का सिद्धांत कबीरादि के हैं क्या कहैं इस अद्भुत चौपाई को बिचारतेही बनता है कहते नहीं बनता है ताते जो कुछ कहा सो क्षमा करियेगा काहेसे कि नाममाहात्म्य बड़ा भारी है ॥ १ ॥ (मूल)

वेद पुराण सन्त मत एहू।
सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥ २ ॥

अर्थ—जो कदापि कहो कि यह मत आपही का है कि चहुँ युग तीनि काल तिहुं लोका। भए नाम जपि जीव विशोका ॥ कि और कोई का मत है तिसपै गोस्वामी जी अंगुल्या निर्देश करके दिखाते हैं कि यह पूर्वोक्त सिद्धांत केवल मेराही नहीं है

एहू नाम यह मत वेद और पुराण और सब सन्तन के हैं कि मोक्षदायक एक राम नामही है दूसरा कोई नहीं है और सकल नाम सम्पूर्ण सुकृति जो पुण्य है तिनका भी फल रामनामही है भाव रामनाम में प्रेम होना यही सब पुण्य के फल हैं और श्रीरामजी में भी सनेह नाम प्रेम होने का कारण रामनामही है भाव जिनका प्रेम श्रीरामनाम में भया तिनका प्रेम श्रीरामजीसे होचुका काहेसे कि रामजी नामही करके मिलते हैं ॥ २ ॥ (मूल)

ध्यान प्रथम युग मखविधि दूजे।
द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥ ३ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी युगान्तर धर्मको वर्णन करते हैं कि प्रथम युग जो सत्ययुग है तिसमें भगवतध्यान रहा इसीसे सब ज्ञानीलोग तरते रहे यथा ॥ कृतयुग सब योगी विज्ञानी। करि हरिध्यान तरहिं भवप्रानी ॥ इत्यादि कहाहै और मखविधि दूजे अर्थात् दूजे जो त्रेतायुग है तिसमें मखनाम यज्ञ विधिपूर्वक करके और उसके फल भगवदर्पण करके जीव कृतार्थ होतेरहे यथा ॥ त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं। प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ॥ इति ॥ पुनः द्वापरयुगमें नारद तंत्रादिके विधिसे षोड़शोपचार से भगवतपूजन करके जीव कृतार्थ होतेरहे और पूजनही से प्रभु प्रतोषत नाम प्रकर्ष करके सन्तुष्ट होतेरहे यथा ॥ द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भवतरहिं उपाय न दूजा ॥ इत्यादि कहा है यहां पै दूजा उपाय से यह न जानिए कि सत्ययुग में केवल भगवद्ध्यानही रहा रामनाम नहीं रहा तैसेही त्रेतामें भी केवल यज्ञही रहा रामनाम नहीं रहा पुनः द्वापरमें भी पूजनही रहा रामनाम नहीं रहा यह न जानिएगा काहे से कि गोस्वामीजी ने चहुँयुग में प्रधान रामनामहीं कहाहै इससे यहां पै यह जानना चाहिए कि सत्ययुगमें प्रधान तो रामनाम रहा उपाय ध्यान रहा पुनः त्रेतामें भी प्रधान रामनामहीं रहा उपाय यज्ञ रहा तथा द्वापर में भी प्रधान रामनामहीं रहा उपाय पूजन रहा भाव सत्ययुगमें नाम जपते रहे और ध्यान भी धरते हैं और त्रेतामें भी रामनाम जपते रहे और यज्ञ भी करते रहे तथा द्वापर में भी रामनामा तो जपते रहे और उपाय पूजन भी करते रहे इसीप्रकार से सब युगों में रामनाम तो जपते रहे और लोकशिक्षार्थ उपाय भी करते रहे ॥ ३ ॥ (मूल)

कलि केवल मल मूल मलीना।
पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥ ४ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी यहां से दोहा पर्य्यन्त कलियुगको विधिपूर्वक वर्णन करके सर्वोपरि अवलम्ब एक रामनामही दिखाते हैं काहे से कि यह सतपञ्च चौपाई मनोहर केवल कलियुगी जीवों के वास्ते कहाहै क्योंकि कलियुग में केवल एक रामनामही है इससे नामवन्दना की प्रसमाप्ति में कलियुगको वर्णन करते हैं और रामनाम को प्रबलता दिखाते हैं और यह भी दिखाते हैं कि कलियुग में केवल एक रामनामही है श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि कलियुग तो केवल मल नाम पापका मूल नाम जड़ है भाव राम पाप के सजीवकर्त्ता हैं और मलीना नाम पाप करके लीनहैं ऐसे घोर कलियुग में पाप के पयोनिधि नाम समुद्र में जन जो प्राणी हैं तिनका मन मीन नाम मछरी होरहाहै याने सबका मन पापमय होरहाहै भाव जब स्वयं राजा कलियुगही पापका मूल होरहाहै और पाप करके लीनहै तो कलियुगके प्रजालोग क्यों न पापमय होंगे काहेसे कि यथाराजा तथाप्रजा को भी होना योग्य है यथा ॥ रामकृपालु निषाद नवाजा। परिजन प्रजौ चहिय जस राजा ॥ इत्यादि कहाहै इससे राजाके अनुकूल प्रजाको होना उचितहै इति यहां पै पापपयोनिधि कहनेका यह भाव है कि समुद्रमें मीन बड़े सुखी रहते हैं काहे से कि अगाध जल रहता है यथा ॥ सुखी मीन जहँ नीर अगाधा। इत्यादि कहाहै इससे जहां कहीं मन मीन कहाहै तहां पै अगाध जल अवश्य कहाहै काहेसे कि विशेषजल में मीनको बहुत सुख होताहै सो विस्तारपूर्वक प्रथमहीं कहआये हैं चौथे दोहामें इससे यह दिखाया कि जैसे समुद्रमें मीन सुखी रहते हैं तैसेही पापरूप समुद्रमें सब प्राणियों के मन मछरी होके सुखी होरहे हैं भाव पापकर्महीमें सुख मान रहे हैं ऐसे पाप के मूल कलियुग ने पापमय कर रक्खाहै इसका मुख्यार्थ यह है कि किसीका अन्तःकरण शुद्ध होता नहीं है तो पूर्वोक्त युगान्तर धर्म ध्यान यज्ञ पूजा कैसे बने ॥ ४ ॥ (मूल)

नाम कामतरु काल कराला।
सुमिरत शमन सकल जगजाला ॥ ५ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि पूर्वोक्त पापरूप समुद्रमें जो जनका मन मीनहोके निमग्न होरहा है तिसका जो नाश करनेवाला कराल नाम भयङ्कर काल नाम मृत्यु है सोई तो मानो धीमर है जिसने मोहरूपी जाल में नानाप्रकार के जगजाल नाम दुःख-रूप फन्दा लगाके तिसमें सबके मनमीनको फँसाके मार रहाहै ऐसे पापमय कलियुगमें पूर्वोक्त जो रामनाम है कि ॥ नाम रामको कल्पतरु कलि कल्याण निवास ॥ इत्यादि जो सम्पूर्ण कल्याणका स्थान रामनाम कामतरु नाम कल्पवृक्ष है तिसको जो जन सुमिरें तो सुमिरतहीमात्र में सकल नाम सम्पूर्ण जो जगजाल नाम दुःख है याने जन्म मरण

सो सब शमन नाग नाश होजाते हैं और सम्पूर्ण कल्याणके निवास होजाते हैं नाम रूप कल्पबृक्षके प्रतापसे भाव करालकाल और पापमय कलियुग कुछ नहीं करसक्ताहै इससे यह दिखाया कि जो कोई भयङ्कर कालके जालसे बचना चाहे सो रामनाम रूप कल्पबृक्षके आश्रित होजायँ नहीं तो बचना दुर्लभ है भाव कलियुग में केवल रामनामही है दूसरा नहीं ॥ ५ ॥ (मूल)

रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितुमाता ॥ ६ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि रामनाम जो है कलियुग में कल्पबृक्ष के समान अभिमत नाम मन वांछित फल के दाता नाम देनेवाले हैं यहां पै कल्पबृक्ष नहीं भ कहा है तो भी अभिमत कहने से कल्पबृक्ष सूचित किया दूसरे ऊपर में कहि आये हैं ताते यहां पै भी जानना चाहिये काहे से कि गोस्वामीजीने रामनाम को कलियुग में कल्पबृक्ष की विशेष उपमा दिया है काहे से कि कल्पबृक्ष मन इच्छित फलदाता है इससे बार २ कल्पबृक्ष कहते हैं पुनः वह रामनाम कैसा है कि परलोक में हितकर्त्ता है भाव नाम जपनेवालेको किसी प्रकार से परलोक में अहित नहीं होता है और दूसरे साधनवाले को परलोक में समाई नहीं होती है और इस लोकमें रामनाम कैसा है कि माता पिताके समान पोषण पालन करनेवाला है यहां पै माता पिता कहनेका यह भाव है कि पुत्रका हितकारी माता पिता के समान दूसरा नहीं होता है इससे माता पिता कहा भाव यथार्थ माता पिता हितकर्त्ता रामनामही है दूसरा माता पिता मायाकृत है अन्त में सबको काल भक्षण करजायगा ताते सबको त्यागिके रामनाम निर्वाण दायक भजो यही एक सार है और सब बृथा है ॥ ६ ॥ (मूल)

नहिं कलिकरम न भगति बिबेकू। रामनाम अवलम्बन एकू ॥ ७ ॥

अर्थ—श्रीगोस्वामीजी कृपालु कहते हैं कि न तो कलियुग में सन्ध्या तर्पणादिक कर्म्मही हैं और न कलियुग में श्रवणादिक नवधाभक्तिही है और न कलियुग में बिबेक नाम ज्ञानही है कलियुगमें तो एक रामनाम अवलम्बन नाम आधार है इति यहां पै कर्म्मकाण्ड जानना चाहिये और भक्तिसे उपासना काण्ड जानना चाहिये और बिबेक से ज्ञानकाण्ड जानना चाहिये इससे यह दिखाया कि कलियुगमें न तो कर्मकाण्डही है और न उपासनाही काण्ड है और न ज्ञानहीकाण्डहै जो है सो एक रामनाम

है भाव सत्ययुगमें ज्ञानकाण्ड रहा त्रेतायुग में कर्मकाण्ड रहा द्वापरयुग में उपासना काण्ड रहा और कलियुगमें तो केवल एक रामनामही अवलम्ब है दूसरा कुछ नहीं है यथा कलिबिशेष नहिं आन उपाऊ ॥ इत्यादि कहा है देखिये इस चौपाई में गोस्वामीजीने क्या सिद्धान्त कहा है इसको अवश्य करके बिचारना चाहिये काहेसे कि सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ॥ सो यही नाम संबन्धी नवो दोहा हैं इससे इसको जानिके शीघ्र हृदय में धरो तबतो कल्याण है नहीं तो नहीं ॥ ७ ॥ (मूल)

कालनेमि कलि कपट निधानू।
नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥ ८ ॥

अर्थ—अब श्रीगोस्वामीजी कलियुगको कपटी की उपमा देके वर्णन करते हैं कि कालनेमि राक्षस के समान कलियुग कपट का निधान नाम स्थान है तिसको मारने के वास्ते रामनाम कैसाहै कि सुमतिनाम सुष्ठ बुद्धिवाले समरथ नाम पराक्रमी श्रीहनुमानजी हैं इति ॥ यहां पै सब कपटियों को छोड़िके कालनेमिही को क्यों कहा इसका हेतु यह है कि कपटी तो बहुत हैं किन्तु मारनेवाला तत्कालही कोऊ नहीं भया है इससे नहीं कहा और इनको तो श्रीहनुमानजीने त्वरितही मारा है इससे इनको कहा अब सुमति और समर्थ कहनेका भाव सुनिये यहां पै समर्थ कहने का तो मुख्य आशय इतनाही है कि कालनेमिको मारा इससे समर्थ कहा काहेसे कि बिना पराक्रम के मारना असम्भव है और सुमत कहने का यह भाव है कि कालनेमि राक्षसने हनुमानजीको मोहने के वास्ते कपट किया है यथा ॥ राक्षस कपटवेष तहँसोहा । मायापति दूतहिं चह मोहा ॥ इत्यादि कहा है सो हनुमानजी ऐसे बुद्धिमान हैं कि कपटी कालनेमि के कपट में न भूले काहेसे कि कपटी के फेरमें तो मूर्खही लोग भूलते हैं कुछ चतुर लोग थोड़ही भूलते हैं यथा ॥ तुलसी देखि सुबेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर । सुन्दर केकी पेखि बचन सुधासम अशन अहि ॥ इत्यादि कहा है इससे सुमति कहा दूसरा हेतु यह है कि कालनेमिके कपट को हनुमानजीने जानलिया है जो कहो कि अप्सरा के कहने से जाना है सो बात सही है परंच जानेहैं प्रथमहीं अपनी बुद्धि से जो कहो कैसे जाना है तो सावधान होके सुनो यथा ॥ जाइ पवन सुत नायउ माथा । लाग सो कहै रामगुणगाथा ॥ होत महारण रावणरामहिं । जितिहहिं रामु न संशय यामहिं ॥ इति ॥ देखिये यहां पै बिना प्रश्नहीं किये रामगुण कहना यह शास्त्र का और महात्मन की मर्य्यादा नहींहै यथा ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रुयात् ॥ इत्यादि वेदकी आज्ञाहै कि बिना बूझे नहीं कहना सो रामायण भरेमें प्रसिद्ध है जैसे कि पार्वतीजीने

प्रश्न किया तब शिवजीने रामगुण कहा देखिये पार्वतीजी शिवजीकी प्राण प्रिया हैं और रात्रि दिन साथही रहती हैं तहां पै बिना बूझे शिवजीने नहीं कहा काहेसे कि वेद की मर्य्यादा है पुनः भरद्वाजजीने जब प्रश्न किया तब याज्ञवल्क्यजीने रामगुण कहा पुनः गरुड़जीने जब प्रश्न किया तब काकभुशुण्डजीने रामगुण कहा पुनः॥ ऋषि पूछी हरि भगति सुहाई। कही शम्भु अधिकारीपाई ॥ पुनः॥ पंचबटी में जब लक्ष्मण जीने बूझा तब रामजीने भक्ति कहा पुनः जब भरतजीने बूझा तब रामजीने सन्तनके लक्षण कहा आगे कहांतक कहें सर्वत्ररामायणमें क्या वेदमें क्या शास्त्रमें क्या पुराण में सर्वत्र यह बात प्रसिद्ध है कि बिना प्रश्न किये उत्तर न देना चाहिये सो कालनेमि राक्षसने बिना प्रश्नही किये रामगुण कहा इससे हनुमानजीने जानलिया कि महात्मा नहीं है कोई धूर्त है काहेसे कि जो कदापि महात्मा होता तो ऐसा न कहता इति पुनः दूसरा हेतु यथा ॥ यहां भये मैं देखौं भाई। ज्ञान दृष्टि बल मोहिं अधिकाई॥ इति ॥ देखिये इस बचन से भी हनुमानजीने जानलिया कि महात्मा नहीं है काहे से कि महात्मा लोग ऐसा कहां कहसकते हैं कि ज्ञान दृष्टि को बल हमको अधिक है इससे अवश्य करके कोई पाषण्डी है परन्तु बोले अभी तक भी नहीं तब हनुमान् जीने जल मांगा यथा ॥ मांगा जल तेहि दीन्ह कमण्डल॥ तब हनुमानजीने बिचारा कि क्या पाषण्डियों के भ्रष्ट कमण्डल में जल पियें ऐसा बिचारि बोले ॥ कह कपि नहिं अवाँउ थोरे जल ॥ तब कालनेमि कहा कि ॥ शरमंजन करि आतुर आवहु। दीक्षादेउँ ज्ञान जेहि पावहु ॥ इति ॥ देखिये इस बचन से भी हनुमानजीने ठीक २ जानलिया कि निश्चय करके कोई ढोंगीहै काहेसे कि माहात्मा लोग बिना अधिकारी देखे और प्रश्न किये वेदान्तार्थ ज्ञान दीक्षादेनहीं सकते हैं यथा (श्लोक) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया। उपदेक्ष्यन्तितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ इत्यादि गीता के प्रमाण से वेदार्थ रहस्य प्रश्न और सेवकाई करनेही से होना उचित है दूसरे ऐसाभी वेद शास्त्र का नियम है कि ॥ नासम्वत्सरवासिनेप्रब्रुयात् ॥ अर्थात् एक वर्ष पर्य्यन्त सेवाकरवाये बिना ज्ञानोपदेश करना उचित नहीं है इसी प्रकार के बहुत वचन हैं ताते बिना कुछ दिन देखे व सेवकाई करवाये मंत्रोपदेश देना न चाहिये और इन्होंने तो जैसे कलियुगिया गुरु कि जो कोई आया बिना जाने बूझे झट से कान फूँकदिया तैसेही अपने तरफ से ज्ञानदीक्षा देते हैं इससे महात्मा नहीं है कोई पाषण्डी है इसी प्रकारसे तीन युक्ति करके जानेहैं इससे सुमति कहा आगे ऐसाही प्रसंग कपटी मुनि और प्रतापभानु राजा का भया है सो राजा न जानसके तभी तो गोस्वामीजीने राजा प्रतापभानु को मूर्ख कहा कि ॥ तुलसी देखि सुबेष भूलहिं मूढ़ न चतुरनर ॥

इत्यादि कहा काहेसे कि पाषण्डी लोग महात्माका वेष तो बनालेते हैं परन्तु महात्मा लोगों की बोली चाली कहां से लेआवैगें इससे बोलीचालीमें चतुरलोग जानजाते हैं कि पाषण्डी है आगे इस चौपाई में गोस्वामीजीने यह दिखाया कि कलियुग ऐसा कपटी और धूर्त है कि जितना शुभाचरण ज्ञान वैराग्यादिक है तिनसबको ग्रसलिया है ग्रसना यही है कि सबका मन पापमय करदिया है किसीका अन्तःकरण तो शुद्ध है नहीं पुनः ज्ञानादिक साधन कोकरे यथा॥ कलिमल ग्रसेउ धर्म सब लुप्त भये सदग्रंथ॥ इत्यादि कहा है इससे कलियुग महाकपटी है पुनः जेहि कलियुगने बड़े भारी धर्मात्मा राजा परीक्षितजी तिनको कपटही करके नाश किया सो कपटी कलियुगने अपने राज्य में श्रीरामनामका बड़ाभारी प्रताप देखिके बिचारा कि हमनेतो सबको ग्रसलिया परन्तु एक रामनामका प्रताप न ग्रसा ऐसा विचारिके कलियुगने रामनामके प्रबल प्रतापको ग्रसनेके वास्ते झटपट कपटीका स्वरूप धारण किया परंच श्रीरामनाम ऐसी सुमति याने चतुर बुद्धिवाला है कि कलियुगका सब कपट जानलिया ताते कलियुग के फेरमें न आये और कलियुगहीं को नाश करिडारे भाव श्रीरामनाम कलियुग से सबप्रकारसे प्रबलहै दूसरा एक यहभी दिखाया कि जो कोई प्रथम रामनामके ऊपर उपाधि अथवा बल करते हैं तिनको प्रथम करलेने देते हैं तब पीछे उनको दण्ड देतेहैं इसीसे प्रथम कालनेमि कलिकपट निधानू॥ कहा पीछे रामनामको सुमति और समर्थ हनुमान कहा भाव अपने पर जो कोई उपाधि करते हैं तो कम रिसाते हैं और जो कोई दासका अपराध करते हैं तिनपै बहुत क्रोध करते हैं यथा॥ सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ॥ जो अपराध भगत कर करई। रामरोष पावक सो जरई॥ इत्यादि कहा है इससे दासका अपराध नहीं सहिसकते हैं और प्रथमहीं से रक्षार्थ उपस्थित रहते हैं सो आगे दोहा में दिखाते हैं॥ ८॥ (मूल)

दो०। रामनामनरकेशरी कनककशिपु कलिकाल। जापकजनप्रहलादजिमि पालिहिदलि सुरसाल९॥

अर्थ--प्रथमतो गोस्वामीजी ने कलियुग को कपटी कालनेमि राक्षसकी उपमा देके वर्णन किया और रामनाम को महाबली हनुमानजी की उपमादिया सो तो केवल रामनामकी प्राबल्यता देखानेके वास्ते कि रामनाम कलियुगसे ऐसा प्रबलहै कुछ नाम जापक जनके रक्षार्थ नहीं कहा और अब जो है सो नाम जापक जनकी रक्षार्थ रामनाम को और कलियुग को पुनः॥ बलिकी उपमा देके वर्णन करते हैं श्रीगोस्वामीजी कृपालु कहते हैं कि रामनाम जोहै सोईतो नरकेशरी नाम नरसिंहजी हैं और कलिकाल जो है महादुःखदाई

सोईतो कनककशिपु नाम हिरण्यकशिपु है और जापकजन अर्थात् रामनामके जो जपने वाले जन नाम दासहैं सोई तो मानो प्रह्लादजी हैं जिमि नाम जैसे तिनको पालिहि नाम पालन करेंगे सुर जो देवता हैं तिनके शाल नाम दुःखदाई जो हिरण्यकशिपु रूप कलिकाल है तिनको नृसिंहरूप रामनामने दलि नाम नाश करिके इति ॥ भाव जैसे महा दुःखदाई हिरण्यकशिपु कि जिसने प्रह्लादजी को दुःख देने में एकभी कसर न राखी परंतु प्रह्लादजी को रामनाम के प्रतापसे एकौ दुःख न भया पीछे थोड़ेही दिनोंमे आपही भगवतने नृसिंहावतार धारण करिके सम्पूर्ण देवताओंको दुःखदाई महाप्रबल हिरण्यकशिपु को मारिके जन प्रह्लादजी की रक्षाकिया तैसेही यहांपै रामनाम जोहै सोई तो महाक्रोधी श्रीनृसिंहजी हैं और कलियुग जो है सोई तो यहांपै महाप्रबल हिरण्यकशिपु है और सम्पूर्ण जो शुभाचरण है अर्थात् ज्ञान वैराग्य योग जप तप पूजा पाठ संध्या तर्पण गायत्री प्राणायाम तीर्थ व्रत संयम नेम ध्यान धारण वेदाध्ययनादिक जितने हैं सोईतो सब यहांपै देवतालोग हैं तिनको दुःखदेते हैं भाव जो कोई करते हैं तिनको नानाप्रकार के बिघ्न डार देतेहैं इति सुरशाल और रामनाम के जो जपनेवाले जन हैं सोई तो यहां प्रह्लादजी हैं तिनको हिरण्यकशिपु रूप कलिकाल नानाप्रकार के दुःख देते हैं याने नाम जपने में नानाप्रकार के उद्वेग होना मनोर्थ होना इति ऐसा प्रबल हिरण्यकशिपु रूप महादुष्ट कलियुगको नृसिंहरूप रामनामने दलि नाम नाश करिके प्रह्लादरूप जापकजनको पालिहि नाम पालन करैंगे भाव किसीप्रकार के नामजापक जनको दुःख नहीं होसक्ता है तातें निर्भय होके रामनाम जपो यहांपै गोस्वामीजी ने प्रथम रामनाम नरकेशरी कहा पीछे कनककशिपु कलिकाल कहा इसका भाव यह है कि नामजापक जनको जहां कोई क्लेशदेते हैं तहां प्रथमहीं रामनाम महाक्रोधी नृसिंह होके रक्षार्थ तैयारहैं काहेसे कि दासको अपराध नहीं सहिसकते हैं इससे प्रथम कहा इससे इस दोहामें गोस्वामीजी ने यह देखाया कि निर्द्वन्द्व होके श्रीरामनाम जपो कलियुगका भय मतिकरो काहेसे कि अतिशय प्रबल श्रीरामनामके रक्षक शिरपर खड़े हैं यहांपै केवल नामजापक जनको गोस्वामीजी ने निर्भयत्व दिखाये हैं दूसरे एक यहभी देखाये हैं कि नाम जापक प्रह्लादजी के समान होना चाहिये भाव नृसिंहजी सर्वदा तैयार हैं प्रह्लाद होना दुर्लभ है ९ ॥ यहां पर्य्यंत सतपंच चौपाई मनोहर जानना चाहिये काहेसे कि कलियुग है इसमें एक रामनामही सिद्धान्त है दूसरा कुछ नहीं है यहबात निश्चय हैं इसमें सन्देह न करना चाहिये यथा ॥ औरभी इसके सिवाय जहां कहीं सातोकाण्ड रामायण रामनाम संबंधी चौपाई होवे सो सब सत्यपंच चौपाई जानना चाहिये यथा ॥

भाय कुभाय अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिशि दसहूँ ॥ १ ॥

रामनाम कर अमित प्रभावा।
संत पुराण उपनिषद गावा ॥ २ ॥
संतत जपत शंभु अविनाशी।
शिव भगवान ज्ञानगुण राशी ॥ ३ ॥
आकर चारि जीव जगअहहीं।
काशी मरत परम पद लहहीं ॥ ४ ॥
सोपि राम महिमा मुनिराया।
शिव उपदेश करत करि दाया ॥ ५ ॥
तुम पुनि रामनाम दिनराती।
सादर जपहु अनंग अराती ॥ ६ ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा।
तेहि किमि कहिय बिमोह प्रसंगा ॥ ७ ॥
काशी मरत जंतु अवलोकी।
जासु नाम बल करउँ बिशोकी ॥ ८ ॥
बिवसहु जासु नाम नर कहहीं।
जन्म अनेक रचित अघ दहहीं ॥ ९ ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं।
भव बारिधि गोपद इवतरहीं ॥ १० ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई।
मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥ ११ ॥
जिन्हकर नाम लेत जगमाहीं।
सकल अमंगल मूल नशाहीं ॥ १२ ॥

जासु नाम सुमिरत इकबारा।
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥ १३ ॥
रामराम कहिजे जमुहाहीं।
तिनहिंन पाप पुंज समुहाहीं ॥ १४ ॥
उलटा नाम जपत जगजाना।
बालमीकि भए ब्रह्मसमाना ॥ १५ ॥
बारक राम कहत जगजेऊ।
होत तरन तारन नरतेऊ ॥ १६ ॥
जासुनाम पावक अघतूला।
सुमिरत सकल सुमङ्गल मूला ॥ १७ ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा।
अधमौ मुक्ति होइ श्रुतिगावा ॥ १८ ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका।
श्रुतिकह अधिक एकते एका ॥ १९ ॥
रामसकल नामन्हते अधिका।
होउ नाथ अघ खगगण बधिका ॥ २० ॥
जन्मजन्म मुनि यतन कराहीं।
अंतराम कहि आवत नाहीं ॥ २१ ॥
जासु नामबल शङ्कर काशी।
देत सबहिं समगति अबिनाशी ॥ २२ ॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं।
अति अपार भवसागर तरहीं ॥ २३ ॥

जासुनाम जपि सुनहुँ भवानी।
भवबंधन काटहिं नरज्ञानी ॥ २४ ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा।
देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥ २५ ॥
जासु नाम त्रय ताप नशावन।
सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन ॥ २६ ॥
तीरथ अमित कोटि समपावन।
नाम अखिल अघपूग नशावन ॥ २७ ॥

(अथ नाममाहात्म्य लिख्यते)

कलियुग केवल हरिगुण गाहा।
गावतनर पावहिं भव थाहा ॥ १ ॥
कलियुग योग न यज्ञ न ज्ञाना।
एक अधार राम गुणगाना ॥ २ ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं।
प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥ ३ ॥
सोइ भवतर कछु संशय नाहीं।
नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥ ४ ॥
यहि कलिकाल न साधन दूजा।
योग यज्ञ जप तप ब्रतपूजा ॥ ५ ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं।
संतत सुनिय रामगुण ग्रामहिं ॥ ६ ॥

जासु पतित पावन बड़बाना।
गावहिं कबि श्रुति संत पुराना ॥ ७ ॥
ताहि भजिय मनतजि कुटिलाई।
रामभजे गति केहिं नाहिंपाई ॥ ८ ॥

छन्द ॥

पाईनकेहिंगतिपतितपावन रामभजिसुनुशठमना।
गणिकाअजामिलव्याधगीधगजादिखलतारेघना ॥
आभीरयमनकिरातषसस्वपचादिअतिअघरूपजे।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामिते ॥
रघुबंश भूषण चारित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं॥
सतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जो नर उरधरे।
दारुण अविद्या पञ्चजनित बिकार श्रीरघुबर हरे ॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथपर कर प्रीतिजो।
सो एक राम अकाम हित निर्वाण प्रद सम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेश ते मतिमन्द तुलसीदासहूँ।
पायो परमविश्राम राम समान प्रभु नाहींकहूँ ॥ इति

अर्थ—श्रीगोस्वमीजी कहतेहैं कि सत्यपञ्च चौपाई मनोहर जानिके अर्थात् नामवन्दना नवौ दोहोंका जो सिद्धांतहै रामनाम तिनको जो नर जानिके अपने हृदयमें धारण करें तिनके दारुण नाम महाकठिन जो पञ्च अविद्याहैं अर्थात् तम १ मोह २ महामोह ३ तामिश्र ४ अन्धतामिश्र ५ इति पञ्चपर्वा अविद्या करके जो जनित नाम उत्पन्न हैं नानाप्रकार के बिकार सो श्रीरघुनन्दन रामजी हर लेंगे भाव सत्पञ्च चौपाई पांचहु अविद्या करके उत्पन्न विकार को हर लेंगे इसीसे यहां पै सतपञ्च चौपाई भी कह

...शोध संस्थान

और पंचअविद्या भी कहा और मनोहर कहनेका यह भाव है कि गोस्वामीजीने नाम बंदनामें कहा है कि ॥ आखर मधुर मनोहर दोऊ ॥ इत्यादि रामनामको मनोहर कहा है और यही रामनामको गोस्वामीजीने नवदोहा पर्य्यन्त विधि पूर्वक प्रतिपादन कियाहै और सब प्रकारसे एक रामनामहीं को सार सिद्धांत देखायाहै इससे नवौदोहोंकी चौपाई मनोहर जानना चाहिये इसीसे यहां पै मनोहर कहा और सब महात्मनके जो सत्य सिद्धांतहो उसको सत्यपञ्च कहतेहैं सो रामनाम सब महात्मनका सत्यसिद्धांत हईहै और रामनामही का माहात्म्य नवौ दोहोंमें है इससे नवौ दोहोंकी चौपाई सत्यपञ्चहैं इसमें सन्देह न करना चाहिये काहेसे कि कलियुगहै इसमें एक रामनामहीं आधारहै दूसरा कुछ नहींहै जो यह बात सत्यहो तो यही अर्थ ठीकहै दूसरे यहां पै छन्दमें भी नामहीं माहात्म्य गोस्वामीजीने कहाहै कि कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं रामनमामिते। इत्यादि कहाहै इससे रामनामहीं की बंदना वाली सब सत्यपञ्च चौपाई कहाहै और इसीके ग्रंथ समाप्तिमें गोस्वामीजीने माहात्म्य कहाहै जो कहो कि अंतमें माहात्म्य क्यों कहा तो रामनाम सबके अंतहै इससे अंत में माहात्म्य कहा भाव इस रामायणमें रामनामहीं एक सारहै इसी बात को गोस्वामीजी पूर्वमें कहि आयेहैं कि ॥ यहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुराण श्रुतिसारा ॥ इत्यादि कहेहैं इससे इस रामायणमें एक रामनामहीं सारहै (शंका) आपने जो सतपञ्च चौपाईका सत्यपञ्च अर्थ कियाहै सो यह क्लिष्टार्थ बहुत है और कवियों की सम्मति यह है कि शब्दका जहांतक झटितार्थ याने शीघ्र अर्थ मिले तहांतक क्लिष्टार्थको याने कठिन अर्थको न मानना चाहिए इससे यहां पै सतपञ्च चौपाई के झटितार्थ शतनाम सौ और पञ्चनाम पांच अर्थात् एकसौ पांच चौपाई अर्थ होताहै और आपने जो सत्यपञ्च अर्थ कियाहै सो खींचके कियाहै इससे कवियों की सम्मतिसे कुछ असङ्गति जान पड़ती है (उत्तर) आपने जो कवियोंकी रीतिसे झटितार्थ १०५ चौपाई अर्थ किया सो भी ठीकहै तोभी रामनामहीं संबन्धकी १०५ चौपाई सातोकांड रामायणमें गोस्वामीजीने कहाहै सो सबलिखदियाहै गिनती करलीजिये जैसाकि नामवन्दनाकी ऊपरमें ६ चौपाई हैं और नामबन्दनाके नवौ दोहोंमें ७२ चौपाई हैं और तिनके पीछे सातोकाण्डों का प्रमाण २७ चौपाई हैं यह सब मिलाके १०५ चौपाई होती हैं जिनको इस बात में संदेह हो सो रामायण को एक तरफ से मिलाके देखलेवें कि हैं या नहीं आगे आप सब सज्जन लोगों को जो समुझि परे सो सहीहै काहेसे कि गोस्वामीजीका अभिप्राय अगाधहै इससे जो कुछ हमारे मलीन बुद्धिवालों को निजमत्यानुसार जानिपरा आप सब महात्मन के आशीर्वाद से और श्री १०८ परमाचार्य्य गोस्वामीजीकी कृपानुग्रहसे और दीनबन्धु गरीबनिवाज पतितपावन उर

प्रेरक श्रीरघुवंश बिभूषणजीकी कृपादृष्टि से सो कहा आगे जो कुछ दाससे कहते न बना हो सो सुधार लीजियेगा और मेरी बालबुद्धिको अज्ञानी जानके क्षमा करियेगा और मेरी एक प्रार्थना यह है कि जहां कहीं कोई योनिमें निजकर्म्मके बश होके जन्म हो तहां २ यही सतपंच चौपाइयोंका परमसिद्धांत जो रामनाम है उसमें प्रेम हो यही आशीर्बाद दीजियेगा और इस सतपंचार्थप्रकाश रामायण के नवौ दोहा सम्वत् १६६१ की लिखी रामायण से शोधे गए हैं ताते पाठ में किसी तरहका सन्देह न करियेगा इसका पाठ बहुत शुद्ध है और इस ग्रन्थ को एकान्त में बैठके सावधान चित्त होके बिचारिये और देखिये कि इस ग्रन्थ में श्रीमदादि कवि बाल्मीकिजीके अवतार परमाचार्य श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीने क्या सिद्धान्त कहा है ॥

दो०। सतपंचार्थ प्रकाशजे कहहिंसुनहिं करिनेम।
रामनाम निर्वाणप्रद अवशिहोइतेहिप्रेम १॥
रामायण तुलसीकृत अगम अगाधअपार।
तेहिकोसारबिचारयुतकियोजगतपरचार २॥
सज्जनसुमतिविचारयुत गुनिलेबहु मनमाहिं।
है यानाहिंसतपंचमत श्रीरामायणमाहिं ३॥
रामनाम इकसारहै चहुँयुग चहुँश्रुतिमाहिं।
कहौंपुकारिबिचारिसबऔरसारकछुनाहिं ४॥
नामरूप लीलासुखद धाम सकल श्रुतिसार।
चारिउब्रह्मपरात्परतेहिमहँनामउदार ॥ ५॥
रामनामके रसिक जन मनकरि देखुबिचार।
आगमनिगमपुराणमहँयहीग्रंथयकसार ६॥
यहकलिकालमलायतनमनकरिदेखुबिचार।
श्रीरघुनाथनामतजि नाहिंनआनअधार ७॥

इतिश्रीसतपंचार्थप्रकाशरामायण श्रीसरयूदासकृत गूढ़ार्थ प्रबोधिनी टीकासहितसमाप्तः ॥

परमोदार श्रीअयोध्यावासी श्रीकनकभवननिवासी श्रीसीता-
रामजूके परमानन्य सख्यरस परिपूर्ण श्री १०८ लालसाहेब-
जीकेपरमसमीपी आज्ञाकारी स्वामीश्री१०८ परमहंस सीता-
शरणजी महाराज तिनके परमसमीपी आज्ञाकारी स्वामी
श्री ६ व्यास रामखेलावनदासजी महाराज तिनके चरण-
कमलकी रज मैं अधम स्वरूप सब सन्तनका दासा-
नुदास सरयूदासेतिन्नामः ॥

अथ श्रीसतपंचार्थ प्रतिपादनी स्तोत्रंलिख्यते ॥

(श्रीआदिपुराणे श्रीकृष्णोवाच अर्जुनम्प्रति) ॥

श्लो०। रामनामसदाग्राही रामनाम प्रियः सदा ॥
भक्तिस्तस्मैप्रदातव्या नचमुक्तिःकदाचन ॥ १ ॥
गायन्तिरामनामानि वैष्णवाश्च युगेयुगे।
त्यक्त्वाचसर्वकर्माणिधर्माणिचकपिध्वज॥ २ ॥
रामनामैवनामैव रामनामैव केवलम् ।
गतिस्तेषांगतिस्तेषांगतिस्तेषांसुनिश्चितम् ॥३॥
श्रद्धयाहेलयानाम वदन्तिमनुजाभुवि ।
तेषांनास्तिभयंपार्थ रामनामप्रसादतः ॥ ४ ॥
रामनामरतायत्र गच्छन्तिप्रेमसंप्लुताः ।
भक्तानामानुगच्छन्तिमुक्तयःस्तुतिभिस्सह ॥ ५ ॥
मानवायेसुधासारं रामनामजपन्तिहि ।
तेधन्यामृत्युसंत्रास रहितारामवल्लभाः ॥ ६ ॥
नामैवपरमामुक्तिर्नामैव परमागतिः ।
नामैवपरमाशान्तिर्नामैव परमामतिः ॥ ७ ॥
नामैवपरमाभक्तिर्नामैव परमाधृतिः ।
नामैवपरमाप्रीतिर्नामैव परमास्मृतिः ॥ ८ ॥

नामैव परमं पुण्यं नामैव परमंतपः॥
नामैवपरमोधर्मो नामैवपरमोगुरुः॥ ९॥
नामैवपरमंज्ञानं नामैवचाखिलंजगत्।
नामैवजीवनं जन्तोर्नामैवविपुलंधनम्॥ १०॥
नामैवजगतांसत्यं नामैवजगतांप्रियम्।
नामैव जगतां ध्यानं नामैव जगतां परम्॥ ११॥
नामैव शरणं जन्तोर्नामैव जगतां गुरुः।
नामैव जगतां बीजं नामैव पावनं परम्॥ १२॥
रामनाम रताये च तेवै श्रीराम भावुकाः।
तेषां संदर्शनादेव भवेद्भक्ती रसात्मिका॥ १३॥
कामादिगुणसंयुक्ता नाममात्रैक बान्धवाः।
प्रीति कुर्वन्तिते पार्थ नतथा जितसुषट्गुणाः १४॥
तंदेशं पतितम्मन्ये यत्र नास्ति सुवैष्णवः।
रामनामपरोनित्यं परानन्दाविवर्द्धनः॥ १५॥
रामनामरताजीवा नपतन्ति कदाचन।
इंद्राद्यास्संपतंत्यन्तेतथाचान्येऽधिकारिणः १६॥
नामस्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति येनराः।
फलंतेषां नपश्यामि भजामितांश्च पार्थिव॥१७॥
नामस्मरण मात्रेण नरोयाति निरापदम्।
येस्मरन्ति सदारामं तेषांजानेन किंफलम्॥१८॥
नामैव जगतां बन्धुर्नामैव जगतांप्रभुः।
नामैव जगतां जन्म नामैव सचराचरम्॥ १९॥
नामैव धार्य्यतेविश्वं नामैव पाल्यतेजगत्।
नमैव नीयतेनाम नामैव भुञ्जतेफलम्॥ २०॥

नामैव ग्रह्यतेनाम परंगोप्यं परात्परम्।
नामैव कार्य्यते कर्म्म नामैव नीयते फलम्॥२१॥
नामैव चाङ्गशास्त्राणां तात्पर्य्यार्थं वरंमतम्।
नामैव वेदसारांशं सिद्धान्तं सर्वदाशिवम्॥२२॥
नाम्नैव नीयते मेधापरेब्रह्मणि निश्चला।
नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तास्मिन् प्रलीयते२३॥
श्रीरामस्मर्णे नैव नरोयाति परांगतिम्।
सत्यंसत्यं सदासत्यं नजानेनामजं फलम्॥२४॥
रामनाम प्रभावोऽयं सर्वोत्तम उदाहृतः।
समासेन तथा पार्थ वक्ष्येहं तवहेतवे॥२५॥
ननाम सदृशंध्यानं ननाम सदृशोजपः।
ननाम सदृशस्त्यागो ननामसदृशीगतिः॥२६॥
ननामसदृशं तीर्थं ननाम सदृशंतपः।
ननामसदृशं कर्म्म ननाम सदृशः समः॥२७॥
ननाम सदृशी मुक्तिर्ननाम सदृशःप्रभुः।
येग्रह्णन्ति सदा नामतएववजितषट्गुणाः॥२८॥
कुर्वन् वाकार यन्चापि रामनाम जपंस्तथा।
नीत्वा कुलसहस्राणिपरं धामाधिगच्छाति॥२९॥
नाम्नैव नीयते पुण्यं नाम्नैव नीयतेतपः।
नाम्नैव नीयतेधर्मो जगदेतच्चराचरम्॥ ३०॥
रामनाम प्रभावेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
विश्वासेनैव श्रीराम नाम जाप्यं सदाबुधैः॥३१॥
शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनाम परायणः।
असंख्यकुलजानां वै तारणेसर्वदाक्षमः॥ ३२॥

येनामयुक्ताविचरन्तिभूमौत्यक्त्वाऽर्थकामान्
विषयांश्चभोगान् । तेषांचभक्तिः परमाचानिष्ठा
सदैवशुद्धाः सुभगाभवन्ति ॥ ३३ ॥
स्मरन्तिरामनामानित्यक्त्वाकर्माणिचाखिलम्।
सपूतः सर्वपापेभ्यःपद्मपत्र मिवाम्भसा ॥ ३४ ॥
त्यक्त्वा श्रीरामनामानि कर्मकुर्वन्तियेऽधमाः।
तेषांकर्माणिबन्धाय नसुखायकदाचन ॥३५ ॥
यस्य चेतसिश्रीराम नाममाङ्गलिकंपरम्।
सजित्वासकलांल्लोकान् परंधामपरिव्रजेत् ३६ ॥
नामयुक्ताजनाःपार्थ जात्यन्तरसमन्विताः ।
प्रीतिंकुर्वन्ति श्रीरामनतथानष्टषट्गुणाः ॥३७॥
गायन्तिरामनामानि सततंयेजनाभुवि ।
नमस्तेभ्योनमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यःपुनःपुनः३८॥
रामनामाश्रयायेवैभावुकाः प्रेमसम्प्लुताः ।
तेकृतार्थास्सदातातसत्यंसत्यंनचान्यथा ॥३९॥
इतिविज्ञापितंतातस्त्वया बुद्धयाविधारय ।
रामनामप्रसादेन सर्वसुखमवाप्स्यसि ॥ ४० ॥
तांनामगाथांविचरन्तिभूमौ गीत्वासदातेपुरुषाःसुध
न्याः। येनामगाथापरतत्त्वनिष्ठास्तेधन्यधन्याभुवि
कृतपुण्याः ॥ ४१ ॥
रामनामजनासक्तो रामनामजनप्रियः ।
सपूतोनिर्विकल्पश्च सर्वपापबहिर्मुखः ॥ ४२ ॥
रामनामप्रसंगेन येजपन्तीहचार्जुन ।
तेऽपिध्वस्ताखिलाघौघायांतिरामास्पदंपरम्४३॥

घोषयेन्नाममनिर्वाणं कारणंयस्त्वनन्यधीः।
तस्यपुण्यफलं पार्थ वक्तुंकैः शक्यतेभुवि ॥ ४४ ॥
तस्मान्नामानि कौन्तेयभजस्व दृढ़चेतसा।
रामनाम समायुक्तास्तेमेप्रियतमाः सदा ॥४५॥
सततंनाम्मगायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषांमध्येसदावासः श्रीरामस्यविशेषतः ॥ ४६ ॥
श्रद्धयाहेलयावापि गायन्ति नाममङ्गलम्।
तेषामध्ये परंनाम वसेन्नित्यंनसंशयः ॥ ४७ ॥
नतत्रविस्मयःकार्य्यो भवतारामनाम्निच।
सत्यंबदामितेपार्थ प्रियायममचात्मने ॥ ४८ ॥
यन्नामस्मरतो नित्यं महाह्यज्ञान बन्धनम्।
छिद्यतेचाश्रमेणैव तमहंराघवम्भजे ॥ ४९ ॥
श्रद्धयापरयायुक्तो रामनाम परायणः।
करोतिजानकीजानिस्तस्यचिन्तांपुनःपुनः ५०॥
अशेषपातकैर्य्युक्तः सर्वदोष परिप्लुतः।
सपूतःसर्वपापेभ्यो यस्यनाम परंतपः ॥ ५१ ॥
रामनामसदाप्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम्।
क्षणंनविस्मृतिंयाति सत्यंसत्यंवचोमम ॥ ५२ ॥
परनिन्दासमायुक्तः परदार परायणः।
सपूतःसर्वपापेभ्यो यस्यनामपरंतप ॥ ५३ ॥
परहिंसासमायुक्तो लोभमोहसमाकुल।
सपूतःसर्वं पापेभ्यो यस्यनाम्नि सदारुचिः ॥५४ ॥
अशेष पातकैर्य्याक्षाः स्वधर्म्म परि वर्ज्जिताः।
एते तरन्ति पापिष्ठा रामनाम प्रसादतः॥ ५५ ॥

तिष्ठन्ति रामनामानि तिष्ठन्तिवदनानिच।
तथापिनरकेमूढाः पतन्तीत्यद्भुतम्महत्॥ ५६॥
गायन्तिरामनामानि कर्म्मकुर्वन्तिचाखिलम्।
सयाति परमं स्थानं रामेण सहमोदते ॥ ५७॥
विसृज्य रामनामानि कर्मकुर्वन्ति चाखिलम्।
किमाश्चर्य्यंकिमाश्चर्य्यंकिमाश्चर्य्यंधनंजय ५८॥
शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनामार्थचिंतकः।
तस्यसद्गुणसंख्यानं वक्तुंनैवक्षमोप्यहम्॥५९ ॥
विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति ये नराः।
अप्राप्य सद्गतिं पार्थ भ्रमित्वा कर्मवर्त्मसु॥६०॥
सर्व योनिषु कौन्तेय भ्रमन्ति ते नराधमाः।
विसृज्य रामनामानि माया मोहित चेतसः६१॥
यदृच्छयातु श्रीरामनाम गृह्णन्ति सादरम।
सपूतः सर्व पापेभ्यो रामनाम प्रसादतः॥ ६२॥
एन केन प्रकारेण नाम मात्रैक जल्पकाः।
श्रमंविनैवगच्छन्ति परेधाम्निमसादरात्॥६३ ॥
नामयुक्तान् जनान् दृष्वा यः पश्येत्सादरंसखे।
सयाति परमं स्थानं रामेण सहमोदते ॥ ६४॥
नामयुक्तान् जनान् दृष्वा प्रणमन्ति च ये नराः।
सपूताः सर्व पापेभ्यः कर्म्मणा तेनहेतुना॥६५॥
नाम युक्तान् जनान् दृष्वा स्निग्धोभवतियोनरः।
सयाति परमं स्थानं परमानन्द सागरम्॥६६॥
गीत्वा च रामनामानि विचरेद्राम सन्निधौ।
इदं ब्रवीमिते सत्यं तस्यवश्यो जगत्पतिः॥६७॥

गीत्वा च रामनामानि ये रुदन्तिनरोत्तमम्।
तेषां हरिः परिक्रीतो परमेशेन संयुतः॥ ६८॥
गीत्वा च रामनामेति पतन्ति भुवि ये नराः।
तेवै धन्यतमालोके वैष्णवानां वरामतः॥ ६९॥
यदृच्छयान गृह्णन्ति रामनामेति मङ्गलम्।
अदृश्यास्तेजनाःपार्थ दृष्टिमात्रेण वर्जिताः ७०
स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु येषामुच्चारणंनहि।
भाग्यहीनास्तु तेनीचाः पापिनामग्रगामिनः ७१
भिक्षोपायेन गृह्णन्ति रामनामपरेश्वरम्।
लोकाचारेतु निरतास्ते वै पाषण्डिलोध्रुवम् ७२॥
रामनामजपाज्जीवा अनायासेनसंसृतिम्।
तरन्तेव तरन्तेव तरन्तेव सुनिश्चितम्॥ ७३॥
(तत्रैवाऽर्ज्जुनवाक्यं श्रीकृष्णम्प्रति)
भवत्येव भवत्येव भवत्येव महामते।
सर्व पाप परिव्याप्तास्तरन्ति नामबान्धवाः ७४
नमोस्तु नामरूपाय नमोस्तुनाम जल्पिने।
नमोस्तु नामसाध्याय वेदवेद्यायशाश्वते॥७५॥
नमोस्तु नामनित्याय नमोनामप्रभाविने।
नमोस्तु नाम शुद्धाय नमो नाममयायच ७६॥
श्रीरामनाम माहात्म्यं यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः।
सयाति परमंस्थानं रामनाम प्रसादतः॥ ७७॥
रामनामार्थ मुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम्।
ये ध्यायन्तिसदास्नेहास्तेकृतार्थाःजगत्त्रये ७८॥

इतिश्रीआदिपुराणे श्रीकृष्णाऽर्जुनसम्वादे श्रीरामनाममाहात्म्यसम्पूर्णं॥

देखिये जैसा श्रीगोस्वामीजीने श्रीरामनामको अतिअपूर्व नवौदोहामें सब प्रकारसे वर्णन किया है और सब तरहसे एक रामनामहीं सार कहा है तैसाही परम कृपालु श्रीकृष्णजीने निजसिद्धांत सर्वोपरि जो श्रीरामनाम है सो परम सखा कृपापात्र श्रीअर्जुनजीको उपदेश किया है और सर्वोपरि एक रामनामहीं सार सिद्धांत देखाया है ऐसापरम उपदेष्टा श्रीकृष्ण-चन्द्र भगवानको बारम्बार साष्टांग प्रणाम है और जो कोई महात्मालोग इस अपूर्वस्तोत्र और सतपंचार्थप्रकाश का नित्यनेम से पाठकरें अथवा सुनें तिनको भी बारम्बार नमस्कार है ॥ श्रीगोस्वामीजी अपने मनको उपदेश देते हैं कि ॥ (पद श्रीविनयपत्रिकायां) ॥

सदारामजपु रामजपु रामजपु रामजपु रामजपु मूढ़मन बारबारं । सकल सौभाग्य सुख खानि जियजानि शठमानि विश्वास बदवेदसारं ॥ कौशलेंद्र नवनील कंजाभतन मदन रिपुकंज हृदिचंचरीकं। जानकीरवन सुखभवन भुअनेक प्रभुनाम भजस्मरपरम कारुणीकं ॥ दनुजवनधूम ध्वजपीन आजानु भुजदंडकोदंड वरचंड वानं । अरुणकर चरन मुखनैन राजीव गुण अयन बहुमैन शोभानिधानं ॥ बासना वृंद कैरव दिवाकर काम क्रोधमद कंज कानन तुषारं । लोभ अतिमत्त नागेन्द्र पंचाननं विप्रहित हरण संसार भारं ॥ केशवंक्लेशहं केश वंद्यपदःद्वंदमंदाकिनी मूलभूतं । सर्वदानंद संदोहमोहापहं घोरसंसार पाथोधि पोतं ॥ शोक संदेहपाथोद पटलानिलं पापपर्वत कठिन कुलिशरूपं। संतजनकामधुक धेनु विश्राम प्रदनामकलि कलुषभंजन अनूपं ॥ धर्मकलपद्रुमनाम हरिधाम पथिसंमलंमूल मिदमेवमेकं । भक्ति वैराग्य विज्ञानसमदान दम नाम आधीन साधन अनेकं ॥ तेनतंसंतेनदत्तमेवाखिलं तेनसर्वंकृतंकर्म जालं। जेनश्रीरामनामामृतं पानकृतमनिसमनवद्य मवलोक्यकालं ॥ स्वपच खलभिल्लजमनादि हरिलोकगतनाम बलविपुल मति मलिन परसी । त्यागिसबआस संत्रास भवपास असिनिसित हरिनाम जपु दासतुलसी ॥ १ ॥ श्रीसीतारामेति नामसर्वदासारं ये जपन्तिस्तेधन्यास्ति ॥

परमोदार श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्यस्वामीश्री १०८ जानकीदासजी महाराज तिनके परमशिष्य कृपापात्र विद्वद्वरस्वामी श्री१०८मणिरामदासजी महाराज तिनके शिष्यमैं अधमस्वरूप कलिमलग्रसित सबसंतनका दासानुदास सियाराम दासेतिनामः वा सरयूदासः स्थान भागलपुर खास